डी:ए:वी. (पी:जी:) कॉलेज, देहरादून

चिन्तन और चेतना की प्रतीक

जिज्ञासा

संयुक्तांक 2020–21, 2021–22, 2022–23

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

प्रो॰ राखी उपाध्याय
मुख्य संपादक

ओ३म भूभुर्वः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात॥

आर्य समाज के नियम

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

३. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५. सब काम धर्मानुसार, अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये, किंतु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी, नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में स्वतंत्र रहें।

चिन्तन और चेतना की प्रतीक

जिज्ञासा

संयुक्तांक 2020–21, 2021–22, 2022–23

ले अतीत की गौरव गरिमा,
वर्तमान की सृजन पिपासा।
युगों-युगों की गंध सहेजे,
तरुण शिल्पियों की 'जिज्ञासा' ।।

डॉ. लक्ष्मीकांत त्रिपाठी 'विमल'

डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून
उत्तराखण्ड

॥ ॐ सरस्वत्यै नमः ॥

वर दे, वीणावादिनी! वर दे!

वर दे, वीणावादिनी! वर दे!
प्रिय स्वतन्त-रव, अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे!
काट अन्ध उर के बन्धन-स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर
कलुश भेद, तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कण्ठ, नव जलद-मन्द्ररव
नव नभ के नव विहंग वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे!

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

महान शिक्षाविद् एवं समाज सेवी

श्रद्धेय स्व. डॉ. वीरेन्द्र स्वरूप जी

(पूर्व कुलाधिपति,दयानन्द शिक्षा संस्थान)

(पूर्व सभापति,विधान परिषद्, उत्तर प्रदेश)

(25 जुलाई 1923 से 26 फरवरी 1980)

Dedicated to

Hon'ble Late Shri Jagendra Swarup Ji

Former M.L.C. (1980-2014)
Mahamantri, Dayanand Shiksha Sansthan, Kanpur
Secretary, Board of Management, D.A.V.(P.G.) College, Dehradun

Whose Blessings and Inspirations
are
always with us

Late Shri Jagendra Swarup Ji

(02nd July, 1949 - 30th July, 2014)

चिन्तन और चेतना की प्रतीक

जिज्ञासा

संयुक्तांक 2020–21, 2021–22, 2022–23

मुख्य संरक्षक
श्री मानवेन्द्र स्वरूप
(एडवोकेट)
सचिव, प्रबन्ध समिति

संरक्षक
प्रो. आर. के. मेहता
कार्यवाहक अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

प्रो. सुनील कुमार
प्राचार्य

परामर्शदाता
प्रो. एस.पी. जोशी
प्रो. देवना शर्मा
प्रो. पुष्पा खण्डूरी
प्रो. डी.के. त्यागी
प्रो. सविता रावत
डॉ. आर.के. पाठक
डॉ. गोपाल क्षेत्री
डॉ. पारुल दीक्षित
डॉ. हरिओम शंकर

प्रकाशक
डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज
देहरादून, उत्तराखण्ड

मुख्य संपादक
प्रो. राखी उपाध्याय
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सम्पादक मण्डल
प्रो. एच.बी.एस. रंधावा
प्रो. नीरजा चौधरी
प्रो. रमेश कुमार शर्मा
मेजर अतुल सिंह
डॉ. सविता राजपूत
डॉ. विनीत बिश्नोई
श्री अखिलेश चन्द्र वाजपेयी
डॉ. निशा वालिया
डॉ. रुपाली बहल
डॉ. शैली गुप्ता
डॉ. नैना श्रीवास्तव
डॉ. रवि शरण दीक्षित
डॉ. विवेक त्यागी
डॉ. गुंजन पुरोहित
श्री रोशन प्रसाद
श्री संदीप कुमार

छात्र सम्पादक मण्डल
गीता, शोधार्थी
विकास मौर्य, शोधार्थी
वर्षा पाल, शोधार्थी

मुद्रक
सरस्वती प्रेस, 2 ग्रीन पार्क
निरंजनपुर, देहरादून।

सम्पादकीय

नई पीढ़ी: समस्याएँ, चुनौतियाँ और संभावनाएँ

मानव जाति की सर्वांगीण प्रगति के कारणों में सभ्यता का विकास केंद्रीय महत्व रखता है। किसी भी सभ्यता का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ के लोग कितने रचनात्मक, संवेदनशील तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हैं। भारत संवेदनशील सभ्यता वाला देश है। अन्य देशों की तुलना में भारतीय अधिक संवेदनशील तथा मूल्यों को मानने वाले होते हैं। हालाँकि पिछले कुछ दशकों में भारतीय जनमानस की मूल प्रवृत्ति में बड़े परिवर्तन देखने को मिले हैं। इन परिवर्तनों की जाँच–पड़ताल आवश्यक है। यदि भारत को विश्व सभ्यता का अगुआ बनना है, तो अपनी परंपराओं की रक्षा करते हुए उसे विज्ञान से सामंजस्य स्थापित करना होगा। भारत जैसे पारंपरिक देश में ये सामंजस्य स्थापित करना आसान नहीं है क्योंकि संवेदना, परंपरा, आचार–विचार के साथ विज्ञान को अपनाने पर नई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। वर्तमान भारत ऐसी कई समस्याओं का सामना कर रहा है। एक ओर जहाँ वह वैज्ञानिक प्रगति की ओर ध्यान दे रहा है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी संस्कृति और परंपराओं को बचाने की द्वंद्वात्मक परिस्थिति का भी सामना कर रहा है।

तकनीकी के निरंतर विकास ने भारत के समक्ष नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। आज का युवा तकनीकी के प्रति अधिक आग्रही है। तकनीकी के प्रति उसके अधिक आग्रह ने नई सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न कर दिया दिया है। निजीकरण ने रोजगार का चरित्र बदल डाला है। आज का युवा अकादमिक की अपेक्षा तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये प्रयासरत है। शिक्षा की वर्तमान प्रणाली व्यावहारिक अनुभव से जुड़ी शिक्षा के साथ इस तरह के प्रशिक्षण प्रदान कर रही है जिससे छात्र आत्मनिर्भर बन सकें। विज्ञान मनुष्य को अधिक तार्किक और कम संवेदनशील बनाता है। विज्ञान के लिए तर्क ही सब कुछ है। भावनाएँ उसके लिए कुछ खास महत्व नहीं रखतीं। इससे युवा वर्ग में मूल्यों का निरंतर ह्रास हो रहा है। भारतीय संस्कृति अपने मूल्यों के लिए विश्व में पहचानी जाती है। छोटों को प्यार, बड़ों का सम्मान, माता–पिता को ईश्वर के समान मानना भारतीय मूल्य हैं। आज का युवा इन मूल्यों से भटक रहा है। पश्चिमी संस्कृति के सम्मोहन ने उसे मूल्यहीन कर दिया है। यह मूल्यहीनता न केवल समाज, बल्कि उसके लिए भी हानिकारक सिद्ध हुई है। युवाओं की मूल्यहीनता ने उसे असंवेदनशील बना दिया है। संवेदनहीनता के कारण आपसी रिश्ते निरंतर कमजोर हो रहे हैं। अब किसी के दुःख को देखकर किसी में करुणा जग जाना बड़ी बात मानी जाती है, जबकि भारत एक ऐसा देश है, जहाँ क्रौंच पक्षी की वेदना एक व्यक्ति को महर्षि वाल्मीकि बना देती है। भारतीय संस्कृति तथा परम्पराओं को बचाए रखने के लिए हमें अपने अतीत से सीख लेनी होगी, तभी भारत विश्व का नेतृत्व करते हुए विश्व गुरु बन पाएगा। भारत विश्व भर में अपनी परंपराओं और मूल्यों के कारण प्रसिद्ध रहा है। भारतीय संस्कृति में समस्त मानव–जाति के विकास को केंद्र में रखा गया है। भारतीय संस्कृति में समस्त विश्व को एक परिवार माना गया है, जिसके प्रत्येक सदस्य के सुख और विकास को महत्व दिया जाता है।

युवाओं में अपने अनुसार जीवन जीने की महत्वाकांक्षा ने पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी में टकराव उत्पन्न किया है। इस टकराव ने सदियों से पवित्र और निश्छल माने जाने वाले संबंधों को भी कमजोर कर दिया है। रिश्तों की मिठास कम होने के कारण परिवार का टूटना आम हो गया है। इस पारिवारिक टूटन ने सामाजिक ढाँचे को भी प्रभावित किया है। आज भारतीय समाज अपनी संस्कृति और परंपराओं को भुलाकर पाश्चात्य जीवन–शैली अपनाने को आधुनिक होना मान रहा है। वह सुख और आनंद के बीच का भेद भूल गया है। आज का युवा भौतिक वस्तुओं से प्राप्त होने वाले सुख को ही जीवन का ध्येय मान बैठा है। सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन–शैली से

मिलने वाला स्थायी आनंद उसके लिए दोयम दर्जे का हो गया है। नई पीढ़ी की संवेदनहीनता के कारण पुरानी पीढ़ी एकाकीपन से जूझ रही है। नई पीढ़ी की मूल्यहीनता और संवेदनहीनता ने उसे एक ऐसे रास्ते पर धकेल दिया है, जहाँ तनाव, अवसाद और अकेलापन है। एक ओर जहाँ पुरानी पीढ़ी एकाकीपन से जूझ रही है, वहीं नई पीढ़ी भी भीड़ भरी दुनिया में अजनबीपन का सामना कर रही है। वर्तमान संदर्भों में हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार अज्ञेय का यह वाक्य अत्यंत प्रासंगिक है कि 'आजकल हर भीड़ अकेलों की भीड़ है और भीड़ में रहने वाला हर व्यक्ति अकेला है।' नई पीढ़ी अपनों के बीच अजनबीपन का अनुभव करती है क्योंकि अपनों के प्रति उसका भावनात्मक लगाव कम हो गया है। ऐसे समय में वह खुशी पाने के छोटे–छोटे अवसरों की तलाश कर रही है। नई पीढ़ी को यह समझना होगा कि स्थायी सुख पाने के लिए संवेदनशीलता, प्रेम और मूल्यों का पालन आवश्यक है। इससे न केवल उसका, बल्कि भारतीय संस्कृति का भी विकास तथा प्रचार होगा।

पूरे विश्व के लिए पिछले कई वर्ष चुनौतीपूर्ण रहे हैं। कोरोना ने एक ओर जहाँ व्यक्ति के सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित किया, वहीं नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से पुनः जुड़ने का एक अवसर भी प्रदान किया। कोरोना में बेरोजगार युवाओं की स्थिति और अधिक दयनीय हो गई। जिन युवाओं को रोजगार की चिंता नहीं थी, वे इंटरनेट और मोबाइल के आदी हो गए। कोरोना के बाद युवाओं में मोबाइल इस्तेमाल करने की लत अधिक देखी गई है। तकनीकी के आवश्यकता से अधिक प्रयोग ने युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। आज का युवा अधैर्यवान है, उसे छोटी–सी बात पर भी क्रोध आ जाता है, वह संघर्ष करते हुए अक्सर तनाव और अवसाद का शिकार हो जाता है। हालांकि एक सत्य यह भी है कि कोरोना काल में मिले समय ने पहले की तुलना में पारिवारिक संबंधों की नींव को मजबूत अवश्य किया है। भारत इस वर्ष आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। कोरोना की विभीषिका देखने के बाद आजादी के अमृत महोत्सव ने युवाओं में नई जीवन–शक्ति और संबंधों में नई ऊर्जा का संचार किया है। आजादी के अमृत महोत्सव ने युवाओं के भीतर देश के प्रति कर्त्तव्य बोध को जागृत किया है।

2023 में नई दिल्ली में 18वें जी 20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भारत ने पहली बार जी 20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। इस सम्मेलन का मुख्य विषय 'वसुधैव कुटुंबकम' था। इसका विषय ही इसके उद्देश्य का द्योतक है। इस सम्मेलन में भारत ने विश्व को संदेश दिया कि हमें राजनीतिक प्रपंच, युद्धों और भौगोलिक सीमा के मतभेदों को महत्व न देकर विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के विकास पर केंद्रित होना चाहिए। एक ऐसे समय में, जहाँ युवा अनेक भावनात्मक तथा सामाजिक सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है, वहाँ जी20 सम्मेलन में भारत की मेजबानी तथा मुख्य विषय ने युवाओं में नई ऊर्जा भरने का कार्य किया है।

यह अंक 2020–21, 2021–22 तथा 2022–23 के संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। जिज्ञासा का यह अंक नई पीढ़ी की रचनात्मक ऊर्जा का प्रमाण है। नई पीढ़ी विभिन्न समस्याओं से संघर्ष करते हुए समाज के विकास को नई दिशा देने के लिए प्रयासरत है। जिज्ञासा के इस अंक में प्रकाशित कविताएँ, कहानियाँ तथा वैचारिक लेख इस बात का प्रमाण हैं कि आज के युवा में रचनात्मकता बनी हुई है। युवाओं में रचनात्मकता की यह संभावना भारतीय समाज के विकास में महती भूमिका निभाएगी।

मैं महामहिम राज्यपाल ले.ज. गुरमीत सिंह, मा. मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी, उच्च शिक्षा मंत्री, डॉ. धन सिंह रावत, उच्च शिक्षा निदेशक, प्रो. सी. डी. सूंठा, कुलपति, हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल, हमारे प्रबंधतंत्र के सम्मानित सचिव श्री मानवेन्द्र स्वरूप जी व प्रबंधतंत्र की सम्मानित संयुक्त सचिव श्रीमती राधिका स्वरुप जी का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके निरंतर आशीर्वाद और मंगलकामनाओं से इस पत्रिका को नया आयाम प्राप्त हुआ। इसके लिए आपका विनीत आभार।

'जिज्ञासा' का यह संयुक्तांक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. अजेय सक्सेना, प्रो. के. आर. जैन तथा वर्तमान प्राचार्य प्रो. सुनील कुमार के मार्गदर्शन एवं सहयोग से ही आप तक पहुँच पाया है।

जिज्ञासा के इस संयुक्तांक के प्रकाशन हेतु मैं अपने सम्पादक मण्डल तथा परामर्श मण्डल के सम्मानित सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। इसे अतिरिक्त इस अंक को प्रकाशित करने मेरे शिक्षक साथियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों और छात्र–छात्राओं का भी मुझे सहयोग प्राप्त हुआ है उनका भी मैं धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। महाविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष दयाल सिंह बिष्ट तथा सचिव मनमोहन का भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे सहयोग प्रदान किया। मैं श्री अखिल गुप्ता, सरस्वती प्रेस की भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को प्रकाशित करने में बहुमूल्य योगदान प्रदान किया। बहुत सावधानी बरतने के बाद भी संभव है कि पत्रिका में मुद्रण तथा संपादन संबंधी कुछ त्रुटियाँ शेष रह गई हों, उन्हें अनदेखा कीजियेगा। पत्रिका के आगामी अंकों को और प्रभावशाली बनाने के लिए आपके सुझाव का स्वागत है।

(प्रो. राखी उपाध्याय)

ले. ज. गुरमीत सिंह
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम,
वीएसएम (से नि)
राज्यपाल उत्तराखण्ड

सत्यमेव जयते

राजभवन उत्तराखण्ड
देहरादून 248003
दूरभाष : 0135-2757400
2757403

25.04.2023

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज देहरादून द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका '**जिज्ञासा**' के विशेषांक 'आजादी का अमृत महोत्सव' एवं '**G-20**' का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के शिक्षकों, कार्मिकों और विशेष रूप से छात्र-छात्राओं को अपनी लेखन प्रतिभा के प्रदर्शन करने का समुचित अवसर प्राप्त होगा।

आशा है पत्रिका के इस अंक के लिए लेख प्रस्तुत करने वाले सभी लेखक प्रासंगिक एवं ज्वलंत विषयों पर अपने विचारों को सम्यक रूप से प्रस्तुत करेंगे। विगत वर्षों में '**जिज्ञासा**' के विभिन्न अंक छात्र-छात्राओं और शिक्षकों के लिए संग्रहणीय बन रहे हैं।

पत्रिका '**जिज्ञासा**' के विशेषांक हेतु मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

गुरमीत

(ले. ज. गुरमीत सिंह)
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (से नि)

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड प्रदेश

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरदून-248001
सचिवालय फोन : 0135-2716262
0135-265043
फैक्स : 0135-2712827
विधान सभा फोन : 0135-2665100
035-2665497
फैक्स : 0135-2666166
Email : cm-ua@nic.in

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि **डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून (उत्तराखण्ड)** द्वारा वार्षिक पत्रिका **'जिज्ञासा' (सत्र 2020-21, 2021-22 एवं 2022-23)** का संयुक्तांक का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका में महाविद्यालय स्तर की विभिन्न गतिविधियों के सफल आयोजनों सहित विभिन्न प्रकार की उपयोगी जानकारियों का भी समावेश होगा, जो नि:सन्देह महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा।

मेरी ओर से महाविद्यलाय को अपनी वार्षिक पत्रिका **'जिज्ञासा'** के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

(पुष्कर सिंह धामी)

डॉ. धन सिंह रावत
मंत्री
चिकित्सा स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा,
सहकारिता, उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा
विद्यालयी शिक्षा

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
देहरादून
कक्ष सं. 20
फोन : 0135-2666410
फैक्स : 0135-2666411

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि **डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून (उत्तराखण्ड)** महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका '**जिज्ञासा**' के संयुक्तांक वर्ष 2020-21, 2021-22 तथा 2022-23 का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय पत्रिकाएं छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को मंच प्रदान करने का कार्य करती हैं तथा इसके साथ ही उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को नये आयाम भी प्रदान करती हैं। यह पत्रिका महाविद्यालय की विभिन्न वार्षिक गतिविधियों के साथ छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रकाशन का एक सरल माध्यम है। इसके माध्यम से महाविद्यालय परिवार में एक सकारात्मक वातावरण विकसित होता है।

इस पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर प्रधान संपादक एवं संपादक मण्डल के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को जीवन में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करने की दिशा में सहायक सिद्ध होगी।

मैं महाविद्यालय की पत्रिका '**जिज्ञासा**' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रषित करता हूँ।

(डॉ. धन सिंह रावत)

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी 263139 (नैनीताल)

E-mail-higherducation.direcor@gamil.com

प्रो.(डॉ.) सी.डी. सूंठा

निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक 433/2023-24

दिनांक 26, अप्रैल 2023

सन्देश

महोदय,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि डी.ए.वी. (पी.जी.) देहरादून की वार्षिक पत्रिका **'जिज्ञासा' (सत्र 2020-21, 2021-22 एवं 2022-23)** का संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है।

पत्रिका महाविद्यालय में संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण दर्पण होती है, जो अध्ययनरत विद्यार्थियों को उनमें अन्तर्निहित मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा के विकास एवं अभिव्यक्ति का सुलभ अवसर प्रदान करती है। रचनाशीलता का विकास उच्च शिक्षण संस्थान का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है। **'जिज्ञासा'** इस लक्ष्य की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम होगी। शिक्षकों के आलेख एवं रचनाएं सृजनात्मकता को मुखरित एवं अभिप्रेरित करने में सहायक होने के साथ ही विद्यार्थियों के साथ उनकी रचनात्मक प्रतिभागिता को प्रतिबिम्बित करती है, जो उच्च शिक्षण संस्थानों को ज्ञान समाज के निर्माण के गन्तव्य की ओर अभिमुखीकृत करती है। वस्तुतः वार्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से चिन्तन, मनन, सृजन एवं नवाचार की श्रृंखला उदित अभिपुष्ट एवं परिवर्द्धित होती है।

मैं उक्त पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, समस्त प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित

(प्रो. (डॉ.) सी.डी. सूंठा)

सेवा में,
प्राचार्य,
डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज,
देहरादून।

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)-246174, उत्तराखण्ड, भारत
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University, Srinagar (Garhwal)-246174 Uttarakhand, India
(A Central University)

प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल
कुलपति
Prof. Annpurna Nautiyal
Vice-Chancellor

Ph. No. : 0346-250260
Fax No. : 01346-252174

Ref. No.: VC/HNBGU/2023/292
Dated : 17/05/2023

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि **डी.ए.वी. (पी.जी.) देहरादून (उत्तराखण्ड)** द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **'जिज्ञासा' (सत्र 2020-21, 2021-22 एवं 2022-23)** संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय शैक्षणिक गतिविधियों के साथ छात्र-छात्राओं में सृजनात्मकता के विकास में महाविद्यालय की पत्रिका की अहम भूमिका होती है। इससे विद्यार्थियों में अध्ययन के साथ-साथ विविध गतिविधियों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त प्रकाशन मण्डल को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

(प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल)

प्रो. के.आर. जैन
प्राचार्य,
डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज,
देहरादून, उत्तराखण्ड।

मानवेन्द्र स्वरूप
एडवोकेट
सेक्रेटरी
बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट
डी॰ए॰वी॰ (पी॰जी॰) कॉलेज, देहरादून

15/96 Civil Lines, Kanpur- 208 001
Phones (Office): 2303140, 2332777
(Resi) : 0512-2303138, 39
Fax : 0512-2332888

सन्देश

प्रिय डॉ. राखी जी,

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि डी. ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं के तहत वार्षिक पत्रिका '**जिज्ञासा**' का संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान में देश की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में जननाया जा रहा है। मुझे आशा है कि महाविद्यालय पत्रिका में शैक्षिक उन्नयन एवं विशेष छात्र उपयोगी पाठ्य सामग्री के साथ पत्रिका में विशेष लेखों का समावेश होगा, जिससे छात्र एवं छात्राओं के ज्ञान में अभिवृद्धि होगी और उनकी सोच में परिपक्वता आयेगी। ऐसे ही गुणों का विद्यार्थियों में विकास करने का सफल माध्यम कालेज पत्रिका होती है।

महाविद्यालय पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभ-कामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(मानवेन्द्र स्वरूप)
सचिव-प्रबन्ध समिति

डॉ. राखी उपाध्याय,
मुख्य संपादक-जिज्ञासा,
डी.ए.वी., पी.जी., कालेज,
देहरादून।

प्रो. के.आर. जैन
पूर्व प्राचार्य

डी॰ए॰वी॰ (पी॰जी॰) कॉलेज
देहरादून (उत्तराखण्ड)
Email : info@davpgcollege.com

सन्देश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि डी ए वी (पी जी) कॉलेज, देहरादून द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका **जिज्ञासा** का संयुक्तांक शैक्षिक सत्र 2020-21, 21-22 तथा 22-23 का प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे हार्दिक प्रसन्नता तथा पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखो के माध्यम से विद्यार्थी शिक्षा एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन करेंगे। यह पत्रिका उनका सर्वांगीण विकास करने के साथ-साथ मार्गदर्शन भी करेगी।

जिज्ञासा पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर मैं प्रो. राखी उपाध्याय, मुख्य संपादक तथा संपादक मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान करता हूं।

के आर जैन

(प्रो. के आर जैन)

प्रो. एस.के.सिंह
प्राचार्य

डी॰ए॰वी॰ (पी॰जी॰) कॉलेज
देहरादून (उत्तराखण्ड)
Email : info@davpgcollege.com

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून की वार्षिक पत्रिका 'जिज्ञासा'** के संयुक्तांक वर्ष 2020-21, 2021-22 एवं 2022-23 का प्रकाशन होने जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि प्रेरणादायी, संग्रहनीय लेखों एवं विचारों से 'जिज्ञासा' छात्र-छात्राओं के लेखन प्रतिभा को उद्वेलित करने में सफल होगी।

मैं 'जिज्ञासा' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

S. K. Singh

(प्रो. सुनील कुमार)
प्राचार्य

प्रो. राखी उपाध्याय
मुख्य संपादक 'जिज्ञासा'
डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज
देहरादून।

Editorial Board

Session 2020-21, 2021-22 & 2022-23

Left to Right: Sitting on Chair :- Prof. Neerja Chaudhary, Maj. Atul Singh, Prof. Rakhi Upadhyay (Chief Editor), Prof. Sunil Kumar (Principal), Prof. S.P.Joshi (Vice Principal), Prof. R.K. Sharma, Dr. Nisha Walia.

Standing I Row : Left to Right :- Dr. Rupali Bahal, Dr. Naina Srivtastav, Dr. Savita Rajput, Dr. Shaili Gupta, Dr. Vivek Tyagi, Dr. Gunjan Purohit, Dr. R.S. Dixit, Dr. Sandeep Kumar, Dr. Roshan Kumar.

अनुक्रमणिका

1.	भारतीय चिन्तन और मानव मूल्य	प्रो. सविता भट्ट	1
2.	साहित्य की वर्तमान चुनौतियाँ भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में	प्रो. पुष्पा खण्डूरी	8
3.	हिंदी के पंडित फादर कामिल बुल्के	प्रो. राखी उपाध्याय	10
4.	हिंदी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन	डॉ. निशा वालिया	12
5.	महिला सशक्तिकरण : महिला शिक्षा के विकास के संदर्भ में	डॉ. सविता राजपूत	15
6.	वायु प्रदूषण	प्रो. सविता भट्ट	18
7.	परिश्रम और परिणाम	डॉ. उर्मिला रावत	21
8.	आचरण	डॉ. संदीप कुमार	22
9.	रेणु जी की कहानियों में आंचलिक संवेदना	गीता	23
10.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एवं भारत की G-20 की अध्यक्षता	आशुतोष चोपड़ियाल	27
11.	स्कूल–कॉलेज के वो दिन हमेशा याद आयेंगे	प्रियांशु सक्सेना	31
12.	G20 प्रेसीडेंसी	रिचा	32
13.	जाति व्यवस्था की उत्पत्ति एवं परिवर्तन : प्रारम्भ से वर्तमान	दामिनी नेगी	33
14.	आजादी का अमृत महोत्सव	आशीष नौटियाल	34
15.	गाँधी : सामान्य परिचय	आदर्श भट्ट	36
16.	राष्ट्र निर्माण में नवयुवकों का योगदान	तुषार जगूड़ी 'शैल'	37
17.	चाइनीज मांझे की आफत बरकरारः 'पतंग की उड़ान, जा रही पक्षियों की जान'	प्रियांशु सक्सेना	38
18.	अहंकार का सार	जुवीन नौटियाल	39
19.	आज तो दिन ही खराब है	कंचन नौटियाल	40
20.	गुरु का नाम है	सूरज सेलवान	40
21.	जै उत्तराखण्ड	प्रो. पुष्पा खण्डूरी	41
22.	मैंने केवल वही लिखा है ...	डॉ. लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी 'विमल'	42
23.	भूमि की पुकार	महक भण्डारी	43
24.	पापा	बलजीत सिंह	43
25.	घर से दूर	विक्रम सिंह भण्डारी	44
26.	दहाड़	सूरज	44
27.	इन्सानियत । मानुष व्यथा	कविराज – देवेंद्र कुमार	45
28.	आज की नारी	राजेश कुमार शाह	46
29.	नये कवि की नई रचना	प्रदीप	47
30.	पलायन : पहाड़ का दर्द	प्रवीण श्रीवाल	48
31.	आत्मसंशय	अंकिता सकलानी	48
32.	माँ हिन्दी	लव पुरी	49
33.	तुम ही बोलो	मंदीप कोटनाला	49
34.	मूक सिंहासन	नन्दनी सती	50
35.	गुरु का सम्मान	सूरज सेलवान	50
36.	बालपन और रविवार	प्रदीप	51
37.	घर से दूर	विक्रम सिंह भण्डारी	52
38.	सैनिक	सूरज	52
39.	पलायनी पीड़ा/पीड़ित राह	प्रदीप	53
40.	मेरी कहानी तो अभी बाकी है	प्रदीप	54
41.	एक वकील	प्रियंका थापा	55
42.	आज का मनुष्य	कोमल चन्द	55
43.	टी.वी. और साहब	प्रदीप	56
44.	माँ की ममता	नमरा अहमद	56
45.	Challenges of Education System in India: Beyond Degrees to Meaningful...	Prof. G.P. Dang	57
46.	Postmodernism, its characteristics and its impact on society	Prof. Harbir Singh Randhawa	61
47.	Jahangir: His Personality and Character	Prof. Anju Bali Pandey	64
48.	Vision for Quality of Education	Prof. Prashant Singh	68
49.	Group of twenty - G20	Prof. Rakhi Upadhyay	69
50.	Nature and Scope of English Language in India	Dr. Monisha Saxena	73

51.	Go Get Education	Prof (Dr.) Ranjana Rawat	75
52.	Future Scope of Water Safety Planning in India	Prof. Prashant Singh	77
53.	Zero Budget Farming	Dr. Naina Srivastava	79
54.	The Psychology of Time: How Our Perception of Time Shapes Our Lives	Kutti Rawat	83
55.	Life-giving Rivers of Uttarakhand	Ashutosh Bhatt	84
56.	My NSS Journey: A Journey of Service and Personal Development	Deepak Sharma	86
57.	29UK BN NCC, Dehradun Group	Cadet Anurag	87
58.	Educational Technology	Rishabh Singh	88
59.	Role of women in the legal Profession	Shreya Sharma	91
60.	Artificial Intelligence - The Fourth Industrial Revolution	Soni	92
61.	India's G20 Presidency	Ankita	94
62.	Child Rearing and Learning	Nikhil Kundu	95
63.	Azadi Ka Amrit Mahotsava	Aishwarya Singh	96
64.	Cultural Competency	Nikhil Kundu	97
65.	My DAV College	Khushi Singh	98
66.	Hinduism : A Way of Life	Khushi Singh	98
67.	Corona Virus	Kirti Vishnoi	99
68.	Technology – A Boon or Bane?	Cadet Mansi khugshal	99
69.	Leadership	Dheeraj Sana	100
70.	For those who dare to dream there is a world to win	Sumit Chhetri	100
71.	National Education Policy 2020	Hitesh Thapliyal	101
72.	NEP 2020 (New Education Policy)	Anuradha	103
73.	Dr. B.R. Ambedkar	Shiya Bijalwan	105
74.	Taking Care of Your Mental Health	Cadet Ashish Negi	105
75.	The Brave Deed of a Unsung Warrior	Cadet Aditya Thapa	106
76.	Global Warming Crisis	Cadet Jayant Jhinkwan	107
77.	Women Empowerment: Winds of Change	Cadet Akhilesh Uniyal	108
78.	Decline in Moral Values in Contemporary World	Minakshee Rawat	109
79.	DNA Day 2023 : Five Things About DNA You Missed in Science Class	Geetanjali Negi	110
80.	Interesting Facts of Chemistry Which You Probably Didn't Know	Geetanjali Negi	111
81.	Human Trafficking: A Heinous Crime	Simran Linwal	112
82.	It’s Time to Look Up and Not Down Anymore	Chandra Prakash Nautiyal	112
83.	Oppenheimer: The Enigmatic Genius Behind the Atomic Age	Arnima Kaushik	113
84.	Bangladesh Trip	Anushka	115
85.	The Watchkeeper of the Gates of Kewal Vihar	Devansh	116
86.	Achieving Optimal Health and Wellness: A Holistic Approach	Yuvraj Bisht	117
87.	Charles Dickens: A Literary Luminary and Social Critic	Vibhudh Sharma	118
88.	Man is Not Made for Defeat	Khushi Singh	120
89.	Money v/s Succeds	Ayush Chauhan	122
90.	Lockdown Days | Mother | Summer Holidays	Yati Bisht	123
91.	Life	Rahul Dobhal	124
92.	Down Memory Lane	Khushi Singh	124
93.	Phoenix | Moon	Saloni Rawat	125

REPORTS

1.	Induction Meeting on Add-On Certificate Courses	126
2.	NCC Report	127
3.	भारत स्काउट एवं गाइड	133
4.	एन.एस.एस. की गतिविधियाँ	135
5.	क्रीड़ा–रिपोर्ट : 2022–23	137
6.	Career Counselling & Placement Cell Report	138
7.	Annual Report of the Proctorial Board	141

भारतीय चिन्तन और मानव मूल्य

प्रो० सविता भट्ट
संस्कृत विभाग

प्रभु का अनन्त वरदान तुम्हें
उपभोग करो प्रतिक्षण नव नव
क्या कमी तुम्हे है त्रिभुवन में
यदि बने रह सको तुम मानव (महाकवि पन्त)

विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में हमारी संस्कृति श्रेष्ठतम मानी गई है। वेद, रामायण, महाभारत, पुराण, धर्म–ग्रन्थ आदि सभी हमारी संस्कृति की पहचान कराते हैं। मानव सभ्यता के उत्थान और पतन में संस्कृति, शिक्षा और मानव मूल्यों का विशेष महत्व है। मनुष्य भी सृष्टि के अन्य प्राणियों की तरह सहज रूप में अपनी इन्द्रियों की प्रबल भूख लेकर उत्पन्न होता है, किन्तु अपने चिन्तन जैसे दिव्य गुण के कारण वह इतर जीव धारियों से भिन्न होकर सभ्यता और संस्कृति का विधाता बन जाता है। भावना और चिन्तन ने ही मानव को प्रेरित कर परिवार, समाज और राष्ट्र की रचना करााई तथा प्रेय और श्रेय के मार्ग प्रशस्त कराया। जिन स्तम्भों पर मानव ने सभ्य एवं सुसंस्कृत जीवन का प्रसाद खड़ा किया उसका नाम ही मानव मूल्य है।

प्राचीन मनीषियों ने मूल्य की जगह पुरुषार्थ शब्द का व्यवहार किया है तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को पुरुषार्थ चतुष्ट्य की संज्ञा दी है। वस्तुतः ये चार ही हमारे जीवन के प्रधान मूल्य हैं। धर्म– नैतिकता और मर्यादाओं का जनक होने के कारण जीवन का नियामक होता है। अर्थ– भौतिक सुख साधनों से जोड़ता है। काम– तत्व कुछ करने की और उपभोग करने की आग प्रज्जवलित करता है। और मोक्ष का लक्ष्य होता है– एक आत्यन्तिक शान्ति, सर्वविध बन्धनों की मुक्तता।

विश्व कल्याण और विश्व शान्ति हेतु मानव मूल्यों को अपनाने की नितान्त आवश्यकता है। मानव जीवन को सही दिशा देने वाले गुणों को ही मानव मूल्यों की संज्ञा से अभिहित किया गया है। जीवन को अनुशासित करने वाले तत्व भी मानव मूल्य कहलाते हैं। मनुष्य के यश में वृद्धि करने वाले अनुपम तत्व ही मानव मूल्य कहलाते हैं। वेद कहता है–

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव
यद भद्रं तन्न आ सुव (यजुर्वेद 30–3)

अर्थात् हे सविता देव! हमारे समस्त दुराचारों को दूर करो एवं जो कल्याणकारी हो वह हमें प्राप्त कराओ।

तन्मे मतः शिवसंकल्पमस्तु (यजुर्वेद 34–1)

अर्थात् मेरा हृदय कल्याणकारी संकल्पों वाला हो।

सत्य, धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, शौच, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान, क्रोध न करना, अहिंसा, यज्ञ, दान, तप, आदि गुण मानव मूल्य या धर्म स्वरूप माने गए हैं। वास्तव में इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। सर्वोतम मानव मूल्य सत्य को इंगित करता रामायण कार कहता है–

सत्यमेवेभवरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्षश्रितः

सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् (वा0रा0अयो0101–13)

आज ईमानदारी का अभाव है। काम में अरूचि, व्यर्थ में समय गंवाना; मजदूरों का शोषण, व्यापार में दलाली, विश्वासघात, व्याभिचार आदि अनेक अवगुण समाज की अनैतिकता की ओर संकेत देह रहे हैं। मानव के जीवन में आदर्श की कभी उनके व्यवहार को संतुलित मार्ग नहीं दिखा पाती है।

हमें इस स्थिति पर यथार्थ दृष्टि से विचार करना है। जिनकी इच्छा ईमानदार और सदाचारी बनने की है उन्हें प्राचीन भारतीय संस्कृति की ओर उन्मुख होना ही पड़ेगा। भारतीय संस्कृति की महानता से परिचित मानव अपना उद्धार करने में सक्षम है। भारतीय संस्कृति मानव मूल्यों से समाविष्ट है। मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो सृजन करता है उसी को संस्कृति कहते हैं।

के0 एम0 मुन्शी के शब्दों में – "हमारे रहन–सहन के पीछे जो हमारी मानसिक अवस्था जो मानसिक प्रकृति जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत शुद्ध एवं पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है वही संस्कृति है।

प्रत्येक संस्कृति की अपनी कुछ विशेषताएँ होती है। किसी भी देश की संस्कृति के निर्माण में धर्म, शिष्टाचार, नीति, विधि–विधान आदि का बहुत प्रभाव पड़ता है। भारतीय संस्कृति की अपनी कुछ विशेषताएं हैं जिसके कारण वह विश्व संस्कृति में महत्वपूर्ण है इसीलिए मनु स्मृति में कहा गया–

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः(मनु0 2–20)

इस देश में उत्पन्न ब्राह्मणों से सम्पूर्ण पृथ्वी के मनुष्यों को अपने–अपने चरित्र (आचार) को सीखना चाहिए।

भारतीय संस्कृति की निरन्तरता, विभिन्नता में एकता समन्वय की भावना, प्राचीनता, आध्यात्मिकता, गतिशीलता, आस्तिकता के प्रति विश्वास की भावना, धर्म परायणता, अवतारवाद, यज्ञ, यम नियमों का पालन, कर्मफल एवं पुनर्जन्म, महान पुरुषों के प्रति श्रद्धा और भक्ति, चार पुरुषार्थ, वर्णाश्रम व्यवस्था, विश्व बन्धुत्व की भावना आदि अनेक विशेषाएं उसे प्राचीनतम संस्कृतियों में अग्रगण्य बनाती है। अनेक संस्कृतियाँ बनी और समाप्त हो गई लेकिन भारतीय संस्कृति अपने मानव मूल्यों के साथ आज भी जीवन्त हैं। समाज और संस्कृति का गहन अटूट सम्बन्ध है।

समाज के अभाव में हम संस्कृति की कल्पना भी नहीं कर सकते। संस्कृति हजारों लाखों वर्षों की विकास मात्रा का परिणाम होती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज में रहने से ही उसके गुणों का विकास होता है। आइए उन मानव मूल्यों की बात करें जो मानव को मानव बनाती है– वे गुण है– अहिंसा सत्य, अस्तेय, ज्ञान, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शील, अतिथि सेवा, श्रद्धा, क्षमा, मधुवचन, शौच, सन्तोष, तप, ईश्वर प्रणिधात, स्वाध्याय, काम्य एवं निषिद्ध कर्मों का त्याग, परिश्रम, परोपकार, सत्संगति, अनुशासन, सन्तोष, आदि।

उक्त समस्त गुण मानव मूल्यों कहे जा सकते हैं। वे व्यक्तिगत निर्माण में सहायक होते हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति इन्हीं जीवन मूल्यों पर टिकी थी। प्राचीन काल में विद्या अथवा ज्ञान का अत्यन्त महत्व था। तभी तो कहा गया– मानव मूल्यों के सन्दर्भ में धर्म का विवेचन आवश्य है।

सामान्यतः धर्म वह आन्तरिक वृत्ति है जिसके कारण किसी प्राणी या पदार्थ को जाना जाता है। मननशीलता मनुष्य का सहज धर्म है जैसे सूर्य का प्रकाश, पुष्पा का सुवास और गगन का धर्म सर्व व्यापकता। किन्तु मनुष्य के सन्दर्भ में मननशीलता उसका प्रकृत धर्म अवश्य है किन्तु जिस प्रसंग में धर्म शब्द प्रयोग होता है उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध मनुष्य के संस्कारों से होता है। ये संस्कार आत्म निर्माण से लेकर परिवार, समाज और विश्व निर्माण तक सक्रिय व महत्वपूर्ण होते हैं। इतने व्यापक अर्थ में धर्म की कल्पना और तदनुसार प्रवृत्ति ऋषि भूमि भारत की विशेषता है। हमारे आदि ग्रन्थ ऋग्वेद में धर्म का अनेक स्थलों पर प्रयोग हुआ है। वृहदारण्यकोपनिषद में कहा गया–

यो वै स धर्मः सत्यं वै तत् (वृह0 4–14)

अर्थात् जो सत्य है वह धर्म है, जो धर्म है वह सत्य है।

वैशैषिक सूत्र के अनुसार जिससे एहिक उत्कर्ष और पारलौकिक कल्याण हो अर्थात् निःश्रेयस की उपलब्धि हो वही धर्म है।

यतोश्भ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः
(कणाद् वैषोशिक सूत्र 1–1–2)

वशिष्ठ धर्म सूत्रानुसारेण श्रुति एवं स्मृति विहित कर्म धर्म है। गौतम धर्म सूत्र में वेद को धर्म का मूल बताया गया है। 'धृ' धातु से निष्पन्न धर्म का अर्थ कोशकारों ने धारण किया है। जिस प्रकार प्रकृति का विधान विश्व को भौतिक रूप में धारण करता या उसे नियमित कर स्थिर करता है– उसी प्रकार वह व्यवस्था नियम पद्धति और आचार विचार धर्म के घटक हैं, जिनसे मानव व्यष्टि और समष्टि व्यवस्थित होकर लक्ष्योन्मुख होती है। धारणाद् धर्म इत्याहु तथा धर्मो धारयते प्रजाः की उक्तियाँ इसी तथ्य की ओर इंगित करती है।

आहार निंद्रा और भय आदि मानव और मानवेतर प्राणियों में समान रूप से पाये जाते हैं किन्तु जीवन मूल्यों का निर्धारण एवं उसका परिपालन मानव जाति की ही विशेषता है। मानव के इन जीवन मूल्यों को ही

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः

एमच्चतुर्विधं प्राहु साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्।। (मनु0 2–12)

अर्थात्– वेद, स्मृति, सदाचार और अपने अपने आत्मा को प्रियसन्तोष ये चार साक्षात धर्म के लक्षण है। आचारः परमो धर्म (मनु 1–108) कहकर आचरण की पवित्रता पर बल दिया गया।

घृतिः क्षमा दमो स्तेयं भौचमिन्द्रियनिग्रहः

घी र्विद्या सत्यमक्रोधो द ाकं धर्म लक्षणम् (मनु 6–92)

सन्तोष, क्षमा, मन को दबाना, अन्याय से किसी की वस्तु न लेना, शारीरिक पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह (विषयों से रोकना), बुद्धि, (शास्त्रादि तत्व का ज्ञान), विद्या (आत्म बोध) सत्य, क्रोध न करना ये दस धर्म के लक्षण हैं।

इस प्रकार से वेद, स्मृति, आत्महित, परहित, धृति क्षमा आदि के मूल्य हैं जिन्हें अपनाने के कारण मानव, मानव कहलाता है।

यज्ञ, अध्ययन और दान प्रथम, तप द्वितीय और ब्रह्मचर्य धर्म का तृतीय स्कन्ध है, ऐसा छान्दोग्योपिनिषद का प्रतिपादन है। इस प्रकार धर्म का एक विराट अर्थ से मण्डित है जो मन की पावनता से उद्भूत संकल्प, व्रत आचार से लेकर विश्व व्यापी मानव जाति की पद्धति व व्यवस्था को आत्मसात करता है।

"धर्म है अपने 'स्व' को पहचानकर अपने चतुर्दिक फैले अज्ञान से ऊपर उठना और यह अनुभव करना कि उसका आत्म प्रकृति चिर आनन्दमयी है– दुख का आच्छादन मिथ्या है। धर्म किसी व्यक्ति विशेष या जाति विशेष के लिए नहीं, वह है सर्व सामान्य के लिए। श्री नारायण सिंह "हमारा धर्म और उसकी वैज्ञानिक रूपरेखा"

वाल्मीकि रामायण में धर्म का परिष्कृत रूप देखने को मिलता है। वे केवल राम अपितु प्रत्येक सात्विक पात्रों में धर्म निरपेक्षता का गुण विद्यमान है। रामो विग्रहवान धर्मः अर्थात् वे साक्षात् धर्म ही है। राजा दशरथ धर्मपाश से संयत्, धर्मविद्, विश्वामित्र, धर्मवित्, महाराजा सगर– धर्मात्मा और भरत धर्म में राम से भी बढ़कर कहे गए हैं–

रामादपि हि तं मन्ये धर्मतो बलवत्तरम (रामा0 2–12–62)

समाज में जो जितना उन्नत होता है, उससे उतने ही आचार–विचार की अपेक्षा की जाती है। स्वधर्म में तत्पर होने की प्रेरणा हमें रामायण से ही मिलती है।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में तप से ऋत और सत्य को प्रसूत बताया गया है–

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोध्यजायत् (ऋक 10–190–1)

जिस इस प्रकार धर्म आचार है जो मानवता और मानव के विश्व व्यवहार को धारण करने के कारण उनका आधार है उसी प्रकार ऋत और सत्य भी क्रमशः विश्वविधान और नैतिकता के आधार हैं।

बाह्य जगत की सारी प्रक्रिया विभिन्न प्रक्रिया विभिन्न प्राकृतिक नियमों के अधीन चल रही हैं। उन सारे नियमों में कोई विरोध एक रूपता या एक्य विद्यमान है इसी को ऋत कहते हैं। इस प्रकार मनुष्य के जीवन के प्रेरक जो भी आदर्श हैं उन सबका आधार सत्य है। अपने स्वरूप के प्रति सच्चा रहना यही वास्तविक धर्म हैं। वेद में प्रार्थना की गई– वाचः सत्यमशीय (युज0 39–4) अर्थात् मैं अपनी वाणी में सत्य को प्राप्त करूं। सत्येन सत्यम (युज0 20–12)

सत्य च में श्रद्धा च में ..... यज्ञेन कल्पताम्

मैं यज्ञ द्वारा सत्य और श्रद्धा को प्राप्त करू।

रामायणकार ने भी इस सन्दर्भ में कहा–

सत्यवादी हि लोकेश्स्मिन परं गच्छति चाक्षयम् (रामा0 2–109–11)

अर्थात् सत्यवादी पुरुष ही संसार में परम अक्षय पद को प्राप्त करता है। लोक में सत्य ही ईश्वर है। धर्म सदैव सत्य पर आश्रित रहता है। सत्य से बढ़कर कोई भी उत्कृष्ट वस्तु नहीं है। इस साधना द्वारा मनुष्य निर्विकार। निष्कलुष या निर्मल धर्म के आश्रित होता हुआ ऋषि रूपता प्राप्त करता है। एक स्थल पर कहा गया– मैं धर्म से उसी प्रकार विचलित नहीं हो सकता जैसे कि चन्द्रमा से उसकी कान्ति। (रामा0 1–39–28)

व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक आदि सभी स्तरों पर धर्म आवश्यक है यथा– राजा के लिए प्रजा पालन, प्रजा के लिए राज भक्ति, भाई की भाई के प्रति प्रीति व त्याग, गुरुजनों का आदेश पालन, प्रतिज्ञा की पूर्ति, शरणागत वत्सलता, मित्रोपकार, पितृ निष्ठा, मातभक्ति, पति प्राणता सहित, वर्णाश्रम से सम्बद्ध सभी आचार व्यवहार धर्म के अन्तर्गत आते हैं। धर्म विहीन

व्यक्ति के लिए कोई भी विधान या व्यवस्था प्रभावकारी नहीं होती। कर्त्तव्य का निर्धारक भी धर्म होता है और इस दृष्टि से वह नैतिकता को आत्मसात करता है। जिस प्रकार प्रकाश अन्धकार को मिटा देता है उसी प्रकार धर्म अधर्म को विनष्ट कर देता है।

आचार संस्कार

जीवन की शुद्धता द्वारा मानवीय महान लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए हमारे चिन्तक ऋषियों ने आचार–विचार और संस्कार के विधान किए हैं। मन वाणी और कर्म की शुद्धता को यहाँ तप संज्ञा दी गई है। संस्कारों से मानव का अनगढ़पन दूर होता है। संस्कार हमारे अन्तरंग और बर्हिरग के परिष्कार है। शुद्ध आचार विचार से एक स्वस्थ एवं सन्तुलित व्यक्तित्व का निर्माण होता है। लोक की दृष्टि से उचित तथा शास्त्र सम्मत व्यवहार का नाम आचार है। मर्यादाहीन और पापाचार सम्मिलित व्यक्ति सत्पुरुषों के सम्मान का पात्र नहीं होता है। पुण्य और पाप हमारे कृत्यों के परिणाम होते हैं। शुभ कर्मों का फल पुण्य के रूप में और अशुभ कर्मों का फल पाप के रूप में उदित होता है। वाल्मीकि के अनुसार मनुष्य पहले पाप मन में धारण करता है, फिर उसे छिपाकर वाणी से झूठ बोलता है तथा शरीर के माध्यम से उस पाप को कार्य रूप में परिणत कर देता है–

कायेन कुरुते पापं मनसा सम्प्रधार्य तत।

अनृतं जिह्वा चाह त्रिविध कर्मपातकम्।। (वा0 रा0 2–109–21)

धर्म की अपेक्षा अर्थ की, और अर्थ की अपेक्षा काम की भूमिका गौण होती है। आलस्यहीन होकर धर्म और अर्थ का संग्रह करते हुए तदनुकुल काम का सेवन श्रेयस्कर होता है।

अभिप्राय यह है कि जिस कर्म में धर्मादि पुरुषार्थों का समावेश न हो उसे नहीं करना चाहिए। जिससे धर्म की सिद्धि हो उसी का आरम्भ करना चाहिए। जो केवल अर्थ परायण होता है वह लोक में सबके द्वेष का पात्र बन जाता है तथा धर्म विरुद्ध काम में आसक्त होना निन्दनीय होता है जो धर्म और अर्थ को छोड़कर केवल काम का सेवन करता है उसकी दशा वही होती है जो एक वृक्ष पर सोने वाले की जो नीचे लुढ़क कर गिरने पर ही जगता है–

हित्वा धर्म तथार्थं च कामं यस्तु निशेवते

स वृक्षाग्रे यथा सुप्तः पतितः प्रति बुध्येत।। (रामा0 4–38–21, 22)

मनुष्य चिन्तन और कार्य की अप्रतिम क्षमता लेकर उत्पन्न होता है। यदि वह निष्क्रिय पड़ा रहे तो जीवन और जगत प्रभाहीन हो जाए।

यद्यपि एक ओर आज हमारे सम्मुख अनेक समस्याए हैं किन्तु हमारी सफलताएं और योजनाए भी हैं। आज हमारा राष्ट्र भी बहुत बड़ा देश बन गया है। घर की दहलीज से कदम बाहर रखते ही विभिन्न क्षेत्रों की प्रगति के प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने आ जाता है। नए–नए स्कूल, कॉलेज तथा औद्योगिक संस्थान हमारे भीतर आशाओं का संचार करते दिखाई देते हैं। आज हमें मानव की सफलता सीढ़ी का अन्त नहीं दिखाई देता है। सफलता का सूरज हमारी आँखों को चकाचौंध कर रहा है। परन्तु फिर भी हमारे मन में कभी–कभी भयंकर आशंकाए भी जागती है। जिससे कोई भी विचार वान व्यक्ति का मन अशान्त हो जाता है। न जाने कब मनुष्य के पाप का घड़ा भर जाए और विनाशकारी बादल हमारी संस्कृति सभ्यता का अन्त कर इन्सान को शैतान बना डाले। एक ओर हमारी भव्य उन्नति है तो दूसरी ओर विकृष्ट घटनाओं का लेखा–जोखा, जिसके कारण शर्मसार होकर हमें समाचार पत्र को नीचे गिरा देना पड़ता है। हमारे दैनिक समाचार पत्र हमें समाज की यथार्थ जानकारी दे देते हैं। मानव मूल्यों का पतन होता देख मानव हतप्रद हो उठता है। कहाँ गए हमारे वे प्राचीन मानव मूल्य जिसके ऊपर हमें बहुत गर्व था। आज वे सभी लुप्त से हो गए हैं। रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार समाज में मानों जीवन के अंग बन गए हैं। जातिवाद, कुलपक्षपात, भाई–भतीजावाद, बेईमानी आदि समाज के हर मोड़ पर सहज ही दृष्टव्य है। योग्य, कार्यकुशल और परिश्रमी व्यक्ति के प्रगति के द्वारा बन्द कर दिए जाते हैं जबकि सिफारिशी व्यक्ति आगे बढ़ जाते हैं। योग्यता का समाज में कोई महत्व नहीं दिखाई देता है।

समाज में अनेक समस्याओं और बुराइयों ने जन्म ले लिया है। प्रारम्भ से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा मानो अपूर्ण ही है। तभी तो स्कूल और कॉलेज में बिताये अपने जीवन के अनुभव पर एक नवयुवक स्नातक ने आज की शिक्षा पद्धति पर ये विचार व्यक्त किए–

आज भारतीय विद्यार्थी में जिस चीज की सर्वाधिक कमी है, वह है– एक आदर्श, जो उसके जीवन को एक ध्येय तथा कार्य को प्रोत्साहन दें। आज जो भयंकर

आशंका हमें होती है उसका कारण है कि आदर्श का स्थान भौतिक लाभ हानि ने ले लिया है।

स्पष्ट है– आज का युवक अपने को ऐसे स्थान पर खड़ा पाता है जहाँ एक ओर पूरब की खाई है तो दूसरी ओर पश्चिम का अजगर।

विद्यार्थियों में अनुशासन का अभाव है। माता–पिता सन्तान के भविष्य के प्रति चिन्तित और शंकालु हैं वे सोचते हैं कि अपने बच्चों के नैतिक और आध्यात्मिक प्रशिक्षण की कमी को वे कैसे पूरा करें।

एक स्नातक ने जो ऊँची सरकारी नौकरी में है वह भी शिकायत कर बैठता है कि अपनी शिक्षा के तमाम वर्षों में उसको एक बार भी कोई नैतिक शिक्षा सुचारू रूप से नहीं दी गई। जब उसने अपने को किसी, किसी स्थिति के सम्मुख पाया जो नैतिक निश्चय मांगती थी तो उसने पाया कि उसका कोई ऐसा सिद्धान्त न था जिसका आधार वह ले सकता था। उसने जीवन संघर्ष में अपने को अकेला तथा मार्ग दर्शक से दूर महसूस किया।

स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते

विद्या से अनेक लाभ होते हैं। विद्यावान नम्रता से संयुक्त होकर योग्यता प्राप्त कर लेता हैं उपरान्त धन–धर्म और सुख आदि यथा–

विद्या ददाति विनय, विनयाद याति पात्रताम

पात्रत्वाद धनमाप्नोति धनाद् धर्म स्ततः सुखम्

विद्या विहीन को पशु तुल्य माना गया है। प्रत्येक मानव के लिए ज्ञान अर्जित करना श्रेष्ठ माना गया क्योंकि ज्ञानेन् अपवर्गः अर्थात् ज्ञान से मुक्ति मिलती है तो विपर्यात् बन्ध इष्यते अर्थात् विपयर्य अर्थात् अज्ञान से बन्धन मिलता है।

वेदो अखिलो धर्म मूलम् कहकर वेदो को धर्म का मूल कहा गया है। आचारः फलते धर्म उद्योगपर्व

अर्थात् आचार से ही धर्म फलीभूत होता है। आचारः परमो धर्मः कहकर आचरण की पवित्रता पर बल दिया गया। सदाचार के अन्तर्गत सत्यता, हितकार, प्रथाए तथा नैतिक व्यवहार का सन्निवेश होता है। दया, अनसूया, शुभ के प्रति प्रवृत्ति, दानशीलता, सम्यक श्रम और लोभहीनता आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।

महाभारत में–

देशजाति कुलानां धर्मज्ञोश्स्मि जनार्दन

कहर देशधर्म, जाति धर्म और कुलधर्म की ओर संकेत किया गया, ये विशिष्ट धर्म कहे गए।

मानवता युक्त नैतिक धर्म से सम्बन्धित साधारण धर्म कहे गए। मानव मूल्यों का नियोजन संस्कृति में सत्य की महत्ता पर प्रकाश डाला गया– सत्य से व्यक्ति और समाज दोनों की उन्नति होती है। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी सत्य का ही अवलम्बन लेना चाहिए–

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यप्रियम्

प्रियं च नानृतं ब्रूयादेश धर्मः सनातनः।। मनु0 4–138)

सत्य बोले, प्रिये बोले, सत्य भी अप्रिय न बोलें और प्रिय भी असत्य न बोले– यही सनातन धर्म है।

अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने को ब्रह्मचर्य कहा गया। अनुशासन और संयम का जीवन उल्लेखनीय है। किसी को भी वाणी और कार्यों से हानि न पहुँचाना अहिंसा है।

अहिंसा परमो धर्मः सर्व प्राण भृतां वर (महा0 आदि पर्व 11–13)

मानव अपने अहिंसात्मक व्यवहार से सभी का प्रिय बनता है। न हिंसा अहिंसा – इस विग्रह के अनुसार हिंसा का अभाव अहिंसा है। हिंसा से सर्वत्र वैर का, अशान्ति का वातावरण निर्मित होता है। अहिंसा से बन्धुत्व, दया, अनुराग, प्रेम और शान्ति की वर्षा होती है।

भारतीय संस्कृति परोपकार की भी शिक्षा देती है। परोपकार सृष्टि का आधार है–

परोपकाराय फलन्ति वृक्षा, परोपकाराय वहन्ति नद्यः

परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं भारीरम्

(विक्रमोर्वशीयम्)

अपि च

परोपकाराय सतां विभूतयः

दम – अपनी इन्द्रियों को पूर्ण रूप से वश में करना दम या इन्द्रिय निग्रह है। इन्द्रियों के साथ मन को नियन्त्रित रखना भी आवश्यक है। प्रत्येक दृष्टि से संयमित

मानव ही प्रशंसनीय होता है अन्यथा आवागमन के चक्र में फंसकर मुक्ति प्राप्त करने में असमर्थ रहता है– कठोपनिषद में कहा गया–

आत्मानं रथी बिद्धि भारीरं रथमेव च

बुद्धि तु सारथिं बिद्धि मनः प्रग्रहमेव च।। (कठोपनिशद 1–3–3)

यमाचार्य कहते हैं – हे नचिकेता आप आत्म तत्त्व को रथी (स्वामी) शरीर को रथ, बुद्धि को रथ संचालक सारथि और मन को इन्द्रियों रूपी अश्वों की वश में करने वाली लगाम जाने।

क्षमा – व्यक्ति में क्षमा की भावना हो तो वह महान बन जाता है। मनुष्य का क्षमा धर्म उसकी विनम्रता का द्योतक है। यहाँ तक कि अपशब्दों का प्रयोग और अव्यवहार करने वाले के प्रति भी क्षमा युक्त होना चाहिए। वैदिक ऋषि भी कहते हैं–

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः

श्रद्धां भगस्य मूर्धति वचसा वेदयामसि।। (ऋ0 10/151/1)

अर्थात् श्रद्धा से ही अग्नि प्रदीप्त होती है। श्रद्धापूर्वक ही हवि दी जाती है; श्रद्धा सम्पूर्ण वैभव की शिरोमणि है। गीता में भी श्रद्धावान् लभते ज्ञानम (गीता 4/39) कहकर श्रद्धा के वैशिष्ट्य को प्रकट किया गया। श्रद्धया देयम अश्रद्धयाश्देयम् आदि मंत्र में दान में श्रद्धा के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। (तैतिरीय् उ0 1/11/1) श्रद्धाहीन व्यक्ति यदि दान में प्रवृत्त हो तो निरर्थक है। मातृभूमि के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा गया–

माता भूमिः पुत्रो हं पृथित्याः (अथर्ववेद 12/1/12)

मातृ देवो भव, पित् देवो भव, आचार्य देवो भव आदि वचन भी माता पिता और आचार्य के प्रति श्रद्धा को प्रकट करते मनु कहते हैं–

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः

चत्वारि तथ्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्

अर्थात् श्रद्धावान व्यक्ति के आयु विद्या, यश और बल भी बढ़ते हैं। गुरुजनों को तिरस्कार करने वाले बहुत बड़े पाप के भागी बनते हैं।

मधुर वचन – अपने मधुर और प्रिय वचन से मनुष्य अपने विरोधियों को भी परास्त करने में सफल हो सकता है। मधुर वार्ता सबको आकृष्ट करती है।

शील – शीलवान पुरुष प्रशंसनीय होता है शीलं पर भूषणम् कहकर शीलता रूपी गुण की प्रशंसा की गई है। विचार, वाणी और कार्यों से जो शील युक्त होता है वही शील सम्पन्न माना जाता है। महर्षि वेद व्यास कहते हैं–

भीलेन हि त्रयो लोकाः भाक्या जेतुं न संशय (महाभारत)

अर्थात् भीलवान तीनो लोकों को जीतने में समर्थ होता है।

अतिथि सेवा – पंच महायज्ञों में अतिथि सवेा का अत्यन्त महत्व है।

धन्यं यशस्यमायुण्यं स्वर्ग्यं वाशतिथिपूजनम् (मनु 3–106)

अतिथि सेवा से आयु यश और स्वर्ग मिलता है। घर आए शत्रु की भी सेवा सुश्रुषा करनी चाहिए–

अरावप्युचितं कार्यं आतिथ्यं गृहमागते (महा0 भा0 पर्व0 146–5)

अतिथि का आदर सम्मान और सत्कार करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्त्तव्य माना गया और उसे अतिथि धर्म कहा गया।

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक वर्ग के लिए अलग–अलग कर्त्तव्य और नियम निर्धारित किए हैं। उनका पालन और आदर करना सभी के लिए आवश्यक है। ब्राह्मण का प्रधान कर्त्तव्य–वेद पढ़ना–पढ़ाना, यज्ञ करना कराना आदि। क्षत्रिय का प्रजा की रक्षा करना, वैश्य के लिए पशुओं की रक्षा करना, कृषि कर्म करना आदि तथा शूद्र के लिए तीनों वर्णों की सेवा करना आदि आवश्यक कर्त्तव्य माने गए। प्राचीन काल में मनुष्य के जीवन को अनुशासित करने के लिए आश्रम व्यवस्था निर्धारित थी। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन चार आश्रमों में विभाजित कर दिया गया था– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी को निर्देश दिया गया कि वह गुरु के सान्निध्य में रखकर ज्ञान अर्जित करें; गृहस्थ का परम कर्त्तव्य था कि वह त्रिवर्ग का पालन करता हुआ गृहस्थ कार्यों को

करे। गृहस्थ जीवन से अवकाश लेकर वह वानप्रस्थ में प्रवेश करता था। मोहमाया का त्याग कर आध्यात्मिक जीवन जीना वानप्रस्थ था। वास्तव में यह सन्यास के लिए पृष्ठभूमि थी जिसमें वह संयम, त्याग, अनुशासन, तपश्चर्या का अभ्यास करता था।

नैतिक आदर्श और नियम युग के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। सत्य युग में तप, त्रेता में ज्ञान, द्वापर में यज्ञ और कलि में केवल दान को ही धर्म कहा गया है।

मानवता एक ऐसा दिव्य गुण है जो मनुष्य को चिन्तन मनन की शक्ति प्रदान करने के साथ ही उसे कर्त्तव्य अकर्तव्य का बोध कराता है। मानव जीवन की सफलता के लिए अनुशासन परम आवश्यक है। अनुशासन एक ऐसी सफलता की कुंजी है जिसका आरम्भ से प्रयोग किया जाए तो हमारे जीवन रूपी स्वर्ग के द्वार सरलता से खुल सकते हैं।

आचारः परमो धर्मः कहकर आचरण की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है। भारतीय संस्कृति में मानव मूल्यों की शिक्षा निहित है। मानव मूल्यों को आचरण में समाहित कर ही मनुष्य श्रेय और प्रेम की प्राप्ति करते हुए परिवार, समाज, देश एवं राष्ट्र को उन्नत बना सकता है। मानव से उच्च विचार, नैतिकता और पवित्र आचरण की अपेक्षा की जा सकती है। वर्तमान में मानव जीवन आधारित मूल्यों में विकृति आई है। आज मानव जीवन संघर्ष, अशान्ति और अविश्वास से घिरा हुआ है। शान्ति, सौहार्द और भाईचारे का अभाव है। हमें फिर से पुरातन संस्कृति और शिक्षा के प्राचीनतम रूप को पहचानना है और साथ–साथ चलना है। तथा– सह नाववंतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य करवा वहै जैसी वैदिक भावना को अपनाना है। भारतीय संस्कृति में पल्लवित मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है।

भारत और भारतीयों की प्रशंसा करते हुए मैथिलीशरण गुप्त जी भी कह उठे–

हाँ वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।

ऐसा पुरातन देश भी क्या विश्व में कोई और है?

भगवान की भवभूतियों का यह प्रथम भण्डार है।

विधि ने किया हर सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।

संक्षेप में ऋषियों द्वारा प्रदत्त आचार संहिता या जीवन दृष्टि का नाम है मानव मूल्य– जिससे मानव जीवन सार्थक बनता है।

असतो मा सद्गमय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

मृत्योर्मा अमृतम् गमयेति (वृहदा0 1, 3, 28)

असत्य पर नहीं, सत्य पथ की ओर बढ़ो।

अन्धकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर बढ़ो।

मृत्यु की ओर नहीं, अमृतत्व की ओर बढ़ो। इति भाम

सुविचार

किसी व्यक्ति की कोई बात बुरी लगे तो दो तरह से सोचो। यदि व्यक्ति महत्वपूर्ण है तो बात को भूल जाओ, और अगर बात महत्वपूर्ण है तो व्यक्ति को भूल जाओ

साहित्य की वर्तमान चुनौतियाँ भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में

प्रो० पुष्पा खण्डूरी

हिन्दी विभाग

साहित्य समाज का दर्पण है। दर्पण सदैव सत्य को दिखाता है और हर समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। संस्कृति किसी समाज विशेष की जीवन –पद्धति होती है जो मूलतः उस समाज की जड़ों को उसकी जमीन से जोड़े रखती है। यह जितनी भौतिक स्थूल और पार्थिव दिखाई देती है उतनी आधिभौतिक सूक्ष्म और अपार्थिव भी। समाज के प्राणिमात्र के विचार कल्पना भाव चेष्टाएं आचरण सबका यही संश्लिष्ट बोध संस्कृति कहलाता है ।

काल – सागर की असंख्य लहरों के उत्थान पतन और तूफ़ानों के झंझावातों को पार कर जो साहित्य हम तक पहुँचता है वह अपने साथ–साथ तत्कालीन समाज की संस्कृति और परम्पराओं के अतिरिक्त उसके इतिहास, भूगोल एवं प्रकृति पर्यावरण को भी प्रतिबिम्बित करता है। समय – समय पर समाज और समाज के संस्कार तथाकथित जीवन –मूल्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। इसलिए साहित्यकार की जिम्मेदारी भी सर्वांगीण होती है। क्योंकि मनुष्य की संस्कृति कुछ अर्थों में स्वअर्जित होती है किन्तु समाज की मूल प्रकृति परिवर्तनशील है। अतः संस्कृतियां भी कालान्तर में समाज की सुख – सुविधाओं में विस्तार के साथ , वैज्ञानिक आविष्कारों और यातायात के अत्याधुनिक संसाधनों की सहज सुलभता के कारण सुदूर जगत के रीतिरिवाजों से प्रभावित होती हैं तथा कभी – कभी उनकी नकल से अपने असल स्वरूप से दूर चली जाती हैं । हमारी भारतीय संस्कृति को भी कुछ ऐसी ही हवा लग चुकी है। एक सच्चा साहित्यकार विशेष रूप से अधिक संवेदन शील होता है तथा वह स्वयं को समाज का ठेकेदार या पहरेदार जैसा मानता है –

जो है उससे बेहतर चाहिए

पूरी दुनिया को साफ करने के लिए मेहतर चाहिए

उसके जन सरोकार लोकमंगल की कामना इतिहासकारों की जबाब देही उसकी जिम्मेदारियां और बढ़ा देती हैं। उन्हें निभाने हेतु साहित्यकार को अनेक चुनौतियां स्वीकार करनी पड़ती हैं।

वर्तमान समाज में यदि हम अपने देश के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान समाज का अवलोकन करें तो हमारे यहाँ जीवन मूल्यों में पाश्चात्य के अंधाधुंध अनुकरण से भारी गिरावट आई है । वैदिक संस्कृति से उपजी हमारी भारतीय –सभ्यता के जीवन –मूल्य उच्च कोटि के जीवन – मूल्य थे । ये भगवान राम कृष्ण और बुद्ध की धरती है । जिनके द्वारा समाज में सत्य ,धर्म , न्यायप्रियता, मानवता , अहिंसा और करुणा , प्रेम, संवेदना जैसे से उत्कृष्ट मानवीय जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा की गई थी। हमारा वैदिक वाङ मय उपनिषद, अन्य धार्मिक साहित्य ब्राह्मणग्रंथ, स्मृतियाँ , पुराण, श्रीमद्भगवद्गीता, बाल्मीकि रामायण , रामचरित मानस और पालि भाषा के साहित्य जातक एवं धम्मपद जैसे साहित्य से हमारा ये देश सदा स्वनाम धन्य देश रहा है।

किन्तु आज के हमारे समाज का यदि हम संस्कृति और सामाजिक उत्कृष्टता की दृष्टि से मूल्यांकन करें तो निश्चित ही मेरी दृष्टि में हमारा भारतीय समाज व संस्कृति पतनोन्मुखी हो रही है । परिवारिक अनुबंध टूट रहे हैं , रिश्ते तार – तार हो रहे हैं, धनलोलुपता बढ़ रही है। धर्म में स्वार्थपरता का बोलबाला बढ़ा है। धार्मिक परम्पराओं और नियमों की परिभाषा हर व्यक्ति अपनी सुविधा की दृष्टि से गढ़ने लगा है। विवाह जैसे पवित्र बंधन की नकारता, लिव–इन का फैशन, भाई – भाई का दुश्मन ,औलाद माता पिता की दुश्मन, बढ़ते वृद्धाश्रमों की संस्कृति, पति –पत्नी के बीच कोर्ट कचहरी मुकदमों की बढ़ती मुहिम, जैसे सांस्कृतिक परिहासों ने

समाज का ढ़ाँचा बिगाड़ कर रख दिया है। मुझे ये सब आधुनिकता के नाम पर प्रगति से अधिक विनाश के

लक्षण अधिक लगते हैं । आज संयुक्त परिवारों की सुन्दर भारतीय परम्परा टूट रही है एकल परिवार बढ़ रहे हैं । हमारे चाचा – चाची

बुआ, मौसी, मामा – मामी और दादा –दादी नाना – नानी सदृश प्यारे रिश्ते आंटी –अंकल में सिमट रहे हैं।

ऐसे में एक सच्चे साहित्यकारों के समक्ष ढ़ेरों चुनौतियाँ आ खड़ी हुई हैं। वह नए बदलते समाज को ही साहित्य में ज्यों का त्यों अपनाएँ अथवा समाज को पथभ्रष्ट होने से रोकें तथा लोक चेतना और लोक हिताय की बात करें । सामाजिक दायित्व बोध को जगाकर परिष्कार व लोकमंगल की भावना को साहित्यिक सरोकार मानते हुए उत्कृष्ट जीवन मूल्यों की स्थापना के गीत गाएँ ।

आनन्द मिश्र की कविता हिमालय के आँसू –1933 की इन पंक्तियों में आज साहित्यकार की पीड़ा और चेतना दृष्टब्य है–

बुद्ध गाँधी की तपस्या, सूर –तुलसी का तराना,

खाल खिंचवा दी इसे श्तबरेज श ने चाहा जगाना

युद्ध– हिंसा , पाशविकता का, घृणा का क्रम न बदला ।

चढ़ गए सूली सहज ईसा

मगर आदम न बदला ।

साहित्यकार की संवेदनाएँ सामन्यतः उसे उनका कर्तव्य – बोध कराती रहती हैं –

'मैं न सुन पाता, मगर संवेदना सब सुन रही है ,

अश्रु कितने गिन रही है,

दाह कितना, गुन रही है'

सच में साहित्यकार का सर्जनात्मक धर्म केवल समाज का कोरा यथार्थ प्रस्तुत करना ही नहीं अपितु इससे अधिक कुछ और भी है ।

उसे विघटित होते हुए श्रेष्ठ जीवन – मूल्यों के सामाजिक अवमूल्यन को भी रोकना है। उसे आधुनिक – पीढ़ी को सही दिशाबोध कराते हुए मार्गदर्शक की तरह आकाशदीप का कार्य भी करना है । जो कि विपरीत परिस्थितियों के चलते उसकी आज सबसे बड़ी चुनौती है।

इतिहास भी अपनी गवाही के लिए साहित्य की ओर अवश्य देखता रहता है यही कारण है कि अक्सर यह सुना जाता है कि अमुक घटना ,स्थान या व्यक्ति का सम्बन्ध रामायण काल से था या महाभारत युग का है आदि – आदि । समाज की आत्मा का शिल्पी होने के कारण साहित्यकारों पर ये विशेष दायित्व भी आ जाता है कि वे जो रच रहे हैं वह कल इतिहास का भी गवाह हो सकता है ।

निम्न पंक्तियों में भी इस आधुनिक युग के कवि श्री आनंद मिश्र ने आज के समाज की विडम्बना को इस प्रकार व्यक्त किया है –

धर्म ने चाहा भ्रमित नर का अँधेरा पथ बदल दे , कर्म ने चाहा हृदय की राह के कांटे कुचल दे ।

ज्ञान की गंगा बही ,इसके कलुष पर धुल न पाए,

अनसुनी कर बढ़ गया यह , दंभ की ग्रीवा उठाए ।

निर्वसन तन पर वसन, पर मन अभी तक निर्वसन है।

नग्न प्राणों पर न कोई भव्यता का आवरण है ।

तर्क है, श्रद्धा नहीं,

विश्वास का संबल नहीं है ,

आदमी के पास आज पावन प्यार का आँचल नहीं है।

आज भी जब हमारे देश में नारियों की अस्मिता पर संकट उभरता दिखता है कहीं दामिनी तो कहीं किसी नाबालिग से दरिंदगी जैसे कुत्सित काण्ड हो रहे हैं तो –

भारतीय पुरातन परंपरा का उद्घोष करते हुए श्री हरिवंशराय बच्चन जी की भारतीय समाज में नारी सम्मान की परम्परा का आइना प्रस्तुत करती ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

भारत की यह परंपरा है ,

जब नारी के बालों को खींचा जाता है ,,

धर्मराज का सिंहासन डोला करता है ,

क्रुद्ध भीम की भुजा फड़कती ।

गांडीव की प्रत्यंचा तड़पा करती है।

साहित्य की वर्तमान चुनौतियाँ भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में निश्चित ही एक विस्तृत विषय है। विस्तृत इस अर्थ में क्योंकि भारतीय साहित्य से हमारा आशय समस्त हिंदी और यहाँ के अहिंदी भाषी साहित्य से है । यही विविधता में एकता साहित्य के समान ही भारतीय संस्कृति की भी प्रमुख विशेषता है,जो पूरी तरह से एक – दूसरे में माला के विविध मुक्ताओं सदृश आपस ऐसे गुंथे हुए हैं जिन्हें एक दूसरे से अलग कर के देखना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है क्योंकि यह ऐसी भारतीय – जीवन – दृष्टि और विशेषता है जो भारत को विश्वगुरु बनने की दिशा में निरन्तर अग्रसर करती रही है। चुनौतियों से भरे इस भारतीय संस्कृति के विविध आयाम हमारी अमूल्य निधि एवं इस देश की बहुमूल्य थाती है जो यहाँ की सांस्कृतिक विरासत होने के कारण भारतीय साहित्य की विशेषता भी हैं और उसकी जरूरत भी और साहित्यकारों के लिए चुनौतियाँ भी।

हिंदी के पंडित फादर कामिल बुल्के

प्रो० राखी उपाध्याय
हिन्दी विभाग

विदेशी विद्वानों के भारत से प्रभावित होने की लंबी परंपरा रही है, जिनमें कई चीनी, अरबी, फारसी और योरपीय यात्री शामिल हैं। ऐसे ही एक यात्री थे फादर कामिल बुल्के, जो भारत आए तो यहीं के हो गए और हिन्दी के लिए वह काम कर गए, जो शायद कोई हिन्दुस्तानी भी नहीं कर सकता था। रॉची स्थित सेंट जेवियर्स कॉलेज में बुल्के ने वर्षों तक हिंदी का अध्यापन किया.

रामकथा के महत्व को लेकर बुल्के ने वर्षों शोध किया और देश–विदेश में रामकथा के प्रसार पर प्रामाणिक तथ्य जुटाए। उन्होंने पूरी दुनिया में रामायण के करीब 300 रूपों की पहचान की।

रामकथा पर विधिवत पहला शोध कार्य बुल्के ने ही किया है जो अपने आप में हिंदी शोध के क्षेत्र में एक मानक ह।

दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर नित्यानंद तिवारी कहते हैं, फादर कामिल बुल्के और मैंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक डॉक्टर माता प्रसाद गुप्त के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूरा किया था. मैंने उनमें हिंदी के प्रति हिंदी वालों से कहीं ज्यादा गहरा प्रेम देखा. ऐसा प्रेम जो भारतीय जड़ों से जुड़ कर ही संभव है. उन्होंने रामकथा और रामचरित मानस को बौद्धिक जीवन दिया.

बुल्के ने हिंदी प्रेम के कारण अपनी पीएचडी थीसिस हिंदी में ही लिखी

जिस समय वे इलाहाबाद में शोध कर रहे थे उस समय देश में सभी विषयों की थीसिस अंग्रेजी में ही लिखी जाती थी. उन्होंने जब हिंदी में थीसिस लिखने की अनुमति माँगी तो विश्वविद्यालय ने अपने शोध संबंधी नियमों में बदलाव लाकर उनकी बात मान ली। उनकी थीसिस के पांच अध्यायों में वैदिक साहित्य और रामकथा, बाल्मीकी रामायाण, महाभारत की रामकथा, जैन रामकथा तथा बौद्ध रामकथा का विशद अध्ययन मिलता है। उनके अतुलनीय योगदान के लिए सन् 1974 में भारत सरकार ने उन्हे देश के तीसरे सर्वोच्य नागरिक सम्मान पद्मभूषण से सम्मानित किया। उसके बाद देश के अन्य हिस्सों में भी हिंदी में थीसिस लिखी जाने लगी।

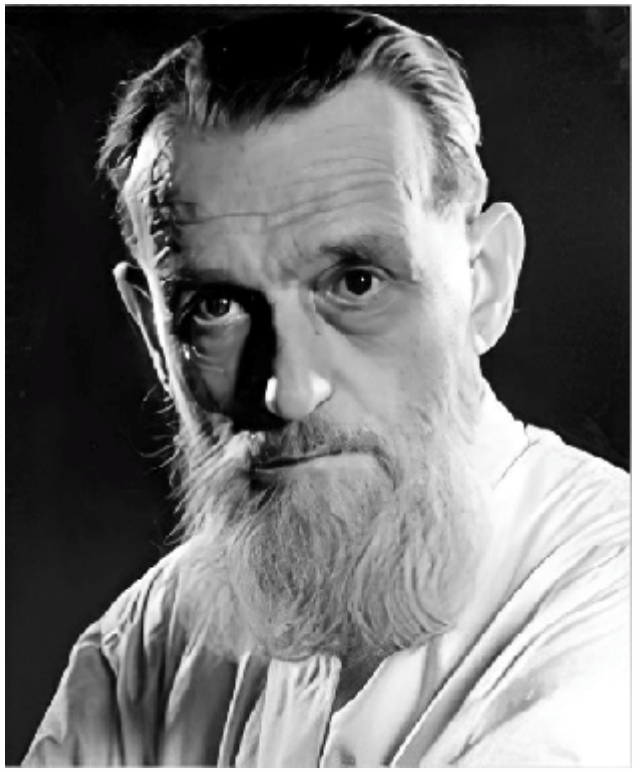

उन्होंने एक जगह लिखा है, मातृभाषा प्रेम का संस्कार लेकर मैं वर्ष 1935 में रॉची पहुँचा और मुझे यह देखकर दुख हुआ कि भारत में न केवल अंग्रेजों का राज है बल्कि अंग्रेजी का भी बोलबाला है। मेरे देश की भाँति उत्तर भारत का मध्यवर्ग भी अपनी मातृभाषा की अपेक्षा एक विदेशी भाषा को अधिक महत्व देता है. इसके प्रतिक्रिया स्वरूप मैंने हिंदी पंडित बनने का निश्चय किया।

विदेशी मूल के ऐसे कई अध्येता हुए हैं जिन्हें इंडोलॉजिस्ट या भारतीय विद्याविद् कहा जाता है. उन्होंने भारतीय भाषा, समाज और संस्कृति को अपने नजरिए से देखा–परखा। लेकिन इन विद्वानों की दृष्टि ज्यादातर औपनिवेशिक रही है और इस वजह से कई बार वे ईमानदारी से भारतीय भाषा, समाज और संस्कृति का अध्ययन करने में चूक गए। बुल्के ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को उसकी संपूर्णता में देखा और विश्लेषित किया।

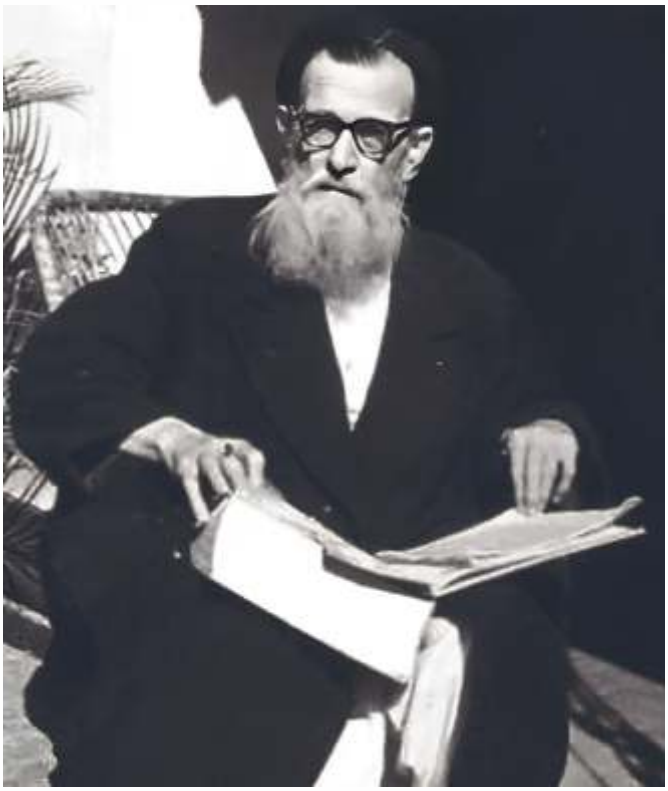

जीवन यात्रा

बेल्जियम के फलैण्डर्स प्रांत के रम्सकपैले नामक गाँव में एक सितंबर 1909 को फादर कामिल बुल्के का जन्म हुआ।

लूवेन विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग कॉलेज में बुल्के ने वर्ष 1928 में दाखिला लिया. इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने संन्यासी बनने का निश्चय किया।

इंजीनियरिंग की दो वर्ष की पढ़ाई पूरी कर वे सन् 1930 में गेन्त के नजदीक ड्रॉदंग्न नगर के जेसुइट धर्मसंघ में दाखिल हो गए। जहाँ दो वर्ष रहने के बाद आगे की धर्म शिक्षा के लिए हॉलैंड के वाल्केनबर्ग के जेसुइट केंद्र में चले गए। यहाँ रहकर उन्होंने लैटिन, जर्मन और ग्रीक आदि भाषाओं के साथ–साथ ईसाई धर्म और दर्शन का गहरा अध्ययन किया।

वाल्केनबर्ग से सन् 1934 में जब बुल्के लूवेन की सेमिनरी में वापस लौटे, तब उन्होंने देश में रहकर धर्म सेवा करने के बजाय भारत जाने की अपनी इच्छा जताई।

सन् 1935 में वे भारत पहुँचे जहाँ पर उनकी जीवनयात्रा का एक नया दौर शुरू हुआ। शुरूआत में उन्होंने दार्जिलिंग के संत जोसेफ कॉलेज और गुमला के एक मिशनरी स्कूल में विज्ञान विषय के शिक्षक के रूप में काम करना शुरू किया।

लेकिन कुछ ही दिनों में उन्होंने महसूस किया कि जैसे बेल्जियम में मातृभाषा फ्लेमिश की उपेक्षा और फ्रेंच का वर्चस्व था, वैसी ही स्थिति भारत में थी जहाँ हिंदी की उपेक्षा और अंग्रेजी का वर्चस्व था।

सन् 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने हिंदी साहित्य में एम.ए. किया और फिर वहीं से 1949 में रामकथा के विकास विषय पर पीएच.डी. की जो बाद में 'रामकथाः उत्पत्ति और विकास' किताब के रूप में चर्चित हुई।

राँची स्थित सेंट जेवियर्स कॉलेज के हिंदी विभाग में वर्ष 1950 में उनकी नियुक्ति विभागाध्यक्ष पद पर हुई। इसी वर्ष उन्होंने भारत की नागरिकता ली।

सन् 1968 में अंग्रेजी हिंदी कोश प्रकाशित हुआ जो अब तक प्रकाशित कोशों में सबसे ज्यादा प्रामाणिक माना जाता है. मॉरिस मेटरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'The Blue Bird' का नील पंछी नाम से बुल्के ने अनुवाद किया। इसके अलावा उन्होंने बाइबिल का हिंदी में अनुवाद किया। उन्होंने लगभग 29 पुस्तकें लिखीं।

भारत सरकार ने सन् 1974 में उन्हें पद्मभूषण दिया.

दिल्ली में 17 अगस्त 1982 को गैंग्रीन की वजह से उनका देहावसान हुआ।

बुल्के आजीवन हिन्दी की सेवा में जुटे रहे। हिन्दी–अँगरेजी शब्दकोश के निर्माण के लिए सामग्री जुटाने में वे सतत प्रयत्नशील रहे। आज उनका शब्दकोष सबसे प्रामाणिक माना जाता है। उन्होंने इसमें 40 हजार शब्द जोड़े और इसे आजीवन अद्यतन भी करते रहे। बाइबल का हिन्दी अनुवाद भी किया।

फादर बुल्के ने कहा है, कि 1938 में मैंने हिन्दी के अध्ययन के दौरान रामचरित मानस तथा विनय पत्रिका का परिशीलन किया। इस अध्ययन के दौरान रामचरित मानस की ये पंक्तियाँ पढ़कर अत्यंत आंनद का अनुभव हुआः

धन्य जनमु जगतीतल तासू।

पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू।

चारि पदारथ करतल ताके।

प्रिय पितु–मातु प्रान सम जाके।

हिंदी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन

डॉ. निशा वालिया

एसो॰ प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

समस्त भारतीय भाषाओं का साहित्य इस बात का साक्षी है, कि ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है इस नाते भारत की आत्मा है। यह आत्मा जब ग्रामीण जीवन के माध्यम से अभिव्यक्त होती है, तो प्रकृति और संस्कृति का संगम दिखायी देता है और यही संगम हिंदी–साहित्य को एक नया रूप देता है। हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन पूरी तरह से प्रवाहमान है। यही कारण है, कि हिंदी के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन की भव्यता है, रम्यता है, आकर्षण है और एक आदिम पवित्रता है। जहाँ गाँव है, वहीं निश्छलता है, वहीं ताजगी है, वहीं सुंदरता है और वहीं पर वास्तविक आनन्द है।

धरती और किसान का अटूट रिश्ता है, वह अपनी जमीन से सबसे ज्यादा लगाव रखता है। वही उसका सब कुछ है। हिंदी कथा–साहित्य में ग्रामीण जीवन की विभिन्न छवियों का प्रामाणिक चित्रण समय–समय पर हुआ है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन को साहित्य में एक विशेष स्थान दिया है, क्योंकि उन्होंने ग्रामीण जीवन को उन्होंने बहुत करीब से देखा था। प्रेमचन्द के बाद ग्रामीण जीवन पर बहुत से लेखकों ने उपन्यास और कहानियाँ लिखीं, जो साहित्य के लिए मील का पत्थर साबित हुईं। साहित्यकारों ने विभिन्न विधाओं में ग्रामीण जीवन का सृजन कर हिंदी साहित्य को एक व्यापक परिवेश प्रदान किया।

हिंदी–साहित्य के क्षेत्र में कहानी और उपन्यास महत्वपूर्ण विधा के अन्तर्गत आते हैं। कहानी तथा उपन्यासों में चित्रित आंचलिकता एक नवीनतम प्रवृत्ति के रूप में अग्रण्य है। ग्रामीण कथा–साहित्य की परम्परा का नवीन रूप में विकास स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हुआ, जिसके कारण अनेक उत्कृष्ट कथा साहित्य की रचना हुई। ग्रामीण प्रवृत्ति की उद्भावना प्रेमचन्द से पूर्व ही हो चुकी थी, परन्तु उसका समुचित विकास स्वतंत्रता के बाद हुआ।

ग्रामीण जीवन से जुड़े कथा–साहित्य के क्षेत्रीय परिवेश में वहाँ के जन–जीवन, आचार–विचार, संस्कृति, भाषा, धर्म और संस्कारों का परिचय दिया जाता है। स्थानीय रंग का समावेश भी कथा साहित्य में समुचित रूप से हुआ है। हिंदी कथा–साहित्य को समृद्ध बनाने में नयी और पुरानी पीढ़ी के साहित्यकारों का योगदान है।

स्वतंत्रता के पश्चात् आंचलिक जीवन जहाँ एक ओर प्राचीन परम्पराओं और रूढ़ियों से प्रतिबद्ध है, वहीं दूसरी ओर अनेक सुधारवादी आन्दोलनों के फलस्वरूप उसमें नवचेतना का अभ्युदय भी हुआ है। हिंदी के कथा साहित्यकारों ने ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पहलू को छुआ है। इन्होंने जहाँ ग्राम्य जीवन की अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास, शोषण, छुआ–छूत जैसी कुरीतियों पर प्रहार किया, वहीं इसके सीधे, सरल एवं निष्कलुश जीवन पर भी लेखनी चलाई। ग्रामीण रीति–रिवाज पर्व, उत्सव एवं त्यौहारों की विविधता, लोकनृत्यों, लोकगीतों की विविधता के साथ–साथ विविध ग्रामीण जीवन मूल्यों का उद्घाटन किया है।

हिंदी कथा–साहित्य में ग्रामीण प्रवृत्ति के पोषण में योग देने वाले लेखकों में नयी और पुरानी दोनों ही पीढ़ियों के कथाकार हैं। इस क्षेत्र में जहाँ एक ओर प्रेमचन्द, फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, देवेन्द्र सत्यार्थी, राजेन्द्र अवस्थी, शैलेश मटियानी, अमृतलालनागर, रांगेयराघव, उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, वृन्दावनलाल वर्मा, हिमांशु जोशी, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, राही मासूम रजा, कृष्णा सोबती, नरेश मेहता, श्रीलाल शुक्ल आदि अनेक कथाकारों ने ग्रामीण अंचलों का बहुपक्षीय चित्रण किया है।

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गोदान' भारतीय ग्रामीण जीवन की त्रासदी का एक जीता जागता उदाहरण है। जिसमें महाजन, सरकारी तंत्र, पण्डे–पुजारी, साहूकार आदि अपने–अपने तरीके से गोदान के नायक होरी का शोषण करते हैं। होरी मजबूर भारतीय किसान का प्रतीक पात्र है। वह किसान कर्ज में जन्म लेता है और कर्ज में ही मर जाता है। प्रेमचन्द के प्रेमाश्रम तथा वृन्दावन लाल वर्मा के मृगनयनी उपन्यास में भी समाज के धनाढ्य वर्ग से त्रस्त किसान की मनोव्यथा को उजागर किया गया है।

'मृगनयनी' उपन्यास में मौसम की मार से त्रस्त किसान

की पीड़ा का एक उदाहरण– "फसल काटकर गड्डों में रखने की जल्दी थी पर अन्न अभी तक कहीं–कहीं हरा था..... हरी घास को कैसे काटूं?"

'नागार्जुन' के उपन्यासों में भी किसानों की समस्या का चित्रण है। लोक–संस्कृति के पुरोधा विवेकी राय ने 'नमामि ग्राम' के माध्यम से बताया है, कि गाँव की भोली–भाली जनता का कोपरेटिव सोसाइटी के लोग किस प्रकार शोषण करते हैं। 'शिवप्रसाद सिंह' के 'शैलूश' तथा फणीश्वरनाथ रेणू के 'मैला आंचल' उपन्यास जिसे ग्रामीण जीवन का महाकाव्य कहा जाता है, में भी ग्राम्य–जीवन के विविध रूपों का कुशल चित्रण हुआ है जैसे– 'भूमि जोतने वाले की नहीं जमींदार की है।' इसी उपन्यास की भूमिका में रेणू ने लिखा है– कि इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाल भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी, मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया।" रेणु की इस रचना के उपरान्त एक विशेश आकर्षण ग्रामीण–जीवन की ओर रचनाकारों में जागा। आँचलिक साहित्यकारों ने विशिष्ट भूखण्डों को अपने अनुभव की गहराई से संजोकर ग्रामीण जीवन के तार–तार को अति सूक्ष्मता से रूपायित करने का प्रयास किया है। गाँव की सीमा से बन्धे पात्र, स्वछन्द प्रकृति की गोद में मिट्टी और धूल से सने अपने ही दुःख दर्द की बहुरँगी धूप–छाँह में पनपते, पोषित होते पाए गए हैं।

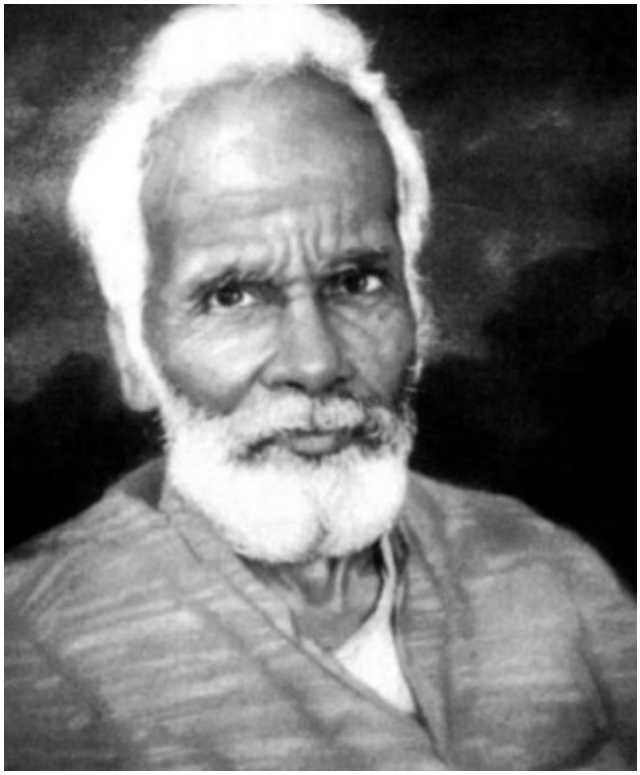

राजकुमार राकेश के 'कंदील', संजीव के 'फाँस' उपन्यास में कर्ज में डूबे किसानों की आत्महत्या का जिक्र है। समाज की यथार्थ दृष्टि के प्रकाश में कथा लेखकों ने सफलता पूर्वक ग्राम्य–समाज की सम्पूर्णता का खाका खींचा है। हिंदी कथा लेखकों ने ग्रामीण कथा–साहित्य को मर्मस्पर्शी भूमिकाओं तक पहुँचाया और वे इस परिवेश को पूर्ण विविधता के साथ चित्रित करने में सक्षम रहे। 'नागार्जुन' ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन में नयी चेतना का अंकन पात्रों के माध्यम से किया। उनके पात्र मूल्यों के लिए संघर्ष करते हैं। 'वरुण के बेटे' में अनपढ़ स्त्रियाँ भी राजनीति को समझती हैं।

ग्रामीणों का जीवन काफी लम्बे समय तक सामन्तशाही के निर्मम शोषण का शिकार रहा है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी पेट की खातिर जीविकोपार्जन हेतु अनैतिक एवं निकृष्ट साधनों को अपनाने के लिए विवश ग्रामीणों के जीवन का यथार्थ रूप कथा–साहित्य में दिखायी देता है।

कथा साहित्यकार यदि ग्राम्य जीवन की सच्चाई का भुक्त भोगी रहा हो, तो ग्राम्य जीवन की खास महक मिट्टी को पहचान सकता है। भोले–भाले ग्रामीण जिनको रहने के लिए घर और पहनने के लिए ढंग के कपड़े नहीं हैं फिर भी सीमित संसाधनों में वे लोग त्यौहार, मनोरंजन, लोकगीतों के माध्यम से सहज ही एक अनोखी अनुभूति प्रदान करते हैं। उनके छोटे से जीवन में व्यापक गहराई है अर्थात् चित्रफलक सीमित है, किन्तु चित्रकारी विशाल एवं चित्र के रंग गहरे हैं।

हिंदी कथा–साहित्य ग्रामीण समाज की समस्याओं की नींव पर खड़ा है। अन्याय, अत्याचार, बाल–विवाह, बहु–विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा–प्रथा, सतीप्रथा एवं विधवाओं की समस्याओं और कुरीतियों ने पात्रों के व्यक्तित्व विकास के सभी मार्गों को अवरुद्ध किया हुआ था। ग्रामीण परिवेश में उच्च वर्ग की विलासिता तथा निम्न वर्ग के जीवन संघर्श को दर्शाती प्रेमचन्द की कहानियाँ निम्न वर्ग की व्यथा का सजीव अंकन करती हैं।

पूस की रात कहानी में हलकू की स्त्री मुन्नी का कथन गरीबी की मार से त्रस्त जीवन को दर्शाता है– "हल्कू ने आकर स्त्री से कहा 'सहना आया है। लाओ जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।"

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिर कर बोली, "तीन ही रुपये हैं, दे दोगे, तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ–पूस की रात घर में कैसे कटेगी?"

'कफन' कहानी के पात्र इतने गरीब हैं, कि माधव की पत्नी

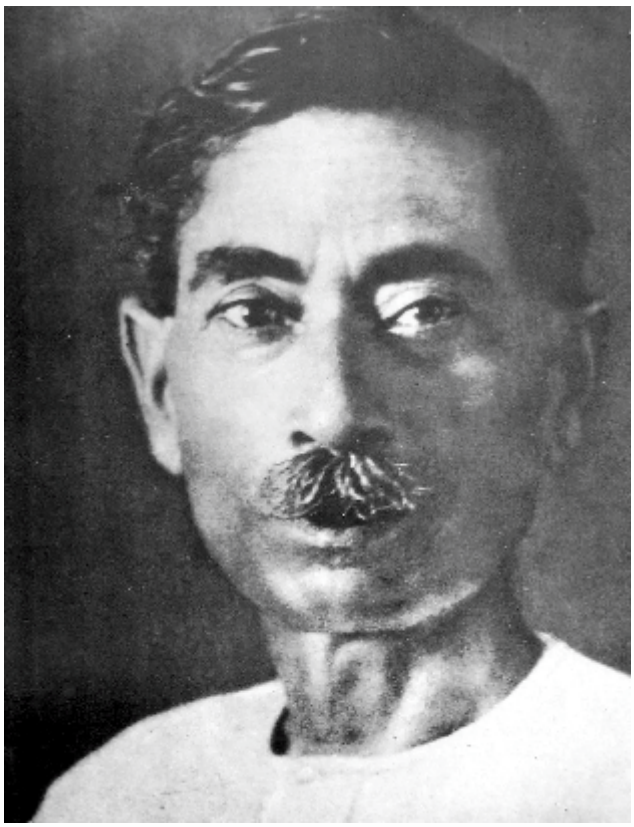

मर जाने पर वह उसके लिए कफन और लकड़ी भी नहीं जुटा पाते। 'ठाकुर का कुआँ', 'घासवाली', 'सवासेर गेहूँ', 'पंच परमेश्वर', 'मंत्र' आदि अनेक कहानियाँ ग्रामीण परिवेश को दर्शाती है। प्रेमचन्द के आगमन के पश्चात् हिंदी कहानी में ग्रामीण परिवेश पर कहानियाँ लिखने की होड़ सी लग गई। फणीश्वरनाथ रेणु की 'तीसरी कसम', 'मारे गए गुलफाम', शैलेश मटियानी की 'दो दुखों का एक सुख', 'प्यास', शिव प्रसाद सिंह की 'अंधेरा हंसता है', 'मुरदा सराय' राजेन्द्र अवस्थी की 'पीढ़ियाँ' मधुकर गंगाधार की 'कलंक', 'ढ़िबरी' तथा हिमांशु जोशी की 'एक वट वृक्ष था', 'परती और परदेश' आदि अनेक कहानियाँ ग्रामीण परिवेश के मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों में अँचलों में प्रयुक्त होने वाले विविध संस्कारों का कुशलता के साथ अंकन किया गया है।

हिमांशु जोशी द्वारा रचित 'तरपन' कहानी रूढ़िग्रस्त तथा अंधविश्वासों में जकड़े भारतीय समाज का पाखंडी धर्माचारियों द्वारा शोशण का भंडा फोड़ करती है। इसमें गरीब मधुलि से पिंडदान, गऊदान तथा दान दक्षिणा की माँग की जाती है। लेखक ने तुलसा की मृत्यु तथा कथित तेरहवीं पर होने वाले पिंडदान को लेकर सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त अंधविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया है।

पंडित ने कहा कि क्रिया–करम की बाती बुझने से बड़ा अपशगुन होता है ..... गरुड़ पुराण के अनुसार कम से कम अपनी पहुँच के हिसाब से पाँच पिंडदान, पाँच गोदान, पाँच ब्राह्मण, पाँच कुवाँरियों के पाँव तो पूजने ही पडेंगे।

गरीबों के वकील के नाम से प्रसिद्ध प्रेमचन्द एवं अन्य आंचलिक कथाकरों का आंचलिक साहित्य ग्राम्य–जीवन का स्पष्ट आईना है। आदर्श एवं यथार्थ का मणिकांचन संयोग जहाँ एक ओर ग्राम्य जीवन में व्याप्त रूढ़ियों, अन्धविश्वासों एवं विकृतियों के प्रति गूढ़ व्यंग्य है वहीं समाज के शोषक एवं पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि महाजनी सभ्यता की दमनकारी नीतियों का सच भी उजागर करता है। नैतिक मानवीय जीवन–मूल्यों के जिस विघटन को कथा साहित्यकारों ने अपनी सहज और सरल भाषा में ग्राम्य–जीवन में दिखाया है वह आज के परिवेश में भी प्रासंगिक है। भले ही आज वर्गीय दिखावे (हिपोक्रेसी) एवं साइबर–क्रान्ति के युग में उसके स्वरूप में परिवर्तन आया किन्तु जिस संतुष्ट सुखी एवं उत्कृष्ट जीवन मूल्यों का स्वप्न इन आंचलिक साहित्यकारों ने देखा था वह अभी भी सच से कोसों दूर है। हिन्दी साहित्य में चित्रित ग्राम्य–जीवन शाश्वत सत्य की संवेदना है, सृष्टि विकास

महिला सशक्तिकरण : महिला शिक्षा के विकास के संदर्भ में

डॉ. सविता राजपूत

एसोसिएट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग

किसी देश की आर्थिक–सामाजिक संरचना में जब विकास रूपी बीज डाले जाते है, प्रगति की सिंचाई की जाती है। बुद्धिरूपी खाद का उपयोग किया जाता है तो संरचना में नयी फसल एक नयी सोच को लेकर आती है, देश के आर्थिक विकास को विभिन्न योजनाओं द्वारा एक आकार दिया गया है। आर्थिक–सामाजिक विकास और प्रगति को लोकतंत्रीय राजनीतिक मॉडल से निर्मित किया गया हैं। किन्तु आज भी हम यह महसूस कर रहे हैं कि आधी जनसंख्या का यदि समुचित विकास नहीं हुआ तो प्रगति नहीं हो सकती है। स्त्री–पुरुष की विकास के कार्यों में सहभागिता ही देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है। इस दृष्टि से स्त्री और पुरुष के मध्य शक्ति का सन्तुलन होना अत्यन्त आवश्यक है, इसके लिए आवश्यक है कि महिला को प्रत्येक दृष्टि से सक्षम, योग्य शिक्षित और प्रगतिशील बनाया जाए।

महिला सशक्तिकरण शब्द से ही यह चिन्तन प्रारम्भ होता है कि क्या वास्तव में महिलाएँ एक निर्बल वर्ग का भाग है जो उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता है प्रकृति ने तो महिलाओं को शारीरिक रूप से पुरुषों की तुलना में अधिक प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करने, सृष्टि की जननी का महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। आज का समाज यह समझ चुका है, कि विकास के कार्य में महिलाओं की सहभागिता के बिना वांछित लाभ प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा बहुअर्थ है, जिसके आयाम भी बहुकोणीय है, किसी एक दृष्टि अथवा उसके व्यक्तितत्व के किसी एक पहलू से शक्तिशाली नहीं बनाया जा सकता है। उसका सर्वांगीण विकास करके ही देश की मुख्य धारा से उसे जोड़ा जा सकता है, उसे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाकर उसमें आत्मविश्वास जगाया जा सकता है, क्योंकि शताब्दियों से वह पुरुषों की मुखापेक्षी रही है, आश्रित रही है, उसने गुलामी जैसा जीवन व्यतीत किया है।

प्रतापमल देवपुरा के अनुसार – "महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है सामाजिक सुविधाओं की उपलब्धता, राजनीतिक और आर्थिक नीति निर्धारण में भागीदारी, समान कार्य के लिए समान वेतन, कानून के तहत सुरक्षा एवं प्रजनन अधिकारों आदि को इसमें सम्मिलित किया जाता है, महिलाओं को जागरूक करके उन्हें आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य सम्बन्धित साधनों को उपलब्ध कराया जाए ताकि उनके लिए सामाजिक का लक्ष्य हासिल हो सके। सशक्तिकरण का अभिप्राय सत्ता प्रति में स्त्रियों की साझेदारी से भी है, क्योंकि निर्णय लेने की क्षमता सशक्तिकरण का बड़ा मानक है।" महिला सशक्तिकरण के बहुत से बहुकोणीय आयाम है, वे सभी महिला को सक्षम, योग्य, बुद्धिमान, संघर्षशील और एक पूर्ण महिला गढ़ने में सहायक है।

वैदिक काल से ही शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने की क्षमता रखता है। इसीलिए विद्वानों ने शिक्षा को 'तीसरा नेत्र

(ज्ञानम् तृतीयम् नेत्रम्) भी कहा है। स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम ने 1948 में एक शिक्षा सम्मेलन में कहा था "बुनियादी शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है क्योंकि इसके बिना वह बतौर नागरिक जिम्मेदारियाँ बखूबी नहीं निभा सकता।"

व्यक्ति, समाज और देश के विकास में भी शिक्षा की भूमिका को अंगीकार करते हुए शिक्षा को विकास की सीढ़ी, परिवर्तन को माध्यम और आशा के अग्रदूत के रूप में परिभाषित किया है। राष्ट्र प्रणेता स्वामी विवेकानन्द ने

भारत में महिला साक्षरता

वर्ष	कुल साक्षरता	महिला साक्षरता दर (प्रतिशत में)
1951	18.30	8.86
1961	28.31	15.34
1971	34.45	21.97
1981	43.56	29.75
1991	52.21	39.29
2001	64.83	53.67
2011	74.04	65.46

शिक्षा के महत्व की प्रतिपादित करते हुए कहा है कि– "राष्ट्रीय शिक्षा की अवहेलना पाप है, साक्षरता से महिलाओं और कमजोर वर्गों को समर्थ बनाया जा सकता है।"

व्यक्ति, समाज और देश के विकास में भी शिक्षा की भूमिका को अंगीकार करते हुए शिक्षा को विकास की सीढ़ी, परिवर्तन का माध्यम और आशा के अग्रदूत के रूप में परिभाषित किया है। राष्ट्र प्रणेता स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि "राष्ट्रीय शिक्षा की अवहेलना पाप है, साक्षरता से महिलाओं और कमजोर वर्गों को समर्थ बनाया जा सकता है।"

महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक सशक्तिकरण का प्रथक और मूलभूत साधन शिक्षा है। अब यह तथ्य माना जाने लगा है कि शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका को दर्ज करा सकती है। शिक्षित महिला से सम्पूर्ण परिवार, समाज देश व विश्व को लाभ मिलता है। महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का बुद्धि का विकास कर उसे आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक कार्यों को सम्पन्न करने के योग्य बनाती है। शिक्षा के आधार पर व्यक्ति में दक्षता, कौशल, ज्ञान एवं क्षमताओं का विकास होता है। शिक्षित महिला न केवल स्वयं लाभान्वित होती हैं, बल्कि उससे भावी पीढ़ी भी लाभान्वित होती हैं। शिक्षा किसी भी प्रकार के कौशल की प्राप्ति एवं विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास के लिए पूर्णतया आवश्यक है। महिलाओं की शिक्षा से उनका शेषण रोकने में सहायता मिलेगी। निर्णय लेने की क्षमता सशक्तिकरण का एक बड़ा मानक है। शिक्षा का निर्णय लेने की क्षमता से घनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध है। शिक्षा द्वारा महिलाओं के विभिन्न विषयों जैसे धर्म, समाज, आर्थिक एवं स्वास्थ्य पक्ष एवं राजनीति में आने वाले परिवर्तनों के बारे में जानकारियाँ प्राप्त करना आवश्यक है। न्यून शैक्षिक स्तर का सीधा प्रभाव इस मानव पूँजी अर्थात् महिला का निम्न स्तरीय विकास, कुशलता का निम्न स्तर तथा श्रम बाजार में न्यून भागीदारी। महिलाओं की वास्तविक स्थिति से व्यक्ति परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय देश की अधिकांश महिलाएँ निरक्षर, रूढ़िवादी व परम्परागत बन्धनों में बंधी हुयी थी। शिक्षा के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में पूर्ण साक्षरता की लक्ष्य प्राप्ति हेतु संविधान लागू होने के दस वर्षों के दौरान चौदह वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया गया। स्वतन्त्रता के उपरान्त वर्ष 1951 में महिलाओं की साक्षरता दर 8.86 प्रतिशत थी, जो सन् 2011 में बढ़कर 65.46 प्रतिशत हो गयी।

इस समय भी लगभग 45.84 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर नहीं हैं, स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों में भी बालिकाओं की संख्या अधिक है। प्राइमरी स्तर पर लगभग 42 प्रतिशत बालिकाऐं स्कूल छोड़ देती है। बिहार, उत्तर प्रदेश व राजस्थान ऐसे राज्य हैं, जहाँ एक ओर लड़कियों की नामांकन दर कम है, वहीं दूसरी ओर उनके स्कूल छोड़ने की दर भी अधिक हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् महिला सशक्तिकरण और शिक्षा पर गंभीरता से विचार किया गया अनेक कार्यक्रम उनको केन्द्र में रखकर बनाए गये, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके, देश की आधारभूत संरचना में स्त्री शिक्षा की अपेक्षा करके संतुलित विकास और प्रगति सम्भव नहीं। बालिकाओं की शिक्षा के लिए अनेक तरह के स्कूल कॉलेज और महिला विश्वविद्यालय भी स्थापित किए गये। शिक्षा बहुआयामी बन गयी, प्रारंभिक शिक्षा के लेकर उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा प्रौद्योगिकी शिक्षा के लेकर विज्ञान और व्यावसायिक शिक्षा तक लड़कियाँ आज शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। अनु. 15 (3 व 4) में महिलाओं, बच्चों

और सामाजिक तथा शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के लिए शिक्षा की समुचित की गयी है।

सर्वशिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय बालिका शिक्षा कार्यक्रम शिक्षा कार्यक्रमों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए हैं। महिला शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है हाशिये पर खड़ी महिलाओं में आत्मविश्वास उत्पन्न करना उन्हें स्वावलंबी बनाना एवं देश के विकास की मुख्यधारा से जोड़ना। शिक्षा बालिकाओं व महिलाओं के समाजीकरण का प्रथम कदम है। महिला सामाख्या कार्यक्रम (महिलाओं की समानता हेतु शिक्षा) ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली विशेषकर सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण हेतु एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इस शैक्षिक कार्यक्रम के द्वारा महिलाओं में जो आर्थिक सामाजिक रूप से पिछड़ी हुयी एवं उपेक्षित हैं। सुविधाओं से वंचित है। इन्हें सक्षम और योग्य बनाना है जिससे वे शोषण, दमन उत्पीड़न आदि के विरोध में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा सके। महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को महसूस कर सके।

महिला सशक्तिकरण को शक्ति प्रदान करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि युवा महिला एवं बालिकाओं को सामाजिक सुरक्षा व शिक्षा प्रदान की जाए। उन्हें स्वावलंबी बनाया जाए। वर्तमान समय में भी स्त्री–पुरुष के मध्य जो अनंतकाल से चली आ रही असमानताएं हैं, पूर्वाग्रह है रूढियाँ व परम्पराएँ हैं उन्हें समाप्त करने के लिए शिक्षा का विकास, प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा ने ही महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत की है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भारत में महिला साक्षरता और सशक्तिकरण, प्रतिभा चतुर्वेदी
2. आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण, वी. ए. सिंह व जनमेजय सिंह
3. भारतीय महिलाएँ एक सामाजिक अध्ययन, डॉ. विशांत सिंह
4. महिला सशक्तिकरण विविध आयाम, अनीता मोदी
5. भारतीय नारी : वर्तमान समस्यायें और भावी समाधान, डॉ. आर. पी. तिवारी एवं डॉ. डी. पी. शुक्ला
6. महिला अधिकार और कानून, अविनाश माहेश्वरी
7. विकसित समाज में महिला सशक्तिकरण की यर्थाथता, प्रतिभा चतुर्वेदी

सुविचार

"दुनिया हर किसी के जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।"

–महात्मा गाँधी

वायु प्रदूषण

प्रो० सविता भट्ट
संस्कृत विभाग

वायु प्राण तत्त्व है। बिना वायु (आक्सीजन) के प्राणि जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है परन्तु आज भूमि और जल की भाँति हमारा वायु मंडल की प्रदूषित हो रहा है। जिससे अनेक जटिल समस्याएं पैदा हो रही हैं। वायु मण्डल में प्रदूषण तब होता है। जब ज्वालामुखी विस्फोट, आंधी, तूफान, पहाडों का टूटना, समुद्री नमक का किनारों पर जमा होना आदि कई घटनाएं मानव जीवन को आन्दोलित करने लगती है। कृत्रिम या मानव प्रदत्त प्रदूषण वह है जिसे मानव स्वयं अपने लिए तैयार कर रहा है। इसमें धूल, धुँआ और जहरीली गैसें प्रमुख हैं। धुएं के अनेक कारण हैं, जैसे– ईंधन, जंगलो में आग लगना, निरूपयोगी सामग्री व कूड़े कचरे को जलाने से तथा पेट्रोल तथा डीजल से चलने वाले वाहन आदि तथा कल कारखानों से निकलता हुआ धुँआ वातावरण को दूषित कर रहा है। प्रदूषित वायु रक्त में आक्सीजन की कमी पैदा कर देती है।

घरों में प्रयुक्त होने वाले ईंधन के धुएँ की शिकार मुख्य रूप से गृहणियां होती हैं। इससे नाक बहना, खाँसी, आँखों से पानी निकलना, आँखों में सूजन एवं फेंफडों की बीमारियाँ हो जाती हैं। स्कूटर, मोटर साइकिल, तिपहिए, मोटर–कार, जीप, ट्रक, वायुयान, युद्धक विमान, औद्योगिक संस्थान की चिमनियों से निकलने वाले धुएँ से वायुमण्डल में कार्बन–मोनो ऑक्साइड, हाइड्रो, कार्बन–डाइ–ऑक्साइड, सल्फर–डाइ–ऑक्साइड, नाइट्रोजन, आक्साइड आदि जहरीली गैसें वायुमण्डल में मिल जाती हैं। इनमें भी कार्बन–मोनो–ऑक्साइड सबसे विषैली हैं जो प्राणघातक भी हो सकती हैं। सांस लेने के साथ ही प्रदूषित वायु में मिली ये तमाम गैसें, धुआँ तथा धूल फेफड़ों में चली जाती हैं जो शरीर को नुकसान पहुँचाती हैं।

आदिकाल से ही वायु को जीवन के लिए आवश्यक परम तत्त्व माना गया। ऋग्वेद में इसे बात भी कहा गया है। पुरूष सूक्त में विश्व पुरूष के प्राण से वायु की उत्पत्ति बताई गई है–

प्राणाद्वायुरजायता

वैदिक मन्त्र बताते हैं कि वायु जीवन देता है रोग का शमन करता है, सच्चा साथी है, मित्र के समान है।

वात आ वातु भेषजं, शंभु मयोशु नो हृदे
प्र ण आयुंषि तारिषत्।।

(ऋग्वेद 10.186.1)

अर्थात् सर्व व्यापक वायु हमारे हृदय के लिए रोग का शमन करने वाला, सुख का, कल्याण का भावक औषध को प्राप्त कराए तथा हमारी आयु के प्रक्रमों को बढ़ाता रहे।

वास्तव में वैदिक युग वह युग है जब वायु मंडल अपने शुद्धतम रूप में विद्यमान था। आधुनिक काल जैसी समस्याएं वहाँ न थी। न तो जनसंख्या वृद्धि थी, न औद्योगिक विकास के कारण होने वाली समस्याएं और न पेड़, पौधों और वनों का अभाव था। वैदिक ऋषि की यही कामना थी कि वायु सबका जीवन रक्षक बना रहे।

आदि पुरूष के प्राणों से उत्पन्न वायु स्वयं प्राण स्वरूप है–

वातो ह प्राण उच्यते
(अथर्ववेद XI 4–15)

वातावरण और वायुमण्डल की शुद्ध को इंगित करते हुए यजुर्वेद का ऋषि भी कहता है–

अन्तरिक्षं मा हिंसी

अर्थात् अन्तरिक्ष की हिंसा मत करो। ऋग्वेद के 1/24/8 और 10 मन्त्रों में वायु की विशेषताएं प्रतिपादित की गई हैं– राजा वरूण अर्थात् वायु ने सूर्य को आकाश में घूमने का मार्ग दिया है, उसी ने पाँव रहित सूर्य को आकाश में चलने को पैर दिया है अर्थात् वही उसकी किरणों को विस्तारित करता है और वही उसे अपनी कक्षा

में घूमने का मार्ग देता है–

ऊरूं हि राजा वरूणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ
अपदे पादा प्रतिधातवष्करूतापवक्ता हृदया विधश्चित्।

(ऋग्वेद 1–24–8)

ये नक्षत्र जो आकाश में स्थित हैं वे रात्रि में तो दिखते हैं, परन्तु दिन में कहाँ चले जाते हैं कि नहीं दिखाई पड़ते। वायु का यह दृढ नियम है कि उसके द्वारा चन्द्रमा निकलता हुआ रात्रि में दिखाई देता है–

अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्तं ददृशे कुहचिद्दिवेयुः
अदब्धानि वरूणस्य व्रतानि विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति।

(ऋग्वेद 1–24–8)

उक्त मन्त्रों के आधार पर सिद्ध है कि वायु नक्षत्रों आदि की गति में भी सहायक है। शतपथ ब्राह्मण में तो वायु की परिभाषा देते हुए कहा गया कि जो पवित्र करे वही वायु है।

अयं वै वायुः याष्यं पवते

(शतपथ ब्राह्मण 2,6,3,7)

अर्थात् वायु प्राण रूप से हमें पवित्र करे।

आदि कवि वाल्मीकि ने भी वायु को श्रेष्ठ तत्त्व स्वीकार किया है। वायु जीवन है, जगत है और जगत का वास्तविक सुख है–

वायुः प्राणः सुखं वायुर्वायुः सर्वमिदंजगत्।
वामुना सम्परित्यक्तं न सुखं विन्दते जगत्।।

(वा0 रामा0 7–35–61, 62)

वाल्मीकि ने वायु को इसी चिन्तन के आधार पर सर्वात्मक कहा है–

वायुः सर्वात्मकः। (वा0 रा0 1–33–2)

वायु पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व का प्रमुख आधार है। सामान्य अस्तित्व के लिए मनुष्य को दिन में 12 घन मीटर वायु की आवश्यकता होती है।

अशरीरः शरीरेषु वायुश्चरित पालयन्
शरीरं हि बिना वायुं समतां याति दारूभिः

(वा0 रा0 7,35,60,61)

अर्थात्, वही वायुदेव स्वयं शरीर न धारण करके समस्त शरीरों में उनकी रक्षा करते हुए विचरते हैं। वायु के बिना यह शरीर सूखे काठ के समान हो जाता है।

वाल्मीकि ने वायु को जगत की आयु कहा है–

वायुना जगदायुषा। (वा0 रा0 7,35,62)

वायु तत्त्व के ऊपर नाना चिन्तन किया गया है।

वायु का प्रदूषण अत्यन्त घातक होता है। यह भौतिक सुख का मानव को दिया गया परोक्ष उपहार है। हमारे सुख की चाहत ने ही इस प्रदूषण को बढ़ाया है।

सर्वेषां प्राण वायुं हि दूषयति विषोपमम्।
शिशुनां बालवृल्दानां परोक्षे प्राण घातकम।।

अर्थात् विषतुल्य प्रदूषण वायु को प्रदूषित कर रहा है। यह छोटे–छोटे बच्चों, बालकों और बूढ़ों के लिए प्राणघातक है। इसका सरल उपाय प्रतिपादित करते हुए विद्वान कवि कहते हैं–

वृक्षाणां रोपणे वृद्धौ वर्धने रक्षणे सदा
भाव्यं हि तत्परैः सर्ववृक्षाः सर्वोपकारकाः

अर्थात् वायु प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए पेड़ों को लगाए, बढ़ाए उन्हें पुष्ट करे तथा उनकी रक्षा करे क्योंकि वृक्ष सभी प्राणियों के लिए उपकारक है।

सर्वत्र विशुद्ध वायु बहे, जल की एक–एक बूँद निर्मल हो, पृथ्वी पेड़ों से पट जाए और प्रसन्न होकर सभी प्राणियों को धारण करने में सक्षम हो जाए।

वायु प्रदूषणंञ्छीघं संगच्छेत् प्रलयं मुखम्

अर्थात वायु प्रदूषण शीघ्र ही काल के गाल में समा जाए। और भी यन्त्र–संयन्त्र इस पृथ्वी पर विशुद्ध वायु हो छोड़ें। वाहन विशुद्ध वायु को वहन करें। अग्नि विषाक्त धुआँ से युक्त न होने पाए। प्राणियों का जीवन, पावन और प्रसन्नता से भर जाए।

त्यजतु यन्त्र! वरं भुवि मारूतं
वहतु वाहन! पवन मारूतम्।
न खलु धूमलवह्निविषोतम्ः
भवतु जीवन पावन मोदकम्।

वास्तव में वायु प्रदूषण एक गहरा संकट है। इसे दूर करने के सभी कारगर उपाय किए जाने चाहिए। कारखानों में ऊँची चिमनियों का निर्माण, औद्योगिक प्रतिष्ठानों से प्रदूषण नियन्त्रण उपकरणों का प्रयोग, वनों का सर्वाधिक विकास आदि उपाय इसे काफी हद तक नियन्त्रित कर सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर हमारे जैसे विकासशील देशों को इस समस्या को सही रूप में समझना होगा तथा बचाव के प्रयास करने होंगे।

पेड़ पौधों में प्रदूषण दूर करने की सबसे अधिक क्षमता है। वनस्पति विज्ञान विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के सम्मानीय विद्वान श्री एस. वी. अग्रवाल तथा सुश्री मधुलिका अग्रवाल ने – "प्रदूषण और परिवेशोद्धारः नए आयाम" नामक लेख में पौधों का वर्णन लिए उपयोगी है। उन्होंने कहा है– "अधिक प्रदूषित क्षेत्रों में ज्यादा प्रतिरोध क्षमता युक्त वनस्पति की जातियां जैसे प्रोसोपिस, केसिया, नीरियम तथा बोगेनवेलिया उपयोगी साबित हुई हैं। मध्यम प्रदूषित क्षेत्रों के लिए गोलाकार आच्छादन वाली व सम शाखादार जातियां सुबबूल, नीम केकर, कदम

व महुआ लगा जाने चाहिए। यूकिलिप्टस, शीशम, अशोक, जंगल जलेबी अर्जुन जो लम्बे व कम शाखादार वृक्ष है कम प्रदूषित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।"

वैदिक संस्कृति में 'यज्ञ' भी वायु प्रदूषण को रोकने वाला असरदार उपाय है। यज्ञ से सुगन्धि व्यापति है। यज्ञ में प्रधान हव्य द्रव्य घृत है। बल और तेज वर्धक घृत रोग प्रतिरोधक तो है। साथ ही इसका धूम्र जब वायु मण्डल में व्याप्त होता है तो वातावरण भी शुद्ध होता है। "यज्ञ परम्परा मात्र कुछ यौगिक पदार्थों का जलाना मात्र नहीं है। ये हवा में घुले सल्फर डाइ आक्साइड तथा नाइट्रोजन आक्साइड को नष्ट करते हैं। साथ ही जल के विषाणुओं को भी नष्ट करते हैं।"

हरिद्वार के शोध संस्थान ब्रह्मवर्चस द्वारा की गई शोध के आँकडें, जिन्हें बाद में इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी मुम्बई के डॉ0 रजनी आर0 जोशी ने भी जांचा है, हवन के या अग्निहोत्र के प्रभाव को व्यक्त करते हैं–

उनके शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि अग्निहोत्र से पूर्व या पश्चात में किए गए वायु परीक्षणों से पता चलता है कि अग्निहोत्र के पश्चात हवा में सल्फर डाइआक्साइड में 256 मि0 ग्रा0 की कमी पाई गई तथा नाइट्रोस आक्साइड में 0. 14 मि.ग्रा. की कमी देखी गई। डा0 जोशी ने अग्निहोत्र के प्रभाव का अध्ययन करने के पश्चात कहा है–

"What a Yajna, does is combust fumigating odoriferous substance, fats, carbohydrates, proteins and medicinal hereby together to give off a purifying gas".

अर्थात् यज्ञ सुगन्धित पदार्थों को, घी, कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन तथा औषधीय पौधों को जला कर एक पवित्र गैस उत्पन्न कर देता है, जिससे वातावरण सुवासित एवं पवित्र हो जाता है।

"वायु का महत्त्व इसी से आंका जा सकता है कि चौबीस घंटे में एक स्वस्थ पुरूष 40,000 घन इन्च आक्सीजन खींचता है और उतना ही कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस निकलता है। 40,000 घन इन्च कार्बन का भार 18,600 ग्रेन के लगभग होता है। आक्सीजन के अनुपात से कार्बन का भार 11.5 औंस होता है। अतः रक्त से प्रतिदिन 24 घंटे में 11.5 औंस कार्बन निकलता है।"

फेफडों में 60000 ऐसे थैले हैं जिसमें श्वास की हवा जाती है। प्रत्येक थैले में अनेक वायु कोष है। इनकी संख्या 75 करोड़ आँकी गई है। एक युवक के फेफड़ें में प्रयत्न करके 5 से 7 पाइनट तक वायु भरी जा सकती है। साधारणः हम लोग प्रति श्वास में केवल एक पाइनट वायु खींचते हैं। मनुष्य लगभग एक मिनट में लगभग 18 बार सांस लेता है। सो 24 घंटे में हम 3000 गैलन वायु खींचते हैं।

वायु की महत्ता प्रतिपादित करते हुए अथर्ववेद 4/13/3 में भी यही भाव दुहराया गया है।

आ बात वाहिभेषजं विवात वाहि यद रपः
त्वं हि विश्व भेषज देवानों दूत ईयसे।।

अर्थात् हे वायु स्वास्थ्य को बहाकर ला। जो रपः दोष है उन्हें निकाल दे। तू सर्व रोग नाशक है तथा देवों का दूत होकर फिरता रहता है।

वायु प्रदूषण के समस्त कारणों पर नियन्त्रण करना अति आवश्यक हैं इसके लिए मानव को सूझ बूझ से काम लेना होगा। जैसा सी0एन0जी और एल0पी0जी0 से वाहनों के चलाने की क्रिया शुरू की जाए। उद्योगों से पैदा होने वाले प्रदूषण को रोका जाए। कारखाने, घनी आबादी से दूर बनाएं जाएं ताकि उनसे निकलने वाला धुआँ मानव जीवन को प्रभावित न करे। सौर ऊर्जा को विद्युत निर्माण में प्रयोग किया जाए। दो मुख्य उपाय– जनसंख्या नियन्त्रण और वृक्षारोपण के माध्यम से वायु प्रदूषण कम किया जा सकता है। वैदिक ऋषि कहता है–

"बहुप्रज्ञः निऋतिमाविवेश"

अर्थात् बहुत प्रजा (संतान) वाला व्यक्ति विपत्ति में पड़ता है।

अतः वायु प्रदूषण के निवारण को उच्च प्राथमिकता देना ही हमारा अभीष्ट होना चाहिए तभी समाज का कल्याण होगा और स्वस्थ मानव शान्ति का अनुभव करेगा।

सुविचार

"खुशी तब मिलेगी जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सामंजस्य में हों।"

–महात्मा गाँधी

परिश्रम और परिणाम

डॉ. उर्मिला रावत
समाज शास्त्र विभाग

गीता में कहा गया है, कि मनुष्य को कर्म करते रहना चाहिये फल देना ईश्वर के हाथ में है। परन्तु मनुष्य कर्म करता है, और फल की इच्छा की कामना तुरन्त चाहता है और सफलता के लिए हर कोई व्यक्ति अपने स्तर पर परिश्रम करता है परन्तु कभी–कभी भरसक प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिलती। ऐसे में मन में हताशा का भाव आना स्वभाविक है। और उससे भी ज्यादा निराशा का भाव तब आने लगता है जब अपने संगी साथी सफल होते जाते हैं। और हम वहीं रह जाते हैं। कबीर दास जी इस बारे में बताते हैं, कि 'माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आये फल होय' इसका अर्थ यह है कि घड़े को चाहे कितने ही पानी से सींचते रहो पर फल तो ऋतु आने पर ही लगेगा। क्योंकि प्रकृति ने हर पौधे पर फल–फूल आने की एक निश्चित अवधि निर्धारित कर रखी है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि हमारे कर्मों का फल कब उदित होगा यह अज्ञात रहता है।

वर्तमान में हम जो कार्य करते हैं, उसके फल हमें निश्चित तौर पर भविष्य में प्राप्त होंगे, आज हमने जो भी परीक्षा दी है तय है कि उसका फल हमें अगली सुबह प्राप्त नहीं होगा इसी नियम के अर्न्तगत आज मिलने वाले फल आपके पूर्व कर्मों का परिणाम है किसी को नौका की पाल खुली मिल जाती है और किसी को नौका बनानी पड़ती है तब वह दूसरी छोर पहुँचता है। इसके लिए भाग्य व ईश्वर पर दोषारोपण ठीक नहीं है। प्रकृति कभी भी पक्षपात नहीं करती वह सभी को अवसर देती है इसलिए कर्म सही होना चाहिये।

यदि परिश्रम करने पर भी अपेक्षित परिणाम नहीं मिला पा रहे हैं तो टटोलना चाहिये कि हम सही दिशा में प्रयास कर रहे हैं या नहीं? अलग–अलग प्रयास करते रहना चाहिये कब और कहाँ भाग्योदय हो जाय यह कोई नहीं जानता और ऐसे करने से संचित भाग्य का सहयोग भी मिल सकता है। धैर्य धारण करना चाहिये तथा प्रयास करते रहना चाहिये, परिश्रम कभी भी बेकार नहीं जाता है ईश्वर परिश्रम का फल अवश्य देता है परन्तु परिश्रम सार्थक व सही दिशा में होना चाहिये।

आचरण

डॉ. संदीप कुमार
बी.एड. विभाग

मनुष्य में पशुओं की तुलना में बुद्धि और विवेक के अधिक विकसित व जागरूक पाये जाने का आधार ही कदाचित मनुष्य को बाकी जीवों की तुलना में ज्यादा उन्नत बनाता है। अपने इसी उन्नत मस्तिष्क,बुद्धि तथा विवेक के विकास के कारण मनुष्य की सभ्यता का प्रारम्भ हुआ,उसने अपना जीवन जीने के लिए कुछ पैमाने/मानक तय किये, सामाजिक तौर–तरीके व नियम बनाये और उन्हें अपनाया।

आत्मनियंत्रित रहते हुए समय,परिस्थिति और हालातों के अनुसार आचरण करना मनुष्य को गरिमा प्रदान करता है। पशु ऐसा नहीं कर पाते।वे किसी नियम को नहीं मानते।वे अपनी मूल प्रवृत्तियों पर नियंत्रण नहीं रख पाते। वे कहीं भी हिंसक हो जाते हैं।कहीं भी मलमूत्र त्याग देते हैं और कहीं भी मैथुन करने लगते हैं।

अगर मनुष्य भी अपनी मूल प्रवृत्तियों पर से नियंत्रण खोकर आजादी एवं मर्जी के नाम पर कुछ भी करने लगे तो मानव और पशु में कोई अंतर नहीं रह जाता।आजादी,मर्जी और व्यवहार भी असीमित नहीं होते। ये केवल वहीं तक सार्थक हैं जहाँ तक ये दूसरे व्यक्तियों की आजादी में विघ्न उत्पन्न न करे और दूसरे व्यक्तियों को असहज न करे।इनका उपयोग भी समय,परिस्थिति और हालातों के अनुकूल ही शोभनीय होता है।निजता और सार्वजनिकता के पैमाने भी अलग–अलग होते हैं।

संविधान बहुत कुछ निर्धारित करता है लेकिन काफी कुछ एक सभ्य और नैतिक इंसान होने के नाते आपको स्वयं निर्धारित करना पड़ता है।बहुत–सी चीजें संविधान से इतर मनुष्य की नैतिकता के दायरे में आती हैं। उदाहरण के लिए, किसी की मौत पर या अर्थी के सामने आप खूब जोर से हँस सकते हैं।संविधान में इसकी मनाही नहीं है मगर यहाँ आपकी मनुष्यता तय करेगी कि आपको क्या करना है!सांत्वनाध्शोक प्रकट करना है अथवा गला फाड़कर हँसना है!

अगर हमने संसार के सबसे अधिक विकसित मस्तिष्क वाले प्राणी के रूप में अपना मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांवेगिक और नैतिक विकास किया है तो हमारा आचरण भी वैसा ही होना चाहिए जो मनुष्य–जाति को ओर अधिक गरिमा प्रदान करे,न कि ऐसा जो कि हमारे एक सभ्य, नैतिक, परिपक्व, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक होने पर प्रश्न चिन्ह लगाए।

रेणु जी की कहानियों में आंचलिक संवेदना

गीता

शोधार्थी, हिंदी विभाग

फणीश्वर नाथ रेणु ने हिंदी साहित्य में एक नई धारा प्रवाह का सृजन किया है। जिसे 'आंचलिक साहित्य' कहा जाता है। वे कहानीकार एवं उपन्यासकार के रूप में काफी प्रसिद्ध हुये क्योंकि उनकी रचना का केन्द्र बिन्दु 'ग्रामीण' अंचल रहा है। हिंदी कहानियों में प्रेमचन्द के बाद गांव की कहानियों रेणु जी ने ही लिखी। उनके पात्र आज भी हमें ग्रामीण क्षेत्र में खींच ले जाते हैं जो भारतीय गांवों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से हिंदी साहित्य जगत को ग्रामीण अंचल के राग–रंग से परिचित कराया और लोकजीवन की विभिन्न घटनाओं को साहित्य के मंच पर जीवंत कर दिया। रेणु जी की रसप्रिया, पंचलाइट, ठेस, तीर्थोदक, भीत्ति चित्र की मयूरी आदि कहानियों में ग्रामीण अंचल का जीवंत लोक जीवन देखने को मिलता है। साहित्य को एक नया आयाम देने वाले रेणु जी कहानी पिरोने और संवेदनाओं को जीवंत तथा सरस बनाने की कला कूट–कूट कर भरी हुयी थी।

बीज शब्द – अंचल, संवेदना, लोक जीवन, देहात, लोकगीत, तालीम, पेट्रोमैक्स, संवेदना, भीत्ति।

मूल आलेख – रेणु जी का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के पूर्णिया जिले के 'आरोही हिंगना' गांव में हुआ था, रेणु जी का जन्म तब हुआ जब देश पराधीन था तथा उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अनेक राजनीतिक आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभायी उन्होंने 1936 के आस–पास कहानी लेखन कार्य शुरु किया, उन्होंने हिंदी में आंचलिक कथा की नींव रखी थी तथा देहात की धूल को साहित्य के चंदन से सुगन्धित कर दिया। गांव तो हमेशा से ही साहित्य सृजन का मुख्य बिंदु रहा है, लेखक से पहले भी ग्रामीण जीवन पर साहित्यिक रचनाएं होती रही हैं, लेकिन रेणु ने ग्रामीण अंचल उसकी सम्पूर्ण विसंगतियों और विशेषताओं के साथ प्रतिबिंबित किया। उन्होंने जिस क्षेत्र में गांव को उठाया उस पूरे क्षेत्र को अपनी लेखनी से पाठकों के समक्ष जीवंत कर दिया।

रेणु बिहार के ग्रामीण अंचल से थे इसलिए उनके कथा साहित्य में ग्रामीण आंचलिकता विशेश रूप से झलकी है। इनकी लेखनी की मुख्य विशेषता– "मानवीय संवेदनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति' रही है।

रेणु जी के साहित्य में प्रत्येक पात्र पूर्णतः मनुष्य है और ऐसा मनुष्य जो कभी परिस्थिति में मजबूत तो कभी लाचार दिखायी देता है। इनके समयकाल वातावरण में अधिकांश साहित्यकारों ने स्त्री को हमेशा देवी की तरह पूज्य बनाया है लेकिन रेणु जी ने इससे हटकर एक ही मनुष्य को अलग–अलग परिस्थिति में बिल्कुल अलग कर दिया है। रेणु जी का कालखण्ड 'नई कहानी' के दौर का है। इस दौर की कहानियों ने परम्परागत रूढ़ि तत्वों को नकार कर अतीत से हटकर वर्तमान पर आधारित कहानियाँ बुनी।

या यूं कहें कि नई कहानी के व्यायख्याकारों ने स्वयं के निजी अनुभव और प्रमाणिकता पर बल दिया। इस दौर में नगर कथा ग्राम कथा के साथ–साथ आंचलिक कहानियों का अस्तित्व सामने आया और रेणु की कहानियों आंचलिक क्षेत्र में 'मील का पत्थर' साबित हुयी। अंचल

विशेष, आधुनिकता, रोमांटिक यथार्थ का अद्भुत संयोग इनकी कहानियों की विशेषता है। ग्रामीण परिवेष का ऐसा सरोकार, सचल चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद साहित्य में अनेक परिवर्तन हुये तथा उस समय देश की स्थिति सामान्य नहीं थी। विभाजन, शरणार्थियों का प्रवाह पुर्नवास की समस्या, सार्वजनिक क्षेत्र में मूल्य विघटन आदि समस्याऐं थी तथा रेणु जी सजग कथाकार थे उन्होंने अंचल विशेष के जनजीवन को पूरी गहराई क्या स्त्री, क्या अमीर, क्या गरीब उन्होंने सभी के भावों को खुलकर अभिव्यक्त किया। गांव के साथ रेणु जी की इतनी आत्मीयता थी कि उनका अलग सा कोई अस्तित्व नहीं था।

क्योंकि प्रेमचन्द के बाद ग्रामीण छवियां रेणु जी के ही कथा साहित्य में मिलती है। लोकजीवन की विविध छवियां उन्होंने इस तरह आत्मसात की कि साहित्य में लोक जीवन के राग–अनुराग, उनकी संवेदना, उनका परिवेश जीवंत साक्षात् खड़ा हो गया।

'रसप्रिया' उनकी ऐसी कहानी है, जिसमें 'पंचकौड़ी', 'मिरदंगिया' के बहाने ग्रामीण जीवन में चल रहे अनवरत रोमांस और उसकी परिणति को पूरे सौष्ठव के साथ प्रकट करते हैं। यह एक अद्भुत प्रेमकथा है, यह कहानी ग्रामीण समाज से ओझल होती लोक संस्कृति का चित्रण है। यह लोक रस से सरोबार कहानी है जिसमें लोक परम्पराओं और लोकगाथाओं का सरोकार देखने को मिलता है। लोक संस्कृति की संवेदनशीलता ही रेणु जी को अन्य कथाकारों की पृष्ठभूमि से अलग करती है। कहानी में प्रेम समर्पण और त्याग के साथ–साथ लोककलाओं, लोकगीतों और लोकगाथाओं की विलुप्ति की परम्परा कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है।

कहानी का अंश–

"एक युग से वह गले में मृदंग लटकाकर भीख मांग रहा है– ध–तिंग, धा तिंग! ..... धिरिनाति, धिरिनागि, धिरिनागिधिनता!.....

न–व वृंदा–वन न–व न–व तरु–ग–न, न–व–नव विकसित फूल।"

रेणु के अपने गांव के लोगों के साथ जैसे संबंध रहे, वहां की गीत–संगीत नृत्य तथा खेत खलिहानों के वह जिस तरह रमें, वह बहुत अनूठा था यथा–

धूम में पड़े कीमती पत्थर को देखकर

जौहरी का आंखों में एक नई झलक

झिलमिला गइ– अपरूप–रूप!

चरवाहा मोहना छौड़ा को देखते ही

पंच कौड़ी मिरदंगिया के मुंह से निकल पड़ा अपरूप–रूप!

रेणु जी को लोगों की पहचान थी, इस कहानी के तीन प्रमुख पात्र हैं– मिरदंगिया पंचकौड़ी, रसप्रिया गाने वाला चरवाहा लड़का मोहना, भाव रूप से सशक्त रमपतिया, जो कि मोहना की मां है, ज्येष्ठ के महीने में धूप भरे दिन में मिरदंगिया मोहना के लिए अपरिचित नहीं है क्योंकि आठ साल तक रमपतिया के पिता से पचकौड़ी ने संगीत की तालीम ली थी और अपनी जाति को छुपाकर रमपतिया से प्रेम किया। लेकिन जब उसके पिता ने अपनी कन्या का विवाह पंचकौड़ी से करना चाहा तो वह वहाँ से भाग गया तथा अपने ग्रामीण अंचल में ही जीवन–यापन करने के लिए विद्यापति की पदावली, लोकगीतों को गाकर भीख मांगकर अपना पेट भरता था। मिथिला लोक साहित्य, लोकराग और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने वाला कलाकार है। लेकिन ग्रामीण कलाकरों को कोई सम्मान नहीं देता मिरदंगिया से भी लोग संगीत सीखते और बाद में उसे गाली देते। जब मिरंदगिया को मोहना मिलता है, तो वह बड़ा प्रसन्न होता है क्योंकि वह भी रसप्रिया पदावली गाता था। लेकिन मोहना उसे पहचान लेता है कि यह वही है, जिसने उसकी मां को धोखा दिया वह भी मिरदंगिया की टेढ़ी उंगली का मजाक उड़ाता है, लेकिन मिरदंगिया मोहना से प्रेम करता है वह उसकी बीमारी के लिए उसे वैद्य के पास भी ले जाता है। जेठ की दोपहरी में जब मोहना की मां रमपतिया से मिरदंगिया का सामना होता है, तो उसे कुछ वर्शों पुरानी यादें याद आ जाती हैं।

लेकिन रमपतिया अपने बेटे से कहती है कि इस रसप्रिया के साथ कभी संगत न करना। यह कहानी निश्च्छल प्रेम की कहानी है।

'पंचलाइट' कहानी में गांव के पंचायती राज को दर्शाया गया है कि किस प्रकार गांव अलग–अलग टोली में बंटा हुआ है, कहानी के माध्यम से ग्रामवासियों का मनोस्थिति की वास्तविक झांकी प्रस्तुत की है कि किस प्रकार गांव में जुर्माने के पैसे से गांव के लिए कुछ खरीदा जाता था महंतो टोली के लोग पैसों से 'पेट्रोमैक्स' खरीद लाते हैं, सारा गांव उसे देखने के लिए इक्ट्ठा हो जाता है।

कहानी का अंश – "टोली भर के लोग जमा हो गए। औरत–मर्द, बूढ़े बच्चे सभी काम–काज छोड़कर दौड़ आए', चल रे चल! अपना पंचलौट आया है पंचलैट।"

एक ऐसा ग्रामीण अंचल जिसमें जाति के आधार पर आठ पंचायते हैं। और सभी पंचायतों का जरूरी सामान के लिए स्वयं की व्यवस्था है। यह रेणु जी की उस समय की कहानी जब गांवों में लाइट की व्यवस्था भी नहीं थी। गांव में 'पेट्रोमैक्स' के अलावा कोई बात ही नहीं हो रही थी। गांव के लोग अपने सरदार को श्रद्धा भाव से देख रहे थे। लेकिन 'पंचलैट' लाने से पहले उसे जलाने की बात किसी ने सोची ही नहीं शाम को जब किसी को भी लाइट जलानी नहीं आती थी तो सभी लोग मायूस हो गये 'मुनरी' जानती थी कि 'गोधन' को पंचलैट जलाना आता है, वह वही युवक है जिसे गांव की किसी लड़की पर डोरे डालने के लिए फिल्मी गानों को गाने की कोशिश करने से उसे पंचायत ने जुर्माना लगा दिया तथा जुर्माना न देने पर उसे गांव से अलग कर दिया। गाँव की इज्जत बचाने के लिए उसे बुलाया गया तब उस युवक को बुलाकर पंचलैट जगायी जाती है। पंचलैट को जलता देख सभी गांव वाले प्रसन्न हो जाते हैं। सारे लोग 'गोधन' को माफ कर देते हैं। इस कहानी का अंत अत्यन्त सुखदायक है, क्योंकि रेणु जी ने कहानी के माध्यम से बताया है कि गांव के भोले–भाले लोग अपनी टोली की 'इज्जत' बचाने के लिए उस युवक को अपना लेते है जिसे उन्होंने खुद कुछ वर्शों पूर्व स्वयं ही गांव से अलग किया था। गांव के लोगों की कड़वाहट और मैल उसे प्रति खत्म हो जाती है गांव में किस प्रकार मुसीबत के समय एक–दूसरे के साथ देते हैं।

ग्रामीण जीवन पर ही आधारित रेणुजी की कहानी 'भीत्ति चित्र की मयूरी' में उनकी सोच बहुत दूरदर्शी थी। वह पहले ही आँक गये थे कि भारतीय लोक संस्कृति देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रसिद्ध हैं। देश में दिल्ली जैसे महानगर में भी लोक संस्कृति को उत्पादन, रोजगार के रूप में बाजार में उतारने के लिए उत्सुक है। तथा दूसरी ओर वह यह भी देख रहे थे कि किस प्रकार ग्रामीण लोक कथाओं में इतिहास, परम्परा और संस्कृति को अक्षुण्ण रखने वाली गांव की स्त्रियां आज भी अपनी भीत्तियों पर चित्रकारी करती हैं तथा वह बाजार की मानसिकता से पूरी अनभिज्ञ है उन्हें न तो अपने हुनर की पहचान है और न ही उसके आर्थिक मूल्य से परिचित थी। इस कहानी की दो मुख्य पात्र 'फुलपत्ती' और उसकी माँ है। वह मधुबनी चित्रकारी में सिद्धहस्त कलाकार थी लेकिन उनकी जर्जर आर्थिक स्थिति को दिखाकर, लेखक ने यह संकेत किया है, भारतीय ग्रामीण क्षेत्र कलाओं के लिए तो काफी प्रसिद्ध है। लेकिन उनकी कलाकारी का महत्व सिर्फ गांव में विवाह, तीज, त्योहार, महोत्सव तक ही सीमित रहता है तथा इस कहानी में सनातन प्रसाद जैसे पूंजीपति की मानसिकता के कारण कलाकार एवं कला दोनों को दोहन करने की मानसिकता प्रकट होती है। जब फुलपत्ती को दिल्ली में उसकी चित्रकारी प्रदर्शन तथा उसे वहीं काम करने के लिये बुलाया जाता तो वह अपन गांव नहीं छोड़ना चाहती।

पर रेणु जी सौन्दर्यबोध भीत्ति की 'डीह' छोड़कर महानगरों में पलायन स्वीकार नहीं करते तथा मोहनपुर गांव में ही आर्ट सेंटर खुल जाता है। रेणु जी स्त्री शक्ति को भली–भाँति समझते थे। फुलपत्ती की दृढ़ता और संकल्पशक्ति जिस वैचारिक सौन्दर्य की सृष्टि करती है उसमें तर्क, विवेक, गहन गंभीरता है। वह भले ही गांव की अनपढ़ स्त्री है लेकिन वह सनातन प्रसाद जैसे पूंजीवादी व्यक्तियों को भी उत्तर देना जानती है।

क्योंकि भारतीय ग्रामीण समाज का अपना अलग सौन्दर्य है जिसमें सादगी और सरलता तो है लेकिन साथ ही साथ किसी बाहरी व्यक्ति गांव में आगमन होने से जो उत्सुकता, कौतुहलता का वातावरण निर्मित होता है वह अविश्वसनीय है तथा गांव में परिवर्तित स्थिति का सौन्दर्य सामने आता है तथा 'मधुबनी आर्ट सेन्टर' खुलने से गांव के कई लोगों को रोजगार प्राप्त है तथा फुलपत्ती और उसकी माँ भी शहर में पलायन नहीं करती। चित्रकारी आर्ट संटर में लोगों को सिखाती हैं। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य विलुप्त हो रही ग्रामीण चित्रकारी को बढ़ावा देना, चित्रकारों की आर्थिक स्थिति में सुधार करना तथा शहरी पलायनवाद को रोकना है।

'ठेस' कहानी गांव में रहने वाले 'सिरचन' जो जाति से कारीगर था वह बांस की तीलियों से बहुत ही शानदार कलाकारी करता था। लोग दूर–दूर से इस कलाकारी को बनवाने उसके यहाँ आते हैं, 'सिरचन' था जो जाति का कारीगर। लेकिन वह अपनी कलाकारी के बदले दूसरों से आदर सम्मान चाहता था। बांस के 'चिक और शीतलपाटी' बनाने के लिए दूसरों से अपनी बड़ी खातिरदारी करवाता। कहानी में 'मंझली भाभी' के कुछ सुनाने पर वह अपना

कार्य बीच में ही छोड़ के चला आता है, क्योंकि उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है। लेखक ने कहानी के माध्यम से यह बताना चाहा कि व्यक्ति कोई छोटा काम करे या बड़ा लेकिन जब उसका कोई अनादर करे तो उसे बहुत आहत पहुँचती है। सिरचन भी था तो कारीगर। लेकिन उसके अन्दर भी स्वाभिमान था जिसे मंझली भाभी के द्वारा आहत किया गया।

यथा – 'मैं कहती हूँ अपने बाप–दादे की डीह छोड़कर कहीं नहीं जा सकती मैं। मेरी लहारा ही निकलेगी इस घर से ....हाँ।

'तीर्थोदक' एक ऐसे ग्रामीण परिवेश की कहानी, जिसमें स्त्री जीवन के यथार्थ जीवन स्वरूप को प्रकट किया है। इस कहानी एक ग्रामीण महिला तीर्थ जाने की इच्छा प्रकट करती है तो उसके घर वाले तथा स्वयं उसके पति बजरंगी चौधरी भी उसकी इच्छा को दबाते हें। जब यात्रा जाने की हट भर लेती है तो उसके पति उन्हें कई बातें याद दिलाते हैं, तब वह कहती हैं कि–

"राखिये अपना पुरुरव वचन खूब सुन चुकी हूँ पुरुबन वचन।

चालीस साल से और किसका बचन सुन रही हूँ।"

घर वाले बहुत रोकने को प्रयास करते हैं लेकिन यह सकती नहीं है और जैसे ही रेलवे स्टेशन उनकी ट्रेन आगे बढ़ने लगती है। वैसी ही वह स्त्री अपनी गांव की हर वस्तु को निहारने लगती। कहानी के माध्यम से एक तरफ तीर्थयात्रा की लालसा और दूसरी तरफ ग्रामीण समाज में अलग होती दुरावस्था को बहुत खूब रेखांकित किया।

रेणु जी ने अपनी कहानियाँ में ग्रामीण वासियों की ऐसी समस्याएं रखी हैं, जिसे आज भी हर कोई पढ़ने के लिए उत्सुक हैं। उन्हें ग्रामीण जीवन का ऐसा बोध था शायद ही किसी को हो। गाँव के प्रति उनके भीतर गहन अनुभूति थी जो कहानियों के माध्यम से प्रकट हुयी। उन्होंने ग्रामवासियों की सादगी का ऐसा सजीव चित्रण किया है जो प्रेमचन्द के बाद रेणु जी ने ही किया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रेणु जी की कहानियां बनी–बनाई परिपाटी से हटकर कुछ जीवन के नाए यथार्थ अपनी दृष्टि से उठा रहे थे। उनकी हर कहानी में जीवन का एक नया संदर्भ था। उनकी कथा रचना ग्रामीण आंचलिकता में बसती है क्योंकि वह ग्रामीण व्यक्तियों के हर पक्ष को चाहे वह गरीब किसान हो या मजदूर हो या कोई राजनीतिक भूमिका निभाने वाला व्यक्ति वह उसके हाव–भाव या उसके अन्दर की भावनाएं तथा उनका दृश्टिकोण सबको बड़ी यथार्थता से व्यक्त करते थे। रेणु अपनी कहानियों में टूटते जीवन मूल्यों या विघटनों के क्षणों को मूर्त रूप में आंकते हैं। रेणु जी ने ग्रामीण अंचल में लोक संस्कृति और लोक साहित्य को बढ़ावा दिया तथा अपनी कहानियों के माध्यम से गांव में बची हुयी लोक संस्कृति और लोक कलाकारों को महत्व देकर तथा शहरी पालयनवाद को रोकने की कोशिश की है। उनकी कहानियों की आंचलिकता में गहन संवेदना है, जो आज भी हमें ग्रामीण क्षेत्रों से जोड़े रखती हैं। प्रेमचन्द के बाद रेणु जी ग्रामीण कथाओं के लिए प्रसिद्ध हैं।

संदर्भ सूची

1. सं. यायावर भारत, फणीश्वर नाथ रेण की श्रेश्ठ कहानियां, तीसरी आवृत्ति (2004), प्रकाशक– नेशनल ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, पृ.सं.– 15
2. सं0 कमलेश्वर, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियां, दूसरा संस्करण (2005) प्रकाशक– नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, पृ.सं.– 105
3. 'रेणु' फणीश्वरनाथ, ठुमरी, नौवां संस्करण (2009), प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन, पृ.सं.– 28
4. 'रेणु' फणीश्वरनाथ, रेणु रचनावली संस्करण (2012), राजकमल प्रकाशन, पृ.सं.– 175
5. वही, पृ.सं.– 193
6. वही, पृ.सं.– 212
7. सं0 खैरनार, कुमार, डॉ. अभय, हिंदी कहानी के नए प्रतिमान, प्रथम संस्करण (2017), हिंदी साहित्य निकेतन, पृ.सं.– 81
8. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, दसवां संस्करण (2020) प्रकाशक– सुमित प्रकाशन, पृ.सं.– 89
9. वही, पृ.सं.– 90
10. https://eclass.kcpgclko.in
11. https://gadyakosh.orga
12. https://hindithequnit.com
13. https://blogs.navbharattimes.indiatimes.com
14. https://egyankosh.ac.in
15. samlochan.blogspot.com

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एवं भारत की G-20 की अध्यक्षता

आशुतोष चोपड़ियाल
एम.ए. राजनीति विज्ञान

G-20 समूहः

G-20 समूह विश्व बैंक एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के प्रतिनिधि, यूरोपियन यूनियन एवं 19 देशों का एक अनौपचारिक समूह है।

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G-20) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत ने 1 दिसम्बर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक G-20 की अध्यक्षता करेगा।

G-20 समूह दुनिया की प्रमुख उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों को एक साथ लाता है। यह वैश्विक व्यापार का 75%, वैश्विक निवेश का 85%, वैश्विक सकल घरेलु उत्पाद का 85% तथा विश्व की दो–तिहाई जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

G-20 लोगो– भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों– केसरिया, सफेद और हरे एवं नीले रंग से प्रेरित है। इसमें भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को पृथ्वी ग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया है जो चुनौतियों के बीच विकास को दर्शाता है। पृथ्वी जीवन के प्रति भारत के पर्यावरण अनुकूल दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसका प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य है। G-20 लोगो के नीचे देवनागरी लिपि में ''भारत'' लिखा है।

भारत का G-20 अध्यक्षता का विषय– **''वासुधैव कुटुम्बकम'' या ''एक पृथ्वी–एक कुटुंब–एक भविष्य''**– महा उपनिषद के प्रचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। अनिवार्य रूप से, यह विषय सभी प्रकार के जीवन मूल्यों–मानव, पशु, पौधे और सूक्ष्मजीव–और पृथ्वी एवं व्यापक ब्रह्माण्ड में उनके परस्पर संबंधों की पुष्टि करता है। G-20 समूह के पास स्थायी सचिवालय या मुख्यालय नहीं होता।

प्रत्येक G-20 देश का प्रतिनिधित्व उसके शेरपा करते हैं; जो अपने–अपने देश के नेता की ओर से योजना, मार्गदर्शन, क्रियान्वयन आदि करते हैं। वर्तमान वाणिज्य और उद्योग मंत्री भारत के वर्तमान ''G-20 शेरपा'' हैं।

G-20 की स्थापना

G-20 का गठन सन् 1999 में 1990 के दशक के उत्तरार्ध के वित्तीय संकट की पृष्ठभूमि में किया गया था, जिसने विशेष रूप से पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया को प्रभावित किया था। इसका उद्देश्य मध्यम आय वाले देशों को शामिल करके वैश्विक वित्तीय स्थिरता को सुरक्षित करना है।

सदस्य

G-20 समूह में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, कनाडा, चीन, यूरोपियन यूनियन, फ्राँस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, कोरिया गणराज्य, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।

स्पेन को स्थायी अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है।

अतिथि देश

भारत ने G-20 अध्यक्ष के तौर पर बांग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात को अतिथि देशों के रूप में आमंत्रित करेगा।

अध्यक्षता

G-20 की अध्यक्षता प्रत्येक वर्ष सदस्यों के बीच चक्रीय रूप से प्रदान की जाती है और अध्यक्ष पद धारण करने वाला देश पिछले और अगले अध्यक्षता धारक के साथ मिलकर G-20 एजेंडा की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिये 'ट्रोइका' बनाता है।

भारत 1 दिसम्बर 2022 से 30 नवम्बर 2023 तक अध्यक्ष के रूप में इस अंतर्राष्ट्रीय निकाय का संचालन करेगा, जिसमें यहाँ आयोजित होने वाले G-20 शिखर सम्मेलन का नेतृत्व किया जायेगा।

G-20 की कार्य प्रणाली

G-20 का कोई स्थायी मुख्यालय नहीं है और सचिवालय प्रत्येक वर्ष समूह की मेज़बानी करने वाले या अध्यक्षता करने वाले देशों के बीच रोटेट होता है।

सदस्यों को पांच समूहों में बांटा गया है (रूस, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की के साथ भारत समूह–2 में है)।

G-20 एजेंडा जो अभी भी वित्त मंत्रियों और केंद्रीय राज्यपालों के मार्गदर्शन पर बहुत अधिक निर्भर करता है, को 'शेरपा' की निर्धारित प्रणाली द्वारा अंतिम रूप दिया जाता है, जो G-20 नेताओं के विशेष दूत होते हैं।

G-20 की एक अन्य विशेषता 'ट्रोइका' बैठकें हैं, जिसमें पिछले वर्ष, वर्तमान वर्ष और अगले वर्ष में G-20 की अध्यक्षता करने वाले देश शामिल हैं।

G-20 की अध्यक्षता के लिये भारत की तैयारी

1. भारत ने G-20 के संस्थापक सदस्य के रूप में दुनिया भर में सबसे कमज़ोर लोगों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाने के लिये इस मंच का उपयोग किया है। लेकिन बेरोजगारी दर में वृद्धि और गरीबी के कारण इसके लिये प्रभावी ढंग से नेतृत्व करना मुश्किल है।

2. समवर्ती रूप से भारत–फ्राँस के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की सफलता लेकर भारत की नेतृत्वकारी भूमिका अक्षय ऊर्जा में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने की दिशा में संसाधन जुटाने में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में विश्व स्तर पर प्रशंसित है।

3. इसके अलावा 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के दृष्टिकोण से वैश्विक प्रतिमान में 'नए भारत– के लिये एक परिवर्तनकारी भूमिका की उम्मीद है, जो कोविड–19 महामारी के बाद विश्व अर्थव्यवस्था और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के एक महत्वपूर्ण व विश्वसनीय स्तंभ के रूप में उभरेगा।

4. आपदारोधी अवसंरचना के लिये गठबंधन का भारत का प्रयास, जिसमें अन्य देशों के अलावा G-20 देशों में से भी नौ देश शामिल हैं, वैश्विक विकास प्रक्रिया में नेतृत्व के नए आयाम प्रदान करता है।

5. भारत ने G-20 देशों के बीच ऐसा एकमात्र देश होने का मजबूत उदाहरण स्थापित किया है, जो 2 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य के मामले में वर्ष 2015 के पेरिस समझौते में अपने वादे को पूरा करने की दिशा में अन्य G-20 देशों की तुलना में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।

G-20 सम्मेलन में भारत की प्राथमिकताएं

1. भ्रष्टाचार से लड़ने के लिये कर अपवंचन की जाँच करना।
2. आतंकवादी वित्तपोषण को अवरुद्ध करना।
3. प्रेषण की लागत में कटौती।
4. प्रमुख दवाओं तक बाजार की पहुँच।
5. विश्व व्यापार संगठन में सुधार।
6. पेरिस समझौता को पूर्णतः लागू करना।

भारत के लिए चुनौतियाँ

1. भारत के लिए G-20 की चुनौतियाँ ध्रुवीकृत अंतर्राष्ट्रीय सदस्य देशों के साथ कुशलतापूर्वक अगले नवंबर में आयोजित होने वाले शिखर सम्मेलन की मेज़बानी के साथ उत्पन्न होंगी।
2. नीति आयोग के पूर्व CEO अमिताभ कांत को G-20 शेलपा और पूर्व विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला को G-20 का समन्वयक नियुक्त किया गया है।
3. सरकार ने देश के विभिन्न हिस्सों में 100 तैयारी बैठकें आयोजित करने की योजना बनाई है, जिसके कारण भारत के पड़ोसी देशों के साथ संघर्ष को देखते हुए जम्मू–कश्मीर में G-20 शिखर सम्मेलन या मंत्रिस्तरीय बैठक आयोजित की जाएगी या नहीं, इस पर विवाद उत्पन्न हो गया।
4. हालाँकि भारत के लिये बड़ी चुनौतियाँ G-20 के विचार की रक्षा के संदर्भ में इंडोनेशिया की सहायता और भू–राजनीतिक मतभेद के कारण इसे विखंडन से बचाने की होंगी, जहाँ एक ही कमरे में एक साथ बैठकर नेता एक–दूसरे की बात सुनने से कतराते हैं।

आगे की राह

1. G-20 देशों का पहला काम बढ़ती महंगाई पर नियंत्रण करना है।
2. साथ ही सरकारों को कर्ज़ के स्तर को अनिवार्य रूप से बढ़ाए बिना कमज़ोर लोगों की मदद करने के तरीके खोजने होंगे। इससे संबंधित एक प्रमुख चिंता यह सुनिश्चित करना होगा कि बाहरी ज़ोखिमों की सावधानीपूर्वक निगरानी की जाए।
3. एक मज़बूत टिकाऊ, संतुलित और समावेशी रिकवरी के लिए G-20 द्वरा संयुक्त कार्रवाई की आवश्यकता है और बदले में इस तरह की संयुक्त कार्रवाई के लिये यूक्रेन में शांति स्थापित करने के साथ–साथ ''आने वाले समय में उसके विखंडन को रोकने में मदद'' की भी आवश्यकता है।
4. व्यापार को लेकर G-20 नेताओं को ''अधिक खुले, स्थिर और पारदर्शी नियम–आधारित व्यापार'' पर ज़ोर देने की आवश्यकता है जो वस्तु की वैश्विक कमी को दूर करने में मदद करेगा।
5. वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के लचीलेपन को मज़बूत करने से भविष्य के झटकों से बचने में मदद मिलेगी।
6. G-20 को अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे–IMF, OECD, WHO, विश्व बैंक और WTO के साथ साझेदारी को

मज़बूत करना चाहिये और उन्हें प्रगति की निगरानी का कार्य सौंपना चाहिये।

7. सभी सदस्य देशों के लाभ के लिये व्यक्तिगत हितों पर वैश्विक सहयोग को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

8. यूक्रेन–रूस संघर्ष और रूस एवं पश्चिम के बीच मतभेदों जैसे मुद्दों को हल करने के लिये संवाद तथा कूटनीति का उपयोग किया जाना चाहिये।

आज के इस आधुनिकता के युग में हम देखते हैं कि पलायन एक प्रमुख समस्या बन गई है। लोगों का गाँवों से शहरों की ओर पलायन निरन्तर बढ़ता जा रहा है। उत्तराखण्ड में पलायन बढ़ती तीव्रता के साथ पहाड़ों मे वीरानता भी उसी अनुपात से बढ़ रही है। आज जिन पहाड़ों में वीरानता छायी हुई है, कभी उन गाँवों के गलियारों में चहल–पहल होती थी। गाँव के समाणा बूढ़ों की उम्मीदें, गाँव के यारों–दगड़ियों का वो प्यार और लोगों का आपसी प्यार, प्रेम और भाईचारा था। किन्तु उत्तराखण्ड में लोग लगातार आर्थिक और शैक्षिक कारणों से निरंतर प्रवास कर रहे हैं।

मुख्यतः समस्या तो यह है कि जब पहाड़ के लोग शिक्षा पाने, नौकरी पाने के लिए शहरों की ओर आते हैं तो नौकरी– पेशा मिलने के बाद पुनः पहाड़ नहीं जाते। यही कारण है कि अधिकांशत लोग, जिनकी आर्थिक स्थिति थोड़ा ठीक हो जाती है, वो शहरों में बस जाते हैं। परिणाम आज यह है कि उत्तराखण्ड के गाँव के गाँव वीरान हो गये हैं। आज उन घरों में बस वो पत्थर बचे हैं, जो हमारे बुजुर्गों ने अपनी मेहनत ने संजोये हैं किंतु हमने उन घर, उन गाँवों, उस पहाड़ से अपने को दर–किनार कर लिया। हमें यह बात समझनी चाहिये कि वो गुण, वो संस्कार, वो परम्परा, शुद्ध हवा–पानी, सबकुछ तो हमें पहाड़ ने ही दिया है तो आज क्यों हम पहाड़ को भूल चुके हैं?

छाँव की तलाश थी और दोपहर को चुन बैठे
कुछ लोग गाँवों को छोड़ शहर को चुन बैठे
अब कैद हैं घर की चार दिवारियों के भीतर
हवा छोड़कर आये थे अब जहर को चुन बैठे
अब बातें होती हैं उस गाँव की खुशबू की
महकती माटी को छोड़ पत्थर को चुन बैठे
अब शामिल हैं शहरों की भागदौड़ में रोज
ऊँचे ख्वाबों में जमीं छोड़ अम्बर को चुन बैठे
अब न इधर की ठौर ना उधर का ठिकाना है
समुंदर के राही किनारे छोड़ लहर चुन बैठे।

गाँवों को छोड़कर शहरों की आबो–हवा ने शायद हमें घेर लिया है। शहरों में रहो लेकिन अपने गावों के उन टूटे मकानों के उन टूटे जोड़ों को जोड़ना भी जरूरी है, क्योंकि पहचान उन पहाडों से ही है। उन पहाड़ों की गोद में सब पले–बढ़े हैं। बात सिर्फ शहरों में चले जाने की नहीं, बात अपनी मातृभाषा की भी है। आज लोग अपनी बोली–भाषा को बोलना नहीं चाहते, जिस बोली ने हमें माँ –पापा, बोड़ा–बोड़ी बोलना सिखाया। हम अपने बच्चों को शहरों में अच्छी शिक्षा तो दे पाते हैं किंतु उन्हें मातृभाषा का ज्ञान नहीं देते। वो बच्चे, जो गढ़वाली हैं, कुमाउंनी हैं, उनको ये भाषाएं बोलनी नहीं आती। कसूर उन बच्चों का नहीं, हमारा है क्योंकि हमने कभी उन्हें उनकी मातृभाषा से परिचय नहीं कराया। हम उस मातृभाषा का घर व्यवहार में प्रयोग नहीं करते हैं। परिणाम आज यह है कि हमारी ये बोलियां भाषा नहीं बन पायीं।

जनाब, ये वहीं पहाड़ जो आपको पुकार रहे हैं, ये वही पहाड़ हैं, जब कोरोना वायरस महामारी से सारे विश्व में हाहाकार मचा हुआ था, जब शहरों में खाने को खाना और पीने को पानी में भी बीमारी नजर आ रही थी, उस समय लोगों ने पहाड़ के 'छुइयाँ' (भूमिगत पानी) को अवश्य याद किया होगा, जो स्वयं में शुद्ध और साफ था। इस महामारी से लोगों को बात तो समझ आयी है कि जो खूबसूरत पहाड़ की महत्ता और अपने गाँव स्वतंत्रता से बढ़कर कुछ नहीं है।

पलायन रोकथाम के प्रयास

सरकार निरंतर प्रयास कर रही है कि शहरों के केन्द्रीकरण और गाँवों के पलायन को रोका जाये। निरन्तर नई–नई सरकारी योजनाओं के माध्यम से गाँवों में सुविधाएं दी जा रही हैं ताकि पहाड़ का पानी और पहाड़ी जवानी पहाड़ के काम आ सके किंतु ये योजनायें कितनी धरातल पर उतर पाती हैं, उसका आंकलन पलायन की दर से देखा जा सकता है। सिर्फ सरकारी प्रयास काफी नहीं हैं। इसमें पहाड़ों में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भूमिका अदा करने की जरूरत है, तभी पहाड़ की मूलभूत समस्या का निराकरण सम्भव है और तभी पहाड़ के वीरान पड़ते गाँवों को बचाया जा सकता है।

जी20 की राह में पलायन रोकथाम

वर्ष 2023 में **जी20** की अध्यक्षता करने का मौका भारत को मिला है। उत्तराखण्ड में **जी20** की तीन बैठकें आयोजित की जानी हैं। ये तीन बैठक रामनगर (नैनीताल) में आयोजित की जा रही हैं। इसमे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के साथ उत्तराखण्ड में शिक्षा, स्वाथ्य और पलायन रोकथाम के उपायों पर भी चर्चा होनी है। इस कड़ी में उत्तराखण्ड के पहाड़ों की आस लगी हुई है। हम आशा करते हैं कि **जी20** की इस समीक्षा में इस समस्या का कोई सुनियोजित समाधान निकलेगा।

पलायन रोकथाम के प्रमुख सरकारी प्रयास

सरकार द्वारा पलायन रोकथाम के प्रमुख प्रयास निम्न हैं –

- उत्तराखण्ड पलायन निवारण आयोग
- सीमान्त गाँव एकीकरण योजना
- घस्यारी कल्याण महिला स्वरोजगार भोजना योजना
- उत्तराखण्ड स्वरोजगार प्रोत्साहन योजना
- लघु सूक्ष्म व मध्यम उद्यम योजना

उक्त कार्यक्रम पलायन की समस्याओं को दूर करने हेतु राज्य में निरन्तर रूप से संचालित हैं। अतः सरकार और आमजन के सहयोग से ही यह संभव है। इसमें जागरूकता अपनी अपनी अहम भूमिका रखता है।

स्कूल–कॉलेज के वो दिन हमेशा याद आयेंगे

प्रियांशु सक्सेना
बीकॉम, तृतीय वर्ष

आज के समय में लगभग हर व्यक्ति उच्चतम से उच्चतम शिक्षा प्राप्त करता है और अच्छी कमाऊ नौकरी पाने के सपने देखता है। जिससे उसका समाज में भी हाई स्टेटस रहे और भविष्य में भी उससे आर्थिक तंगी से ना जूझना पड़े। वर्तमान समय में हमारे पास हर वह वस्तु उपलब्ध है जो शायद पिछले दो या तीन दशकों के लोग ने सोची भी नही थी, जिस पर हम पूरी तरह से निर्भर भी होते जा रहे है।

शायद इसका कारण है आज का आधुनिक योग। आधुनिकरण के इस योग में हम समय लगाकर ही समय बचाने में लगे है और इन सब में इतना उलझ चुके हैं कि अधिक धन कमाने की लालसा व अन्य लोगों से प्रदिर्स्धा एवं ईर्ष्या के कारण वास्तविकता और खुशहाली से भटक जाते है जिसका पश्चाताप उन्हें तब होता है जब वह जीवन के ऐसे मोड़ पर पहुंच जाते है जहां से वह केवल यही सोचते हैं कि क्या उन्होंने स्वयं से जो वायदा किशोरावस्था और जवानी में किया था वह उस पर खरे उतरे भी है।

या फिर उन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य समय केवल धन एकत्रित करने और पीछे छूट जाने के डर से भाग दौड़ में गवाँ दिया। कहते हैं कॉलेज का पहला दिन कौन भूल सकता है? स्कूल के बाद घर से मिली आजादी की खुशी मनाने का दिन जो था, उस दिन कॉलेज की ओर बढ़ने वाला हर कदम दिल की धड़कन बढ़ा देता है।

स्कूल और कॉलेज का समय हर व्यक्ति के लिए किसी ना किसी मायने में महत्वपूर्ण होता है। इस समय ही हम अपने जीवन में कुछ मुकाम छूने की आधारशिला बुनते हैं और कई सपने सजाते हैं। स्कूल और कॉलेज में बिताया हुआ हर एक पल सभी के जहन में ताउम्र रहता है।

जिसको याद करते ही चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। दोस्तों के साथ बिताया हुआ वह समय बेहद खास होता है और कॉलेज के अंतिम दिन सब खुशहाल भविष्य की कामना के साथ विदा हो जाते है और बचती है तो केवल यादें।

G२० प्रेसीडेंसी

रिचा

बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (**G20**) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर तथा भारत की वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत 1 दिसम्बर 2022 से 30 नवम्बर तक G20 की अध्यक्षता करेगा।

G20 का मूल उद्देश्य वैश्विक वित्तीय स्थिरता को सुरक्षित करना है। भारत की अध्यक्षता में कोविड और यूक्रेन युद्ध के बाद उत्पन्न संकटों के समाधान खोजने पर विचार होगा। इसमें लोगो दिया गया – 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के मंत्र के साथ यह आगे बढ़ेगा।' (वसुधैव कुटुम्बकम)

G20 में ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, जापान, फ्रांस, जर्मनी, चीन, भारत, रूस, इटली, इंडोनेशिया, साउथ कोरिया, मैक्सिको और यूरोपीय यूनियन देश शामिल हैं। जबकि स्पेन को स्थायी आमंत्रित अतिथि का दर्जा प्राप्त है तथा आसियान देशों में एक तथा दो अफ्रीकी देश भी आमंत्रित किए जाते हैं।

G20 की परिकल्पना G-7 द्वारा 1999 में बड़े पैमाने पर ऋण संकटों की सहायता श्रृंखला के जवाब में की गई थी, जो 1990 के दशक के अंत में उभरते बाजारों में फैल गया था। संकट इसकी शुरुआत मैक्सिकन पेंसो संकट, 1998 का रूसी वित्तीय संकट और अंतः 1998 की शरद ऋतु में लांग टर्म कैपिटल मैनेजमेंट के पतन के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका को प्रभावित किया। इसलिए इसका मूल उद्देश्य मध्यम आय वाले देशों को शामिल करके वैश्विक स्थिरता को सुरक्षित करना है। बाद में इसके एजेंडे को जलवायु परिवर्तन शमन, सतत् विकास और अन्य वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए बढ़ाया गया है।

G20 का कोई स्थायी सचिवालय नहीं है। इसके एजेंडे और काम का समन्वय G20 देशों के प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है, जो राजनीतिक जुड़ाव, भ्रष्टाचार का विरोध, विकास, ऊर्जा जैसे मुद्दे पर ध्यान देते हैं, जिन्हें शेरपा के रूप में जाना जाता है। भारतीय G20 शेरपा नीति आयोग के पूर्व CEO अमिताभ कांत हैं, जबकि केंद्रीय बैंकों के गवर्नर, वित्त मंत्रियों के साथ मिलकर वित्तीय विनिमय, राजकोषीय मुद्दों एवं मुद्रा पर काम करते हैं।

G20 की अध्यक्षता हर साल सदस्य देशों के बीच घूमती है। जी–20 की अध्यक्षता वाले देश, पिछले एवं अगले अध्यक्ष पदधारक के साथ G20 एजेंडा की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए 'ट्रोडका' का निर्माण करते हैं। इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील अभी ट्रोडका देश हैं। समूह का अध्यक्ष अन्य अध्यक्ष के साथ बातचीत करके जी–20 एजेंडा को लागू करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था के विकास हेतु उत्तरदायी होता है।

मौजूदा समय में जी–20 के समक्ष चुनौती रूस और यूक्रेन यद्ध, जिसके चलते अमेरिका, यूरोपीय यूनियन के कई देशों से रूस का टकराव यद्ध के कारण वैश्विक आपूर्ति में अंसतुलन, जिसके कारण मुद्रास्फीति में दबाव बढ़ रहा है।

स्वास्थ मंत्रालय की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि जी–20 समूह के अध्यक्ष के रूप में भारत का उद्देश्य स्वास्थ्य प्राथमिकताओं को जारी रखना और मजबूत करना है। इसके साथ ही भारत की अध्यक्षता में कुछ और महत्वपूर्ण उद्देश्य भी शामिल हैं –

- भारत की कोविड 19 के कारण छोटे देशों के ऊपर बढ़ा कर्ज संकट
- विश्व अर्थव्यवस्था में मंदी का संकट
- विश्व खाद्य कार्यक्रम ने 2023 में खाद्य संकट का अंदेशा जाहिर किया। UN में भारत को स्थायी सदस्य का मुद्दा
- IMF, WTO में भी सुधार व देश के 75 विश्वविद्यालयों को जोड़ने की मुहिम

शुरुआत में जी–20 व्यापक कार्मिक मुद्दों पर केंद्रित था परंतु आज इसके एजेंडे में विस्तार करते हुए, इसमें अन्य बातों के साथ व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत् विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण व जलवायु और भ्रष्टाचार विरोध को भी शामिल किया गया है।

जाति व्यवस्था की उत्पत्ति एवं परिवर्तन : प्रारम्भ से वर्तमान

दामिनी नेगी

एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर

जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है, जिसकी सदस्यता जन्म पर आधारित होती है और जो अपने सदस्यों पर खान–पान, विवाह, पेशा और सामाजिक सहवास सम्बंधी अनेक प्रतिबन्ध लागू करता है।

भारतीय सामाजिक संस्थाओं में जाति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। आदि काल से ही भारत में जाति–प्रथा का प्रचलन रहा है। पश्चिमी देशों में सामाजिक संस्तरण का आधार वर्ग है तो भारत में जाति या वर्ण। भारत में जाति की व्यापकता एवं महत्व को बताते हुए डॉ. मजूमदार लिखते हैं – 'जाति व्यवस्था भारत में अनुपम है। सामान्यतः भारत जातियों एवं सम्प्रदायों की परम्परात्मक स्थली माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि हवा में भी जाति घुली हुई है और यहां तक कि मुसलमान तथा ईसाई भी इससे अछूते नहीं है।'

एन.के. दत्ता ने जाति की विशेषताएं बतायी हैं –

1. एक जाति के सदस्य अपनी जाति से बाहर विवाह नहीं कर सकते।
2. प्रत्येक जाति में दूसरी जातियों के साथ खान–पान के सम्बंध में प्रतिबंध होता है।
3. अधिकांश जातियों में पेशे निश्चित होते हैं।
4. ऊंच–नीच का संस्तरण – 1. ब्राह्मण, 2. क्षत्रिय, 3. वैश्य, 4. शूद्र हैं।

वैदिक काल –

ईसा से 200 वर्ष पूर्व लेकर 600 वर्ष पूर्व तक माना जाता है। ऋग्वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ इस काल के प्रमुख ग्रन्थ है। ऋग्वेद में इन जातियों की उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगों से बतायी गयी है।

डॉ. धुरिये का मत है कि इस युग में इन वर्णों में कठोरता नहीं थी। वर्ण शब्द का प्रयोग रंग के लिए किया गया। इस युग में वर्णों पर पेशे का कोई प्रतिबंध नहीं था और एक वर्ण का व्यक्ति दूसरे वर्ण का पेशा अपना सकता था। विवाह सम्बंधी प्रतिबंध भी नहीं थे और एक वर्ण का व्यक्ति दूसरे वर्णों में विवाह कर सकता था।

समय के साथ–साथ इस युग में वर्णों ने जाति की विशेषताएं ग्रहण करना शुरू कर लिया था। वे अलग–अलग इकाइयों के रूप में स्थापित हो गए और उनके बीच उच्चता–निम्नता का स्तर तय हो गया।

ईसा से 600 वर्ष पूर्ण उत्तर वैदिक काल में 3 प्रकार का साहित्य मिलता है, जो जाति की गतिशीलता पर प्रकाश डालता है –

1) वह साहित्य जिसमें आर्यों के सामाजिक जीवन संबंधी नियमों एवं आदर्शों का उल्लेख किया गया है।
2) रामायण और महाभारत का साहित्य और बौद्ध साहित्य

यह युग ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों के बीच संघर्ष का युग था। इस युग में ब्राह्मणों की स्थिति का संगठन और शुद्रों की स्थिति व पतन हुआ। इस युग में 'वर्ण' शब्द के साथ–साथ सर्वप्रथम 'जाति' शब्द का भी उपयोग किया गया। जाति का तात्पर्य वर्ण अथवा वर्णों में पाए जाने वाले उपसमूहों के लिए किया गया। ब्राह्मणों को यज्ञ करने, शिक्षा ग्रहण करने एवं संस्कार करने का अधिकार था। इस युग में ब्राह्मणों की स्थिति ऊंची हो गयी थी। दूसरी ओर शूद्रों की स्थिति बहुत गिर गयी थी। शुद्रों को काले रंग का माना गया। उनकी उत्पत्ति दूसरे सभी वर्णों की सेवा के लिए मानी गयी। उनको शिक्षा, सम्पत्ति आदि के अधिकारों से वंचित रखा गया। एक वर्ण का दूसरे वर्ण में विवाह करना कर बंद दिया गया।

यही स्थिति वर्तमान समय में भी कई जगह देखने को मिलती है लेकिन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण व आधुनिक शिक्षा के कारण शहरी इलाकों में यह स्थिति न के बराबर है। यहां सभी जाति के लोग एक–साथ मिलकर काम करते हैं, भोजन करते हैं। आज दो अलग–अलग जाति ही नहीं बल्कि धर्मों के बीच में विवाह सम्बंध देखने को मिलते हैं। जाति की कठोरता कम होती जा रही है। लोग अपनी जाति के व्यवसायों को छोड़कर कई अलग व्यवसाय करते हैं। आज हम किसी शुद्र को शिक्षण संस्थान में शिक्षक के रूप में देख सकते हैं व एक ब्राह्मण को व्यापारी के रूप में। आज जाति व्यवस्था से ज्यादा वर्ण व्यवस्था को माना जाता है।

आजादी का अमृत महोत्सव

आशीष नौटियाल
बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

15 अगस्त 2012 को देश की आबादी के 75 वर्ष पूरे हो गये। इसी उपलक्ष्य 75 वर्ष के पूर्ण होने से 75 सप्ताह पूर्व 12 मार्च 2021 को केंद्र सरकार ने 'आबादी का अमृत महोत्सव' मनाने की घोषणा की। महोत्सव की शुरुआत के लिए साबरमती (गुजरात) का स्थान के रूप में चयन किया गया, क्योंकि यही स्थान था, जहां से राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी द्वारा 12 मार्च 1930 को दांडी मार्च प्रारम्भ किया गया। इस महोत्सव को मनाने की अवधि 2 वर्ष रखी गई, जो 15 अगस्त 2023 तक है।

उद्देश्य

देशभर में इन 75 सप्ताहों में विभिन्न कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया, जिनमें असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन के साथ ही दांडी मार्च, महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और अन्य आंदोलन के नेताओं सहित स्वतंत्रता से सम्बंधित प्रमुख स्थलों को दिखाया गया। महोत्सव के जरिए आजादी से जुड़े उन विस्मृत नायकों की भी तलाश होगी, जिनका नाम अभी तक इतिहास के पन्नों में कहीं छिपा हुआ है। इसके माध्यम से देश के लोग, युवा, बच्चे उन अमर महावीरों को जान सकेंगे, जो इतिहास के पन्नों में कहीं दबे हुए हैं। साथ ही, यह महोत्सव नए दृष्टिकोणों, नए संकल्पों और आत्म–निर्भरता से प्रेरणा को प्रतिध्वनित करेगा।

'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत नियोजित गतिविधियाँ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमृत महोत्सव के लिए एक वेब साइट का उद्घाटन किया है – "amritmahotsav.nic.in"
- 'एक आत्मनिर्भर इनक्यूबेटर' शुरू किया गया, जो पारम्परिक कला में संलग्न 40,000 परिवारों की सहायता करेगा।
- तमिलनाडु और कर्नाटक में, स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने के लिए प्रदर्शनियां, साइकिल रैली, वृक्षारोपण और जुलूस निकाले गए।

- क्षेत्रीय आउटरीच ब्यूरो ने राजस्थान में 5 दिवसीय हस्तशिल्प प्रदर्शनी का आयोजन किया।

आबादी के अमृत महोत्सव के महत्वपूर्ण पाँच विषय

1. स्वतंत्रता संग्राम –

यह विषय 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तत हमारे स्मरणोत्सव की पहल की शुरुआत करता है। यह विषय उन विस्मृत नायकों की कहानियों को उजागर करने में मदद करता है, जिनके बलिदान ने हमारे लिए स्वतंत्रता के स्वप्न को वास्तविकता बना दिया।

इस विषय के तहत कार्यक्रमों में बिरसा मुंडा जयंती (जनजातीय गौरव दिवस), नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार की घोषणा, शहीद दिवस आदि शामिल हैं।

2. 75 वर्ष पर विचार

हम जानते हैं कि क्षण–प्रतिक्षण दुनिया बदल रही है और यह हमारे सामने एक नई दुनिया को प्रकट कर रही है। हमारे दृढ़ विश्वास की शक्ति, हमारे विचारों की लम्बी आयु तय करेगी। इस विषय के तहत आयोजनों और कार्यक्रमों में लोकप्रिय, सहभागी पहलें शामिल हैं, जो दुनिया में भारत के अद्वितीय योगदान को जीवंत करने में मदद करती है। इनमें काशी की भूमि के हिंदी साहित्यकारों को समर्पित काशी उत्सव, प्रधानमंत्री को पोस्ट कार्ड जैसे कार्यक्रम और पहल शामिल हैं।

3. 75 वर्ष पर उपलब्धियां

इसका उद्देश्य 5000+ वर्षों के प्राचीन इतिहास की विरासत के साथ 75 साल पुराने स्वतंत्र देश के रूप में हमारी सामूहिक उपलब्धियों के सार्वजानिक खाते में विकसित होना है।

इस विषय के तहत कार्यक्रमों में 1971 की जीत के लिए समर्पित स्वर्णिम विजय वर्ष, महापरिनिर्वाण दिवस के दौरान श्रेष्ठ योजना का शुभारंभ आदि जैसी पहल शामिल हैं।

4. 75 वर्ष पर कदम

यह विषय उन सभी प्रयासों पर केंद्रित है, जो नीतियों को लागू करने और प्रतिबिंबताओं को साकार करने के लिए उठाये जा रहे कदमों पर प्रकाश डालते हुए भारत को कोविड के बाद की दुनिया में उभरने वाली नई विश्व व्यवस्था में अपना सही स्थान दिलाने में मदद करने के लिए किये जा रहे हैं। यह 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के प्रधानमंत्री मोदी के स्पष्ट आश्वासन से प्रेरित है। इसमें सरकारी नीतियों, योजनाओं के साथ–साथ व्यवसायों, गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाज की प्रतिबिंबताओं को शामिल किया गया है।

इसके तहत कार्यक्रमों में गति शक्ति मल्टी मॉडल कनेक्टीविटी के लिए राष्ट्रीय मास्टर प्लान जैसी पहल शामिल है।

4. 75 वर्ष पर संकल्प

यह विषय हमारी मातृभूमि की स्थिति को आकार देने के हमारे सामूहिक संकल्प और दृढ़ संकल्प पर केंद्रित है। 2047 की यात्रा के लिए हममें से प्रत्येक को व्यक्तियों, समूहों, नागरिक समाज, शासन की संस्थाओं आदि के रूप में डटकर अपनी भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

हमारे सामूहिक दृढ़ संकल्प, सुनियोजित कार्य योजनाओं और सामूहिक प्रयासों से ही विचारों को कार्यों में परिणित किया जा सकता है।

इस विषय के तहत कार्यक्रमों में संविधान दिवस, सुशासन दिवस आदि जैसी पहल शामिल हैं, जो उद्देश्य की गहरी भावना से प्रेरित होने के साथ–साथ ग्रह और लोगों के प्रति हमारी प्रतिब(ता को जीवंत करने में सहायता करती है।

निष्कर्ष

'आजादी का अमृत महोत्सव' पिछले 75 वर्षों में भारत द्वारा की गयी तीव्र प्रगति का जश्न मनाना है। यह उत्सव हमें अपनी छिपी शक्ति को फिर से खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमें राष्ट्रों के समूह में अपना सही स्थान प्राप्त करने के लिए ईमादार, सक्रियात्मक कार्यवाही करने के लिए प्रेरित करता है।

गाँधी : सामान्य परिचय

आदर्श भट्ट
बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

- गाँधी जी का जन्म 02 अक्टूबर, 1869 में गुजरात के एक सम्पन्न परिवार में पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। अपनी वकालत की पढ़ाई इंग्लैंड से पूरी करने के बाद गाँधी जी 1892–1893 में दक्षिण अफ्रीका में व्यापार करने वाले एक भारतीय मुसलमान व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने के लिए डरबन (दक्षिण अफ्रीका) चले गये। इस मुकदमे में इन्होंने सफलता हासिल की।
- इस दौरान इन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के प्रति रंगभेद नीति को स्पष्ट रूप से महसूस किया। वहां प्रत्येक भारतीय को पंजीकरण प्रमाण पत्र लेना और यह प्रमाण पत्र हर समय अपने पास रखना आवश्यक था। गाँधी जी ने इस सम्बंध में 'एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट' का विरोध किया।
- 1899 में गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में 'नटाल इंडियन कांग्रेस' की स्थापना की और रंगभेद की नीति के विरुद्ध आंदोलन भी शुरू किया। अपने सहयोगी जर्मन शिल्पकार 'कालेनबाख' की मदद से 'टॉलस्टाय फार्म' की स्थापना की। वहां रहकर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में 'इंडियन ओपीनियन' अखबार का प्रकाशन किया तथा 1904 में 'फीनिक्स आश्रम' की स्थापना की। मनसुखलाल हीरालाल नजर इंडियन ओपीनियन पत्रिका के प्रथम सम्पादक थे।
- गाँधी जी के प्रयासों व आंदोलन के कारण दक्षिण अफ्रीकी सरकार द्वारा सन् 1914 में अधिकांश रंगभेद कानूनों को रद्द कर दिया गया।
- 1909 में पश्चिमी मूल्यों की आलोचना करते हुए हिन्द स्वराज नामक पुस्तक लिखी, जिसमें सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनने की सलाह दी गई। गाँधी जी ने इस पुस्तक में ब्रिटिश संसद को बाँझ एव वैश्या की तरह बताया।
- विदित है कि डरबन से प्रिटोरिया जाते समय गाँधी जी को अपमानित किया गया और वहीं से उन्हें भारतीयों के नेतृत्व की प्रेरणा मिली थी।
- महात्मा गाँधी ने गिरमिटिया (इंडेचर्ड लेबर) प्रणाली के

उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

- 'व्यक्ति का कल्याण सबके कल्याण में निहित है' इस वाक्यांश ने गाँधी जी को अत्यधिक प्रभावित किया। गौरतलब है कि यह वाक्यांश जॉन रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' का है। गाँधी जी की कुछ गहन धारणाएं इसी पुस्तक में प्रतिबिंबित होती हैं। इस पुस्तक के प्रभावाधीन होकर गाँधी जी ने 'सर्वोदय' जैसी अवधारणा का विकास किया।
- 'सर्वोदय' का आशय सभी का, सभी प्रकार से उत्थान या कल्याण से है। गाँधी जी सभी व्यक्तियों के श्रम करने पर बल देते थे। वे आर्थिक न्याय हेतु ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का अनुसरण करते थे। गाँधी जी, थोरो के इस विचार से सहमत है कि सर्वोत्तम सरकार वह है जो सबसे कम शासन करती है। गाँधी जी ने सत्ता के विकेन्द्रीकरण तथा राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र का समर्थन किया।
- गाँधी जी धार्मिक रूढ़िवादिता, धार्मिक कट्टरता एवं धर्मांधता के विरोधी हैं। उनका धर्म से आशय सभी धर्मों में अंतर्निहित, मूल शाश्वत तत्व से है, जो समस्त मानवों के कल्याण का हेतु है। वे 'सर्वधर्म समभाव' की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं।
- गाँधी जी साधन एवं साध्य की पवित्रता पर बल देते हैं। उनके अनुसार साधन एवं साध्य में अवियोज्य सम्बंध है। इसी तरह वे अहिंसा को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि मन, वचन और कर्म से किसी का अमंगल न होने देना ही अंहिंसा है।

जानकारी का स्रोत : 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग'

— महात्मा गाँधी

राष्ट्र निर्माण में नवयुवकों का योगदान

तुषार जगूड़ी 'शैल'
एलएल.बी. चतुर्थ सेमेस्टर

आजादी के अमृत काल में प्रवेश कर चुका, विश्व का सबसे युवा राष्ट्र आज अपने सभी भोग–विलास के विकासानोमुखी व्यवस्था की चरम सीमा की ओर झांक रहा है। युवा राष्ट्र का प्रत्येक युवा नागरिक आज भारतवर्ष व मां भारती के वैभव हेतु संकल्पित व दृढ़ निश्चयवान है। विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या होने के बावजूद हमारा गौरव, हमारा भारतवर्ष, मां भारती सर्वाधिक युवाओं वाली मां (राष्ट्र) है। चूंकि 'सभ्यता का क्रमिक विकास ही संस्कृति कहलाती है' और भारतवर्ष की सनातन संस्कृति व विरासत अपनी समृद्धि का एक महान घोतक है। कालांतर में तत्कालीन विदेशी कुख्यात, आक्रांताओं द्वारा यहां की संस्कृति को नष्ट करने का बहुतायत में प्रयास किया, परंतु स्वार्थ से परिपूर्ण, नापाक इरादों से कोई सफलता नहीं पा सकता। उदयीमान नवभारत का दीपक, उदित दिवाकर की भांति समस्त विश्व में वैश्विक स्तर पर प्रदीप्त हो रहा है, इसका संपूर्ण श्रेय 140 करोड़ देशवासियों को प्रदत किया जाता हैय इसमें संपूर्ण योगदान व उपलब्धियों का इस राष्ट्र के नवयुवकों को श्रेय जाना तर्कसंगत है, जिस राष्ट्र में सर्वाधिक जनसंख्या युवाओं की हो संभवतः, वह राष्ट्र नए आयामों को शीघ्र प्राप्त कर सकता है। 'भारत रत्न', पूर्व प्रधानमंत्री, हमारे प्रेरणास्रोत स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेई जी ने कहा है– 'व्यक्ति को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि वह कहां खड़ा है? वह पथ पर है या रथ पर, वह तीर पर है या प्राचीर पर' अर्थात कर्मों की कुशलता से व्यक्ति हर असंभव कार्य को सफलता में परिवर्तित कर सकता है। चूंकि 2047 आजादी की शताब्दी वर्षगांठ भारत अपने स्वर्णिमकाल के सुंदर स्मृतियों में पूर्ण करें, इसके लिए आवश्यक है, कि युवा राष्ट्र का प्रत्येक नवयुवा अपनी समस्त नवसंचार की ऊर्जा से माँ भारती के लिए अपना–अपना विशेष योगदान दें व माँ भारती 2047 तक इस धरा (विश्व) का मुकुटमणि बने। आवश्यकता है, केवल युवाओं की शक्ति को सही समय से समायोजित करने की। अंततः इन्हीं पंक्तियों के साथ सादर प्रणाम –

जो हमसे टकराएगा, चूर–चूर हो जाएगा
इस मिट्टी में मिलने वाला, मिट्टी में मिल जाएगा
मैं! हर घर में इंकलाब जगाने आया हूं,
हे! भारत के राम जगो, मैं तुम्हें जगाने आया हूं।

चाइनीज मांझे की आफत बरकरार: 'पतंग की उड़ान, जा रही पक्षियों की जान'

प्रियांशु सक्सेना

देहरादून। पतंग उड़ाने में हर उम्र के लोगों को आंनद आता है। बच्चों, युवाओं और बुजुर्गो में पतंग उड़ाने का खासा शौक व जुनून होते हैं, परंतु इस बात से अंजान की उनका शौक किसी निर्दोष की जान ले रहा है। वह पतंग बाजी करने में मसरूफ़ रहते हैं।

देश में हर वर्ष मकर संक्रांति, बसंत पंचमी व पतंग महोत्सव का पर्व हर्षोल्लास से मनाया जाता है, जिसका इंतजार पंतंगबाज बेसब्री से करते हैं। किंतु पेड़ों पर अटके पतंग के मांझे में फंसकर परिंदों की जान जा रही है। प्रत्येक साल नव वर्ष के आरंभ से आसमान में पतंग बदलो के स्थान पर आकाश को ढके रखती हैं।

यह सिलसिला पौष और माघ के माह तक चलता है। इसके अलावा भी वर्षभर में खास मौकों पर पतंग उड़ाई जाती है। जिसके लिए खतरनाक मांझो का प्रयोग किया जाता है। जो की चाकू से भी धारदार होते हैं। पतंगों का मांझा पेड़ों पर एक जाल की तरह उलझ जाता है। इन मांझों में आए दिन पक्षी फंसते हैं और तड़पकर फड़फड़ाते रहते हैं और ऐसे ही उनकी जान निकल जाती है।

पहले ही खेतों मे केमिकल छिड़काव और मोबाइल टावर से निकलने वाली रेंज के कारण इनकी संख्या में कमी हो रही है। पतंग उड़ाने के लिए प्रयोग में लाने वाले मांझे को पक्का करने के लिए कांच और ज्यादातर अंडे का प्रयोग किया जाता है और अगर पतंग के मांझे से हमारे शरीर पर कहीं भी कट जाए तो उसमें कांच के बारीक टुकड़े होने से हमारे शरीर में इंफेक्शन हो सकता है, जो जानलेवा भी हो सकता है।

चाइनीज या पक्का मांझा की चपेट में आने से घायल मनुष्य तो अपना उपचार अस्पताल में करा लेता है परंतु बेजुबान पक्षी तड़प–तड़ के दम तोड़ देते हैं। इस प्रकार के घातक मांझों से कबूतर, गौरैय, तोते, कौआ, आदि प्रकार की चिड़ियाएं व पक्षी मौत की नींद सो रहे हैं।

यदि इन सब पर रोक नही लगाई गई तो जल्द ही पक्षी विलुप्त हो जाएंगे और उनकी आकस्मिक मौत से खाद्य श्रृंखला पर भी असर देखने को मिलेगा। यही नहीं, पतंग उड़ाने के कारण हर वर्ष कई बच्चों की मौत छत से गिरने के कारण हो जाती है।

आमजन पर भी हो रहा प्रहार

पतंगबाज अपने प्रतिद्वंदी से स्पर्धा करने के लिए खतरनाक से खतरनाक मांझे का प्रयोग करते हैं। जिससे हर वर्ष बड़ी संख्या में पक्षियों की मौत, घायल, बच्चों के साथ दुर्घटना, उनके चोटिल होने की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। पतंग के मोह में चूर बच्चे बिना सावधानी बरतें और ध्यान दिए सड़कों पर कटी पतंग लेने को दौड़ने लगते हैं और हादसों का शिकार बन जाते है। आमजन को भी अपना शिकार बनाने से नहीं चूक रहा, यह जानलेवा मांझा। राहगीरों, वाहन चालकों को भी अपने चपेट में ले रहा और दुर्घटना ग्रस्त व क्षति पहुंचा रहा। इन तेज मांझो की डोर से राह चलते लोगों के हाथ, पैर, गला, गर्दन को भी निशाना बना रहा और क्षति पहुंचा रहा।

चाइनीज मांझे के नुकसानः

चाइनीज मांझे का इस्तेमाल करते समय इसके धागे के स्पर्श में अगर कोई पंछी या अन्य कोई वस्तु आ जाए तो यह उसे काटकर घायल कर देता है, कभी–कभी तो यह जानलेवा भी साबित हो जाता है। चाइनीज मांझे का इस्तेमाल करने से कई तरह से नुकसान होता है। इसका इस्तेमाल करते समय जरा सा टकराव होने पर यह उंगली, हथेली समेत किसी भी हिस्से को काटकर घायल कर देता है।

अहंकार का सार

जुवीन नौटियाल
बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर

अपनी लघुता का आभास हमें सदैव रहना चाहिए क्योंकि इस भाव से मनुष्य के पैर जमीन पर टिके रहते हैं।

इस संसार में अभी भी उन लोगों कि कमी नहीं है जो अपने अहंकार के आगे दुसरों को तुच्छ समझते हैं, उन्हे हमेशा दूसरों को नीचा दिखाने में आनंद की अनुभूति होती है ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि आखिर अहंकार का अंत कैसा है।

इस सम्पूर्ण ब्रह्मांड में हमारा वास्तव में क्या अस्तित्व है ? या हमारा इस जीवनदायी गाड़ी को चलाने में कितना योगदान है क्या हमने इस संसार को कुछ दिया या केवल अपने स्वार्थ ही पूरे किये ?

अपनी लघुता को समझने का आसान तरीका है कि हम भौतिक भूगोल का वह अध्याय पढ़े, जो हमें इस अज्ञात ब्रह्मांड का ज्ञान कराता है । जिन लोगों ने इसे नहीं पढ़ा उन्हे लगता कि हमारी पृथ्वी ही अन्तिम सत्य है, जबकि वास्तव में हमें ब्रह्मांड के विस्तार का ठीक से पता भी नहीं। ऐसे में यदि कोई अपने आप को देखे और सोचे कि इस विशाल ब्रह्मांड में असंख्य आकाशगंगाएं हैं इन्ही में से एक साधारण आकाशगंगा 'मिल्की वे' के असंख्य तारों में एक तारा 'सूर्य' है उसके 8 ग्रहों में 5 वें बड़े ग्रह के लाखों जीवों में एक प्रजाति मानव की है उनमें भी 8 विलियन लोगों में कहीं एक कोने में हम हैं जिनसे आगे किसी ना किसी क्षेत्र में कोई ना कोई कभी ना कभी रहा होगा। जब मनुष्य इस भाव से एक बार भी मानव खुद को देखता है तो उसे अपनी लघुता का बोध हो सकता है। अन्यथा आज संसार में बहुत लोग है जो अपनी व्यक्तिगत सफलताओं को पाने के बाद समझते हैं कि मैं ना होता तो शायद कुछ ना होता वहीं दूसरी ओर कई ऐसे भी महान विभूतियां हैं जिन्होंने वास्तव में कुछ पाया है इस मानव जगत को कुछ दिया है वे बहुत साधारण तरीके से खुद को प्रदर्शित करते हैं। क्योंकि ये सभी अपनी लघुता को जानते हैं और सरल, सहज रहतें है।

इस अंक का सार यह नहीं कि मनुष्य को आत्मविश्वास या आत्मगौरव के भाव से वंचित रहना चाहिए बल्कि यह है कि व्यक्ति को अपने सकारात्मक पक्षों के प्रति गौरव का बोध होना चाहिए जिससे हमारा आत्मविश्वास हमारी सफलता में योगदान दे। बस इस बात का ख्याल होना चाहिए कि हमारा आत्म–विश्वास और आत्मगौरव का बोध दूसरों के आत्मगौरव को ना कुचले, बेहतर यही है कि हम अपनी लघुता का अहसास किसी न किसी मात्रा में बनाये रखें।

इसी मानसिकता से व्यक्ति और समाज का सह–सम्बन्ध सुखद एंव सकारात्मक हो सकता है ।

आज तो दिन ही खराब है

कंचन नौटियाल
बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

जाड़ों के मौसम में दूर पहाड़ी पर एक संकरी पगडंडी पर पथिक चलने लगा तो एक लंबी दूरी तय करने के बाद आगे देखता है तो पूरे रास्ते पर धुंध छाई है एक गहरा कुहासा आंखों की क्षमता पर प्रश्न गाड़े खड़ा है। क्षण भर में कुहासे ने पीछे से भी घेर लिया । अब पथिक तय ही नही कर पा रहा कि जाऊं कहाँ ?

मार्ग संकरा है, अब आगे जाए तो कहीं ऐसे पत्थर पर न पैर धर बैठे की वो उसे गहरी खाइयों में धकेल दे। लंबी दूरी तय करने के बाद पीछे जाने के लिए पथिक का मन गवाही नहीं देता और रास्ते में वहीं बैठ भी जाए तो किस भरोसे ? आखिर समय कहाँ बैठता है?

अब भला पथिक के जीवन की इस से बड़ी विडंबना ही क्या होगी की पथ ही धोखा दे बैठे? अंत में उम्मीदों की किरणों को ढूंढता हुआ आकाश को देखने लगता हैं तो कुहासा वहाँ भी उसे निराश करने में असफल ना रहा। इस जद्दोजहद में ही वो कुछ बड़बड़ाया कि आज दिन ही खराब है।

वो कुछ ठहरा और सोचने लगा कि वो पथिक है उसने यात्राओं के अनुभवों को संजोया है जिन पर उसे विश्वास है। फिर उम्मीदें जागी और वो लगा तरकीबें ढूंढने। हाथ इधर उधर मारने पर एक लंबी टहनी मिली तो उसे तोड़कर उसने आगे के रास्ते को टटोलना शुरू किया। वो पथिक था उसने ढूंढ़ ही लिया अपना मार्ग।

मानव जीवन भी तो किसी संकरी पगडंडी से कम नहीं । अक्सर एक लंबा सफर तय करने के बाद कुछ ऐसे ही जाड़ों के मौसम आ जाते है जिनमें जीवन का लक्ष्य भटका भटका सा लगने लगता है समझ ही नहीं आता की अब किस राह चलें । कोशिशें भी निराश करने लगती हैं और फिर वो कहता है कि दिन ही खराब हैं।

ऐसे में आवश्यकता है बस थोड़ी सी उम्मीदों को जिंदा रखने की, स्वयं पर विश्वास करने की और थोड़ा ठहर कर अब तक के जीवन में मिले सारे अनुभवों को इकठ्ठा कर एक नया विचार तलाशने की जो उसे मार्ग दिखाए और कर दे उसके बुरे दिन को अच्छा।

गुरु का नाम है

सूरज सेलवान
बी.एससी. प्रथम सेमेस्टर

सबसे बढ़कर इस दुनिया में,
सिर्फ गुरु का नाम है।
माता देती जन्म हमें और,
शिक्षा इनका काम है।

सोचो यदि गुरु ना हो तो,
हम कैसे बढ़ पाएंगे।
शिक्षक भी जब साथ न हो तो,
सिर्फ पशु ही कहलाएंगे।

गुरु सबका जीवनसाथी है,
वह पथ प्रदर्शक है सबका।
देखे सबको एक दृष्टि से,
साथी है वह हम सबका।

गुरु का सब सम्मान करेंगे,
सम्मान तभी हम पाएंगे।
यदि बात ना मानो गुरु की,
जीवन भर पछताएंगे।

चाहोगे यदि तुम खुश रहना,
गुरु की आज्ञा मानो तुम।
गुरु सेवा को ही ईश्वर की,
सच्ची भक्ति मानो तुम।

जै उत्तराखण्ड

प्रो० पुष्पा खण्डूरी
हिन्दी विभाग

उत्तराखण्ड की भूमि महान ।
देवभूमि अति पावन धाम ।।
यहां पर हर पर्वत–पर्वत मंदिर ।
यहाँ के कण–कण में भगवान ।।
ये भूमि वीरों की भूमि,
यहाँ उपजते वीर महान ।
देश की रक्षा–हित दे देते,
हंसते –हंसते जो अपनी जान ।।
उत्तराखंड की भूमि महान ।
देवभूमि अति पावन धाम ।।
यहां पर पर्वत –पर्वत मंदिर ।
यहाँ के कण–कण में भगवान ।।
पंच केदार हैं यहाँ शिवालय ।
बदरीनाथ श्री विष्णु – धाम ।।
श्री कृष्ण के पांडव प्यारों की थी ।
इसके कण –कण से पहचान ।।
पांचों पांडवों ने द्रौपदी संग ।
किया यहीं से स्वर्ग – प्रयाण ।।
उत्तराखंड की भूमि महान ।
देवभूमि अति पावन – धाम ।।
यहाँ पर पर्वत –पर्वत मंदिर ।
इसके कण – कण में भगवान ।।
अलकनंदा से मिल कर
नदियाँ पावन।
करती पंच – प्रयागों का निर्माण ।।
विष्णुप्रयाग, नन्दप्रयाग,
रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग और देवप्रयाग ।
हैं इनके सुन्दर पावन नाम ।।
उत्तराखंड की भूमि महान ।
देवभूमि अति पावन धाम ।।
यहाँ पर पर्वत –पर्वत मंदिर ।
यहाँ के कण –कण में भगवान ।।
शंकराचार्य जी ने दिया
यहीं था,
देश को बद्रीनाथ सा पावन चौथा – धाम ।
उत्तराखंड की भूमि महान ।
देवभूमि अति पावन धाम ।।
यहाँ पर पर्वत – पर्वत मंदिर ।
यहाँ के कण –कण में भगवान ।।
भारत माता का मुकुट हिमालय
प्रहरी बन करता रक्षा निशि –दिन आठों याम ।।
उत्तराखंड की भूमि महान ।
देवभूमि अति पावन धाम
यहाँ पर पर्वत – पर्वत मंदिर ।
यहाँ के कण –कण में भगवान ।।
शिव का धाम यहीं है प्यारा ।
शिव –प्रिया उमा सती भी हैं यहीं की बिटिया ।
देवियों से भी हैं इनके बेटी से रिश्ते ललाम ।।
नम आँखों से इनकी डोलियाँ
देकर फूल – फल –मेवें आभूषण और मिष्ठान ।।
उत्तराखंड की भूमि महान
देवभूमि अति पावन है धाम
यहाँ पर पर्वत – पर्वत मंदिर ।
यहाँ के कण – कण में भगवान ।।
यहाँ पे वन –वन जड़ी बूटियाँ ।
फल – फूलों से यहाँ लदी
घाटियाँ
पर्वत –पर्वत रम रही यहां पर ,
साधु संतों की पावन धूनियाँ ।।
जिन अमर शहीदों की
कुर्वानी पर,
हुआ है इस राज्य का निर्माण ।
उनकी स्मृति में उनकी निर्दोष शहादत पर।
श्रद्धावनत् हम सबका नित शत् –शत् प्रणाम।

मैंने केवल वही लिखा है ...

डॉ. लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी 'विमल'
अवकाश प्राप्त रीडर

देखा सुना जिया जीवन में, मैंने केवल वही लिखा है।
सुख का जीवन जीने वाले, जन हमदर्द नहीं होते हैं।।
खुदगर्जी का जीकर जीवन, नहीं विश्व को कुछ देते हैं।
गम दुख दर्द व्यथा औ पीड़ा, नमक जिंदगी के होते हैं।।
समय–समय पर आकर, जीवन को खुशियों से भर देते हैं।
तुम्हें गरीबों की कुटिया का, कब आंसू सैलाब दिखा है।।
मैंने केवल वही लिखा है।।

नहीं धूप की खुशी जानते, सदा छांव में पलने वाले।
पांवों के छाले क्या जाने, सुविधाओं में ढलने वाले।।
नहीं जेठ की दोपहरी का, जिसने असह ताप झेला है।
जिसका नहीं सर्द घाटी की, नदियों में बचपन खेला है।।
कदम कदम पर ठोकर खाकर, दुनिया में जो मुझे दिखा है।
मैंने केवल वही लिखा है।।

अपने निजी स्वार्थ की खातिर, सारा देश जलाने वालों।
बंद करो नफरत की भाषा, जनता को बहलाने वालों।।
एक झोपड़ी के बनने में, सारा जीवन लग जाता है।
पूरा घर मेहनत करता है, तब घर में राशन आता है।।
मेहनत सारा जीवन बीत चुका है, सुख का सूरज नहीं दिखा है।
मैंने केवल वही लिखा है।।

आज आपको अभिव्यक्ति की, संविधान ने दी आजादी।
शब्दों में नफरत भर तुमने, सोच बना ली हिंसावादी।।
अपने कर्तव्यों की खातिर, कुछ बनता है फर्ज तुम्हारा।
जला पड़ोसी का घर बोलो, हुआ कौन उपकार तुम्हारा।
लगा हुआ खुशियों पर तुमको, नहीं पीड़ा पैबंद दिखा है।
मैंने केवल वही लिखा है।।

अपने बेटों को सरहद पर कभी आपने भेजा होता।
सीने पर गोली खाने का, तब अहसास तुम्हें भी होता।।
डोली उतरी हुई दुल्हन ने मंगलसूत्र उतारा होता।
उन लम्हों का व्यथा दुःख, क्या तब तुम्हें गवारा होता।।
जवां पुत्र का शव, पापा के कंधों पर क्या कभी दिखा है।
मैंने केवल वही लिखा है ।।

कभी शहीदों की मजार पर जाकर शीश झुकाया होता।
कभी शहीदों की मजार पर जाकर शीश झुकाया होता।
दीप बुझ गया जिस आंगन का, ढांढस उन्हें बंधाया होता।।
जिस मिट्टी में जन्म लिया है, उसका कर्ज चुकाना होगा।
तन पर गाँधी की खादी का, तुमको फर्ज निभाना होगा।।
झुग्गी झोपड़ियों की पीड़ा का तुमको क्या दर्द दिखा है।
मैंने केवल वही लिखा है।।

मातृभूमि को भूल गए हो, आतंकवाद तुम्हें भाया है।
विध्वंशक अभिनव मानवता का पथ, तुम्हें रास आया है।।
भोली जनता को फरेब का, झूठा पाठ पढ़ाने वालों।
मजबूरी मुफलिसी बेबसी का हर लाभ उठाने वालों।।
हित उनका हित औ अहित आज क्या,
कुछ भी तुमको नहीं दिखा है।
मैंने केवल वही लिखा है।।

अभिनव समाधान पीड़ा का, हिंसा कभी नहीं होती है।
आत्मसात कर बढ़ो अहिंसा, दिव्य अलौकिक सुख देती है।।
समरसता की दिव्य ज्योति से, विघटनकारी फिजा मिटा दो। विनम्रता की नव सुगंध से मानवता समृद्ध बना दो। ।
घर से सुख को आग लगाना, किस मजहब से लिखा दिखा है।
मैंने केवल वही लिखा है।।

भूमि की पुकार

महक भण्डारी
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

कभी स्वर्ग ,कभी देवभूमि उत्तराखंड कहते हो
कभी सुकून, कभी राहत कहते हो
तुम आते हो कभी पंच केदार दर्शन करने को
कभी अपनी भेंट अर्पण करने को
कभी गर्मियों की छुट्टियों की सैर में
कभी दौड़ती भागती जिंदगी से बैर में
कभी हताश परेशान तुम
दिव्य हिमालय में जाना चाहते हो
कभी खुदकी खुद से बैर में
गंगा किनारे बैठना चाहते हो
पर आए एक भी तूफान, इन फिज़ाओं में
तुम एक पल भी ठहरना नहीं चाहते
तुम देख रहे तमाशा विकास के नाम पर
क्या तुम आवाज उठाना नहीं जानते?
ये भूमि सिर्फ घूमने–फिरने मात्र तक तो सीमित नहीं!
तुम्ही तो इसको देवभूमि उत्तराखंड कहते थे!
आज ये फिजाएं चीख रही हैं,
ये भूमि हताश होकर बिखर गई है
अपने ही लोगों को , अपने ही घरों से बेघर होते देख
आज देवभूमि फिर से सैलाब उगल रही है
आज जोशीमठ है कल को तुम्हारा भी घर हो सकता है
तुम गुमसुम क्यों बैठे हो ?
सत्ता जिसकी भी हो,
आखिर में फैसला तुम्हारा भी हो सकता है ।
तुम आवाज उठाना सीखो
अपनी दिव्य जननी को बचाने की सोचो
तुम क्यों बेफिक्र घूमने में व्यस्त हो?
तुम क्यों विकास के प्रपंच से ग्रस्त हो?
आओ तुम कदम बढ़ाओ, देवभूमि को बचाओ ॥

पापा

बलजीत सिंह
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

कमाया था उन्होंने मुझे पढ़ाने के लिए।
दुनिया में किसी काबिल बनाने के लिए।
छवि में उनकी मुझे रब दिखता था।
दुनिया में चाहें कुछ दिखे ना दिखे।
मुझे अपने पापा में सब दिखता था।
हाथों में छाले, कपडे भी पुराने थे।
एक ही मकसद था उनका।
मुझे अपने बच्चे पढाने थे।
उनको देख कर जिंदगी का आधार नजर आया।
जब अकेला था तो उनका प्यार नजर आया।
रोते देख उन्होंने मुझे समझाया।
पापा खडे है तेरे पास।
बेटा तू क्यों घबराया।
जब अकेला था तो उनका प्यार नजर आया।

घर से दूर

विक्रम सिंह भण्डारी

मैं भी निकल पडा घर से दूर, घर के वास्ते।
मजबूरियों को शौक नाम देते हुए
माँ– पापा की फटकार से तो दूर,
पर है कहाँ, उन सा राहगीर यहाँ।
बेशक आजाद मैं यहाँ,
पर है कहाँ, हमदर्द माँ सा यहाँ ।
जिम्मेदारी कांधे रख, चला आया कुछ कर गुजरने की चाह लिए।
अनजान डगर में, लिए इरादे मजबूत ,
चला आया मैं भी घर से दूर घर के वास्ते।
दूर है मंजिल, रास्ते अधूरे अंधकारमय,
एक आस लिए पलकों पर अपने, चल दिया मैं भी घर से दूर, घर के वास्ते।।

दहाड़

सूरज
एलएल.बी. चतुर्थ सेमेस्टर

शेर हूँ दहाड़ता हूँ ,
सीने दुश्मनों के चीरता हूँ
पहचान मेरी कुछ और नहीं
तिरंगे की शान है
हूँ वीर मैं
बिलदान ही मेरा अभिमान है
तभी तो पहचान ही मेरी
तिरंगे की शान है
माँ भारती सीमा को
सींचा मैंने अपने लहु से है
ना कोई मेरी जात है
ना कोई मेरा धर्म है
माँ भारती की सेवा
ही तो मेरा कर्म है
हूँ वीर मैं
शहादत से मैं घबराता नहीं
शहीदों के साथ अमर हो जाऊँ
यही तो मेरा स्वाभिमान है
तिरंगा फहराना मेरा अभिमान है
माँ भारती का लाल
यही मेरी पहचान है।।

इन्सानियत

कविराज - देवेंद्र कुमार
एम.ए. संस्कृत

वानर दु:खियारा मर रहा,
पूजते हो हनुमान,
परपीड़ा से कोई दुख नहीं,
कैसे हो इन्सान... !

माता पिता की सेवा नहीं,
घूमते हो चारधाम,
माता असहाय रो रही,
कैसे हो इन्सान... !

मंदिर की चौखट पर,
करते हो खूब दान,
कोई बेचारा भूखा मर रहा,
कैसे हो इन्सान... !

अन्न धन का अथाह भंडार,
कहलाते हो धनवान,
एक पैसा भी दान न किया,
कैसे हो इन्सान... !

धर्म अधर्म का बोध नहीं,
प्राणी वह निष्प्राण,
मन में जरा भी ममता नहीं,
कैसे हो इन्सान... !

पूजा से कोई लाभ नहीं,
किया न जो सम्मान,
गिरे को कभी उठाया नहीं,
कैसे हो इन्सान.. !

इन्सान होकर इंसानियत नहीं,
उसको सहस्त्र प्रणाम,
जीवों पर जिसको दया नहीं,
कैसे वो इन्सान... !!

मानुष व्यथा

अहो ! मनुज मनुज का क्या धर्म यही है,
हाय ! मानवता का क्या कर्म यही है,
निंद्रित चक्षु भी देख सकी ना जो सपना,
हृदय विदारक को कैसे कहें भला अपना !

नि:शब्द हूं व्यक्त करूं कैसे, है मुझे संताप क्या,
नाथ !छिपा है आपसे जग का कोई आतप क्या,
कहूं क्या अब शेष क्या सब कुछ अभिव्यक्त है,
अव्यक्त हो आप विभो ! सर्वस्व आपको प्रत्यक्ष है !

क्षणिक जीवन के बचे अकाट्य दिन दो-चार,
नाथ ! दिए क्यों आपने अकथ्य दुर्दिन बेविचार,
जन्म नर का दिया क्यों किस अर्थ किस भोग,
किस अधम पाप का है देव ! यह जीव उपभोग !

अधम ही सही किंचित् करते कुछ विचार,
पशुओं में भी देते तो करते सहर्ष स्वीकार,
विचरते निश्चित होकर करते नित्य वनविहार,
निष्कपट प्रेमपूर्वक करते स्वच्छ अन्नाहार !

जग में मिलता है खेल कपट छल-बल का,
मानव पतित हो रहा किंचित् दल-दल सा,
प्रभो ! मिला किस पाप का यह फल यहां,
जिह्वा से और करता है कौन कत्ल कहां !

मानुष के दो रूप जग में सदा मुझे दिखते हैं,
करनी और कथनी अलग-अलग लिए फिरते हैं,
मनुष्य का ऐसा भेद भला कौन मिटा पाएगा,
नाथ ! तारने अवतार कौन-सा अब आएगा !!

आज की नारी

राजेश कुमार शाह
शोधार्थी (इतिहास विभाग)

पथ–पथ पर सरल, सुगम दृढ़ता का पक्षपात थी,
युगों–युगों की सती प्रथा उसके लिए अभिशाप थी।
डटी रही जो लक्ष्मीबाई बलिदान का प्रतिपात थी,
हाय! विडम्बना कुरीतियों की उस कोमल हृदय पर आघात थी।
वीरों के संग वीरांगना का वो रूप और वो मेल देखा,
मैंने नारी की परिस्थितियों का अनोखा खेल देखा।
विधाता भी न कर पाया जिसकी सहजता का न्याय,
फिर मैं क्या उस निश्चय का परिहार करूं,
क्या लिखूं उसकी शोभा में, अपने शब्दों का उद्धार करूं।
मैंने कई बार उस सौन्दर्य पर अन्याय का घाव देखा,
मैंने माता के रूप में उसका अत्यन्त ही प्रेम भाव देखा।
कल्पित दृष्टि से जब भी कोई दानव भ्रष्ट हुआ,
तब समस्त सृष्टि के लिए उस 'काली नारी' का उत्कृष्ट हुआ।
मेरे हृदय के भावों से नमन है हर उस नारी को,
जिसकी असहनीय पीड़ा से वंशों का उद्‌गम्य हुआ।
उस पावन रूप का हर वर्णन अशब्दीय है,
जिसने हर युग में अपनी दक्षता का परिचय दिया।
दर्पण व श्रृंगार उसकी सुन्दरता का एक आवरण है,
प्रकृति की संध्या बेला फिर क्यों उसके लिए एक दूषित वातावरण है।
ना उसको तुम आज फिर कमजोर करो,
वीराने में उसको हरने की ना तुम भूल करो,
वो गृहणी है, वो देवी है वह हर कला से सक्षम है

कोई काल क्या उसका भक्षण करे जो खुद देवों का संरक्षण है।
वह भयमुक्त है वह शक्ति है,
वह हर युग की गर्जना है,
वह आज की नारी है.....

नये कवि की नई रचना

प्रदीप

बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

एक दिन वह था सोच रहा
समय का कुछ उपयोग करूँ
कविता जैसा कुछ तो रचूँ
कागज में खुद को व्यक्त करूँ
जो अन्तर्मन यूँ ढूँढ़ रहा
उसको भी मैं पहचान सकूँ।।

कभी पहले उसने लिखा नहीं
तो काव्य–चक्षु अभी खुला नहीं
जब लगी छलाँग तो पता चला
गहराई तो सागर की पता ही नहीं।।

न छंद सही ना रस सही
न अलंकार और न लय सही
अभी जो लिखना शुरु किया है
तो फिर कैसे होंगे भाव सही।।

महसूस किया लेखन को जब
कुछ एक काव्य पाठ सुने
कम शब्द चुने सशक्त चुने
कुछ पंक्तियाँ पूर्ण प्रवाह बुने
फिर काम किया तुकबंदी पर तो
कविता की रसधार बने।।

अब हुआ कार्य इस कविता का
तब कवि था चौदिस झूम रहा
कि कहाँ प्रस्तुत कहाँ रखूँ
किस मंच और महफिल इसे पढ़ूँ
यह रह ना जाए मुझ तक सीमित
इसका कैसे मैं उद्धार करूँ।।
जब मंच दिखे कोई बड़ा इसे
तब शायद इसको जगह मिले
पड़ी रही इक कोने में मानो
उठने की ना वजह मिले।।

ये सब मँझे हुए खिलाड़ी हैं भई
तू कुछ तो टक्कर दे रहा है
क्यूँ अभी से थक कर बैठा है
अभी–अभी तेरी सुबह हुई है
तू बस उठकर ही तो बैठा है।।

फिर सोचा दिल पर हाथ रखा
समझाया खुद को बना सखा
ये इन मंचो पर क्या ही रखा
अब कर तू काव्य अलंकृत इतना
कि करे इशारे होए बखान।।

पर यहाँ हर मोड़ पर असुर खड़े हैं
और आलोचक भी भरे पड़े हैं
उन सबसे हमको बचना है
क्योंकि....
यह ने कवि की नई रचना है।।

पलायन : पहाड़ का दर्द

प्रवीण श्रीवाल
बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

बल सुण रै दीदा तैरा सौं
अब नी रान्दू मीं अपणा गौं
भैजी मन च होंयू मेरू उदास
कन छोड़ी हमुन पहाड़ की स्या मिठास
कब ओला सी दिन
अर बक ओलू सू विकास
मेरा गौं मां मनिखि नि रयां
कु पुछालु कि कै मौं हवा जंया
न छुई न बात न बौंण न घर
अपणी बात अफूमां लगाया
न घिंडूडी की फर न घुघुती घुर
न गोर बाखर तैं अब बाघै की डर
गूणी बांदुरु को राज भैर अगर
छिपडा मकडों को राज भीतर
मेरा गौं मां तुम शौक से जयां
इखुली पकमां अर इखुली खाय्यां
बाँजी पोडिन खेती पाती
राशन पाणी अफु सणी ल्हिजयां
न ब्यौ बरात न बाजों कु साज
न खुद भटुली न पैंतुली पराज
न चुल्ला की रोटी न लडबडी दाल
हरचिनी पतला पंगत कू रिवाज
अकलाकंठ मां रे ग्यों दीदा
कैमां बच्याण कैका धौरा जों
बल सुण रै दीदा तैरा सौं
जब नी रान्दू मीं अपणा गौं।

आत्मसंशय

अंकिता सकलानी
बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

आत्म संशय के बने इस गोरस को,
विचार मथनी से अपनी मथ दो ना
अंधकार बने इस जीने में
कुछ क्षण प्रकाश के कर दो न।
सफेद कागज सा ये मन मेरा
संसार में बिखरे रंग कई,
कुछ की चाह मेरे मन में,
सफेद हरा और थोडा कत्थई
मिलाकर इन संसार के रंगों को
जीवन के चित्र में भर दो ना
आत्म संशय के बने इस गोरस को,
विचार मथनी से अपनी मथ दो ना
क्षण भर के इस जीवन में
एक कथा अनंत सी मलखनी है
बिखरे जीवन के रंगों से
एक तस्वीर रंगीन सी बननी है,
टूटे माला के उन मोती को,
फिर से एक डोर में कस दो न
आत्म संशय के बने इस गोरस को,
विचार मथनी से अपनी मथ दो ना।

माँ हिन्दी

लव पुरी
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

भाषा नहीं भाव है हिंदी

भावों की मुखररत प्राण है हिंदी

गीतों की सुरभित परछाई है हिंदी

मां सी सरल स्वभाव है हिंदी

गागर में सागर सी है हिंदी

पर नभ से अचधक विराट है हिंदी

सूर, मीरा, तुलसी ने इसे घड़ा

निराला, दिनकर और महादेवी की पहचान है हिंदी

सगुण निर्गुण की धार है हिंदी

स्वराज की भावना का सार है हिंदी

घनानंद बिहारी पद्माकर ने इसे बढ़ाया

खुसरो, रसखान जायसी की प्राण है हिंदी

कामायनी सा प्रेम है हिंदी

पर रश्मिरथी सा तेज है हिंदी

तुलसी की मानस का ज्ञान है हिंदी

भाव बंधन की पतवार है हिंदी

विश्व में सबसे न्यारी है हिंदी

इसलिए मुझे मेरी मां जितनी प्यारी है हिंदी।

तुम ही बोलो

मंदीप कोटनाला
बी.एससी. पंचम सेमेस्टर

आखिर मैं जाऊं किधर
बोलो मैं जाऊं किधर
चलो मेरी छोड़ो तुम ही बोलो
मैं रहूं किधर।
मेरे सुंदर घर को तुमने इसलिए उजाड़ दिया
क्योंकि सूखे पत्ते उसके गिर रहे थे तुम्हारे आंगन
अपना ही बस सोचा तुमने,
मेरा घर उजाड़ दिया
बोलो मैं जाऊं किधर।
इधर–उधर भटकती हूं मैं,
रहने को कोई आवास नहीं
हरी–भरी सुंदर धरती में
हर जगह तुमने अपना बना लिया
मेरे पीछे भी तो होंगे कितने,
उनको तुम सब भुला गए
चलो मेरी छोड़ो ,
तुम ही बोलो .....
सुंदर–सुंदर हरियाली जैसी धरती को,
तुमने पल भर में मिट्टी में बदल दिया
प्रगति की दौड़ में पर्यावरण को तुम भूल गए,
जल–थल और पवन सब जगह तुमने बदल दिया,
अपना ही बस सोचा तुमने,
मेरा घर उजाड़ दिया।
तुम ही बोलो .....

मूक सिंहासन

नन्दनी सती
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

धृतराष्ट्र यहां मौन खड़े हैं,
बचाने दुर्योधन का पाप ।
क्या ? इस धराधाम पर,
बेटी होना है अभिशाप
राजनीति के द्रोण और,
भीष्म सदा से मौन है ।
पूछे पाकर किससे हम,
बेटियों का कातिल कौन है।
दुर्योधन तो मारा जायेगा,
आज नही तो कल।
जो प्रश्न! खड़े हैं सामने,
कौन ढूंढेगा इनका हल ।

कोई तो विदुर होगा,
जो न्याय पथ पर चलता हो ।
तोड़ेगा वो मौन यहां,
चाहें राजमहल में पलता हो ।
इतिहास पढ़ो हे सत्ताधीशों
नारी जब तक नारी है,
वो तब तक ही बेचारी है।
जब जब अंहकारी सत्ता
ने नारी का अपमान किया
तब सिंह भवानी बन नारी
ने असुरों का संहार किया ।।

गुरु का सम्मान

सूरज सेलवान
बी.एससी. प्रथम सेमेस्टर

सबसे बढ़कर इस दुनिया में,
सिर्फ गुरु का नाम है।
माता देती जन्म हमें और,
शिक्षा इनका काम है।

सोचो यदि गुरु ना हो तो,
हम कैसे बढ़ पाएंगे।
शिक्षक भी जब साथ ना हो तो,
सिर्फ पशु ही कहलाएंगे।

गुरु सबका जीवनसाथी है,
वह पथ प्रदर्शक है सबका।
देखे सबको एक दृष्टि से,
साथी है वह हम सबका।

गुरु का सब सम्मान करेंगे,
सम्मान तभी हम पाएंगे।
यदि बात ना मानो गुरु की,
जीवन भर पछताएंगे।

चाहोगे यदि तुम खुश रहना,
गुरु की आज्ञा मानो तुम।
गुरु सेवा को ही ईश्वर की,
सच्ची भक्ति मानो तुम।

बालपन और रविवार

प्रदीप
बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

मिलते हम सब जब शनि शाम को
तज़वीज यूँ कल की करते थे,
क्या, कैसे और कहाँ खेलना
फिर नियम भी तय कर जाते थे।

होती जब सुबह रविवार की
तन–मन सजग हो तो थे,
उस दिन खुदसे आँखे खुलती थीं
और अवाक् गमन कर जाते थे।

दिनभर खेला करते थे
यूँ बदन को मैला करते थे,
ना होश अभी घर जाने की
ना ही तमस से डरते थे।

पर जब भी अँधेरा होता थ
हमें याद तब आती थी,
कि पिछले रविवार को हमने
मार बहुत ही खाई थी।

फिर कह अलविदा यारों को
हम अपने घरों को चलते थे,
उसी राह पर मन में बापू
रौद्र रूप दिखते थे।

घर का आँगन पड़ते ही हम
दुबक–दुबक कर चलते थे।
बढ़े रसोई सबसे पहले
अम्मा जी से मिलते थे।

मिली मिठासी डाँट हमें तब
करुणा सा रूप बनाते थे,
अम्मा के माफ़ी देते ही हम
थोड़ी राहत पाते थे।

फिर दिखे आँख जब बापू की
हम थर–थर काँपा करते थे,
हर बार कसम हम खाते थे
वो जो क्षणभंगुर होते थे।

इस बार बचाले हे प्रभु!
यह विनती हर बार की होती थी,
पर हर बार अँधेरा होता था
हर बार पिटाई होती थी।

घर से दूर

विक्रम सिंह भण्डारी
बी.एड. तृतीय सेमेस्टर

घर से दूर

मैं भी निकल पडा घर से दूर, घर के वास्ते।

मजबूरियों को शौक नाम देते हुए

माँ–पापा की फटकार से तो दूर,

पर है कहाँ, उन सा राहगीर यहाँ।

बेशक आजाद मैं यहाँ,

पर है कहाँ, हमदर्द माँ सा यहाँ।

जिम्मेदारी कांधे रख, चला आया कुछ कर गुजरने की चाह लिए।

अनजान डगर में, लिए इरादे मजबूत ,

चला आया मैं भी घर से दूर घर के वास्ते।

दूर है मंजिल, रास्ते अधूरे अंधकारमय,

एक आस लिए पलकों पर अपने, चल दिया मैं भी घर से दूर घर के वास्ते।।

सैनिक

सूरज
एलएल.बी. चतुर्थ सेमेस्टर

शेर दहाड़ता है।
सीने दुश्मनों के चीरता हूँ
पहचान मेरी कुछ और नहीं
तिरंगे की शान है
बलिदान ही मेरा अभिमान है
तभी तो पहचान ही मेरी
तिरंगे की शान है
माँ भारती की सीमा को
सींचा मैंने अपने लहु से है
ना कोई मेरी जात है
ना कोई मेरा धर्म है
माँ भारती की सेवा
ही तो मेरा कर्म है
हूँ वीर मैं
शहादत से मैं घबराता नहीं
शहीदों के साथ अमर हो जाऊँ
यही तो मेरा स्वाभिमान है
तिरंगा फहराना मेरा अभिमान है
माँ भारती का लाल हूँ
यही मेरी पहचान है।

पलायनी पीड़ा/पीड़ित राह

प्रदीप
बी.एड. तृतीय सेमेस्टर

ऐ राह के बटोही खबरदार रहना
बरसों से जनशून्य हूँ जरा संभलना।

नुकीले काँटों ने पत्थरों के बीच
जगह बना ली है,
उसमें हरी दूब रास्ता छुपा रही है,
चाह नहीं मेरी मेहमान दुःखी जाए
राह के कीट उसे सताए,
इन नरम–नरम पैरों को जरा संभलकर उठाना,

ऐ राह के बटोही खबरदार रहना
बरसों से जनशून्य हूँ जरा संभलना।

जिस मिट्टी की लोग मिसाल दिया करते थे,
वो आज नरम पड़ी है,
वही मिट्टी किसी बटोही को तरस पड़ी है,
रात चाँद, दिन सूरज के सिवा कुछ
दिखता नहीं, आज कोई दिखा है,
अपना परिचय दे जाना।

ऐ राह के बटोही खबरदार रहना
बरसों से जनशून्य हूँ जरा संभलना।

खिदमत की जिनकी वो तो आज भूल गए,
इन्तजार उनका किया परन्तु आ तुम गए,
कोशिश पूरी रहेगी तुम्हें मंजिल दिखाने में,
पर बदमाश मौसम का कुछ कह नही सकता।

ऐ राह के बटोही खबरदार रहना
बरसों से जनशून्य हूँ जरा संभलना।

मंजिला को अगर तुम चले हो तो
कामनाशक्ति न बदलना
परिस्थिति कठिन देख पीछे ना मुड़ना
क्योंकि कंटीली झाड़ियाँ मुझे अदृश्य कर रही हैं,
वो अभिमानी हैं तो क्या न कभी
कमतर आँकना।

ऐ राह के बटोही खबरदार रहना
बरसों से जनशून्य हूँ जरा संभलना।

बहुत लालायित हूँ किसी के आहट के लिए
तुम्हारे आने से मन को शांति मिली है,
अब तो इन्तजार है उस दिन का जब
हर वो साथी आएगा और
चलते–चलते कोई गीत गुनगुनाएगा।

मेरी कहानी तो अभी बाकी है

प्रदीप

बी.एड. तृतीय सेमेस्टर

ऐ जवानी जरा रुक तो
अभी तो तेरी आहट गूँजी ही है,
कहना तो बहुत कुछ है तुमसे
मन की बात मगर
अब तू कहाँ राजी है।

ये इल्म़ तो था कि तू अभिमानी है
कदम रखते ही रंग दिखाती है,
भूल जाती है कि तेरा फर्ज़ है क्या
और कौन तेरा यथार्थ साथी है।

सुना है स्वर्ग सी अनुभूति है तेरी
तुझे, हमें कब सैर कराती है,
हम कहते–कहते थक चुके
या फिर....
तू सुनती आत्म रुहानी है।

माना कि तू इस्फ़हानी है
क्या ही तुझ बिन कहानी है,
सब नीरस है इस सफर में मगर
शायद तू अकेली रसधानी है।

लगता तो है कि तू फूल सदाबहार है
असल में बरसाती पर सुगंध तेरी नशीली है,
आ जाती है वक़्त पर हर किसी के आंगन में
बता मुझे....
क्या मेरी जमीन हुई अब पथरीली है।

न मोह सका किसी अजनबी को
न कर सका इश्क जवानी में,
माँगा तो कई बार था समय मैंने तुझसे
ऐ जवानी....
क्या तू इससे अनजानी है।

मुझे भी घर बसाना है
मुझे भी लक्ष्मी लानी है,
तू अलविदा कह दे अगर मुझे
तो यह केवल मेरी...
कल्पना मात्र रह जानी है।
एक ख़्वाब बचा है मेरा जिस पर
सजग बुद्धि, देह अब भी
मेहनतानी है,
जिसे पाने की इच्छा में तू सिमट गई
शायद तुझे, मुझ पर बदगुमानी है।

तय लक्ष्य था मेरा बचपन से
उसमें न किसी की मदद, न रहनुमाई है,
वैसे जानती तू सब है
ऐ मेरे दोस्त....
अब क्या तुझे नित्य कथा समझानी है।

पाना है सच को मुझे
झूठ की व्यथा दरकिनार करनी है,
बगैर तेरे यह कार्य मुमकिन नहीं
यह तू समझ ले....
क्या अभी तेरा जाना जरूरी है।

कुछ बरस ठहर जाए तो अगर तू
बस कथा अब पूर्ण होनी ही है,
दुखों का बोझ यूँ न बढ़ा,
एकदम से....
भई तू इतना भी क्या विधानी है।

माना कि तेरी अहमियत मैं समझा नहीं
पर किस्मत ने की बेइमानी थी,
भटक गया था गलियों में,
मैं उस वक्त भीड़ में....
जब तू मेरे चौखट पर आई थी।

अब दिल पर पत्थर रखूँ तो कितने
सपनों की बची कई झाँकी है,
जाने की बात न कर जवानी
समझा कर....
मेरी कहानी तो अभी बाकी है।

एक वकील

प्रियंका थापा
एलएलबी 4 सेमेस्टर

एक वकील की काली पोशाक
काले वस्त्र पहनते हैं ,
चरित्र काला ना समझिये !!
हम व्यक्ति की सत्यता दिखाते हैं ,
हमें अपना सहारा समझिए !!
तर्क वितर्क करके सच्चाई उजागर करते हैं ,
दबी हुई वास्तविकता हम दिखाया करते हैं !!
आपका विश्वास सदा कानून में बनाये रखते हैं ,
देश और देशवासियो की सेवा के लिए कार्य करते हैं !!
इसलिए काले वस्त्र पहनते हैं ,
चरित्र काला ना समझिये !!!!

आज का मनुष्य

कोमल चन्द
बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर

हर खुशी है दिमाग में,
पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं।
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
जिन्दगी के लिए वक्त नहीं।।

माँ की लोरी का एहसास तो है,
पर माँ कहने का वक्त नहीं।
सारे रिश्तों को हम खो चुके,
अब इन्हें दफनाने के लिए वक्त नहीं।।

आँखों में है नींद भरी,
पर सोने के लिए वक्त नहीं।
दिल है दु:खों से भरा हुआ,
पर रोने के लिए वक्त नहीं।

पैसे की दौड़ में ऐसे दौड़े कि,
थकने का भी वक्त नहीं।
पराये एहसासों की कद्र नहीं,
अपने सपनों के लिए वक्त नहीं।।

तू ही बता ऐ जिन्दगी,
क्यों इस जिन्दगी में कोई बात नहीं।
कि हर पल मरने वालों को,
दिल से मरने का भी वक्त नहीं।।

टी.वी. और साहब

प्रदीप
बी.एड. तृतीय सेमेस्टर

हँसूं, रोऊँ या चिल्लाऊँ
यह भाव ही मन में आता है
जब कोई साहब टी.वी. पर आता है।

आँखें चमक उठती हैं
मन शांति की ओर जाना शुरु होता है
पर फिर उथल–पुथल शुरु होती है
जब कोई साहब टी.वी. पर आता है।

कहता है; यह वक्त हर वक्त जैसा नहीं
इस वक्त कुछ नया नियम सख़्त होगा
पर फिर पुराने से बदतर होता है
ज्यों ही कोई साहब टी.वी. से जाता है।

फिर जब बदतर होता है
कम्बख़्त साहब फिर टी.वी. पर होता है।
दुखड़े सुनाता, सख़्त हिदायत देता
और कुछ को गरियाता है
जब भी साहब टी.वी. पर आता है।

पर अब साहब टी.वी. पर कम ही आता है
सुना है वही भ्रष्टियों से मिलाता है
ओ हो! क्या हुआ, क्या करें
बस विद्यार्थी देखते रह जाता है।
अब क्या, वही पुराना टी.वी.
वही पुराना विद्यार्थी वही दौर, वही संघर्ष
बस टी.वी. पर दृश्य अलग होता है
और वह साहब भी बदल जाता है।

माँ की ममता

नमरा अहमद
(एन.एस.एस.) बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

प्यारी माँ मुझको तेरी दुआ चाहिए
तेरे आँचल की ठंडी हवा चाहिए
लोरी गा–गाकर मुझको सुलाती है तू
मुझको तेरी प्यारी सी दुआ चाहिए
मुस्कराकर सवेरे–सवेरे मुझको जगाती है तू
मुझको इसके सिवा और क्या चाहिए

तेरी ममता के साये में हम फूले–फले
थाम कर तेरी ऊँगली मैं बढ़ती चलूँ
आसरा बस तेरे प्यार का चाहिए
प्यारी माँ मुझको तेरी दुआ चाहिए

तेरी खिदमत से दुनिया में असमत मेरी
तेरे कदमों के नीचे है जन्नत मेरी
उम्र भर सर पर साया तेरा चाहिए
प्यारी माँ मुझको तेरी दुआ चाहिए
प्यारी माँ बस मुझको तेरी दुआ चाहिए।

Challenges of Education System in India: Beyond Degrees to Meaningful Livelihoods

Prof. G.P. Dang
Department of Commerce

Introduction:

Education is often hailed as the key to unlocking a brighter future that empowers individuals with the knowledge, skills, and abilities to thrive in an increasingly competitive world. However, India faces a different reality of the education system, as individuals availing education in India often confronts with a bundle of challenges and hurdles. It is noticed that despite achieving a reasonable literacy rate, the country struggles with a huge challenge of the disconnect between education and meaningful livelihoods. This issue has far-reaching implications that affect not only the individuals who are unable to secure gainful employment but also their families and the overall economic development of the nation.

The education system in India faces numerous challenges due to its predominant focus on academic degrees rather than focusing on practical knowledge and essential skills required for attaining and carrying on jobs. This imbalance in the academic qualification and lack of requisite skills creates notable gap between the students learning and their practical capabilities, which are essentially required in the real-world job market. As a result, a large group of individuals aspiring to be employed and acquire the jobs find themselves inadequately prepared to handle the practical and real-life challenges of professional life. They find themselves incompetent to apply practical and creative knowledge that are in reality required to acquire jobs as well as to sustain and survive in their workplaces.

The prevailing emphasis on merely obtaining academic degrees often overshadows the relevance and importance of nurturing creativity, critical thinking, and problem-solving abilities. In consequence, these individuals face a mismatch between their theoretical knowledge and the practical expertise demanded by employers in workplaces. This mismatch in their abilities eventually leads to either lower-paying jobs or, more unfortunately, unemployment.

It is observed that the Indian Education System severely struggles in imparting education that equips individuals in a manner that they may become capable to transform their education qualification into the productive workforce. They often face significant challenges in acquiring desired jobs as per their academic qualifications due to the lack of practical skills and knowledge required in the workplaces. In consequence, they are usually unable to justify their academic degrees with their job profiles. Considering the present scenario of the Indian Education System, as well as the challenges that are being faced by the individuals in converting their academic achievements into employment, it is realised that there is a dire need to introduce bold reforms that should truly focus, specifically at ground level, on improving the practical and creative skills of individuals. A re-evaluation and reassessment of education system, that not only prioritises theoretical

understanding, but also emphasises practical application and skill development, is crucial to bridge the existing gap. Without such transformative changes, the persistent cycle of underemployment and the disconnect between education and employment will hinder the realisation of the full potential of the workforce of the country.

The present research attempts to address significant challenges that are being faced by individuals pursuing education in India with the goal of securing employment. The study delves into the shortcomings within the Indian education system that hinder the career growth of youth. Moreover, efforts have been made to give some meaningful suggestions for the policymakers that can be implemented in order to make relevant improvements in the Indian education system.

Challenges of Education System in India:

There are significant prevailing challenges which are being faced by the individuals, who aspire to pursue higher education in India with the goal of securing reasonable employment. Due to the various constraints involved in the education system of India, these individuals often confront with considerable challenges that hinder their ability to adequately prepare themselves for the requirements of the real-life workplace environment. The following are the various challenges that are being faced in India as regard to the Education System:

- The Degree Dilemma: In India, pursuing higher education has been considered as the path to secure a stable and well-paying job. This perception has led to a surge in the number of students enrolling in universities and colleges. Moreover, while registering for higher studies, the students are not even giving relevance to their aptitude or interest in a particular field of study. They are just focusing on taking admissions in colleges or universities, irrespective of their field of study. This results in a large number of graduates with degrees but a severe shortage of skilled and employable individuals. The reason behind the same is that the emphasis of the Indian education system is on rote learning and theoretical knowledge instead on the qualitative and practical learning. Students are often burdened with memorising vast amounts of information without developing critical thinking, problem-solving, and practical skills that are essential for success in the job market. This disconnect between education and the demands of the labour market leaves many graduates ill-equipped to navigate the complexities of the modern work environment.
- The Unemployment Issue: The mismatch between education and employment opportunities is reflected in the high unemployment rates among Indian graduates. India struggles with a huge unemployment rate among graduates that highlights the inadequacy of the current education system in preparing students for the job market. The unemployment crisis among graduates is particularly acute for certain social groups, such as women and individuals from marginalised communities. These groups face additional barriers to employment due to societal biases, lack of access to quality education, and limited opportunities for skill development.
- The Underemployment Trap: It is seen that even those graduates who are able to secure employment often find themselves trapped in low-paying jobs that do not fully utilise their skills and qualifications. This underemployment phenomenon is prevalent across various sectors and industries. It is found that employed graduates in India are often engaged in jobs that require lower levels of education and skills. Underemployment not only affects the earning potential of individuals but also hampers their career prospects and job satisfaction. It also contributes to the overall economic inefficiency, as skilled workers are unable to contribute their full potential to the growth and development of the country.

Suggestions to Overcome the Challenges of Indian Education System:

- There is a dire need to make significant improvements in the education system of India in order to overcome the challenges that are being faced by the individuals while pursuing education in India. The following are some suggestions that can be implemented by the policy makers to improve the education system of India:
- Rethinking the Education Paradigm: Addressing the challenges of acquiring education in India requires a comprehensive overhaul of the

education system. The focus must shift from rote learning to empowering critical thinking, problem-solving, and creative abilities. The curriculum should be thoroughly revised to align with the demands of the job market and equip students with skills that are relevant to the evolving needs of the economy. Vocational and technical education should be promoted to provide students with practical skills and hands-on experience that can lead to immediate employment opportunities. Apprenticeship programs and internships should be encouraged to bridge the gap between academia and the workplace. Investment in early childhood education is also crucial for laying a strong foundation for lifelong learning and success. Quality early childhood education can help children in developing essential cognitive and social-emotional skills that are essential for future academic achievement and employability.

- **Promoting Faculty Training Programmes:** Merely making amendments in the education paradigm is not sufficient to improve the education system in India at ground level. The execution of this improvement is done by the faculties, and therefore, they are required to be well equipped with the aptitude to execute the policies made for improving the education system. It can be evident from the New Education Policy (NEP), which is a comprehensive reform made by the appropriate policymakers. The policy focuses on empowering practical and creative skills of individuals that may prepare them for getting reasonable employment opportunities. It is however realised that even these comprehensive reforms could not provide fruitful or productive results, as the faculties of the educational institutions are not able to understand and explore the true potential of the programme. It, therefore, becomes necessary to provide comprehensive training to teachers on modern teaching methodologies, industry trends, and real-world applications of education, so that they can make necessary improvements in their teaching methods. This would eventually help aspirants in transforming their academic qualification into employment.
- **Introducing Skill-Based Programmes and Promoting Entrepreneurship:** Apart from giving theoretical academic knowledge, Indian education system must focus on introducing vocational training programs at the secondary and higher secondary levels. This would help students in getting equipped with employable skills, which are required to get jobs. In this regard, partnership with various industries can be done to establish apprenticeship and internships programs to expose students to real-world work environments. Integration of entrepreneurship education into school and college curricula must be done to empower an entrepreneurial mindset. This would encourage students to start their own businesses that would eventually lead to the economic growth of the country. It is, however, necessary to note down that the skill based programmes as well as entrepreneurship skills development programmes must be implemented and executed at the ground level. In order to have a control on its true execution, continuous monitoring and evaluation must be done.
- **Enhancing Career Counseling and Career Guidance Services:** The comprehensive career counseling services to students at all levels are required to be made so that students may identify their interests, aptitudes, and potential career paths. Necessary workshops, seminars, and training programs must be offered to prepare students for job interviews, resume writing, and job search strategies.
- **Promoting Lifelong Learning:** In a rapidly changing

world, education cannot be confined to the walls of a classroom. Lifelong learning has become essential for individuals to adapt to new technologies, evolving job requirements, and the changing nature of work. The government, educational institutions, and private sector companies should collaborate to create opportunities for continuous learning and skill development throughout an individual's career.

- **Addressing Social Barriers:** To ensure equal access to quality education and employment opportunities, it is imperative to address the social barriers that prevent certain groups from fully participating in the education and workforce. This includes addressing gender inequality, caste-based discrimination, and regional disparities in access to education and employment. Targeted interventions and affirmative action policies can help in leveling the playing field and creating a more inclusive society.

Conclusion:

The education system of India carries significant challenges, due to which it is unable to contribute to improving the employable skills of individuals. This prevailing weakness in the education system in India restricts the individuals in getting their desired jobs, even after attaining the requisite academic qualification and degrees. This is due to the fact that the education system in India predominantly focuses on providing degree-oriented education, instead of focusing on providing practical and creative skills that may help them in getting employment opportunities. The relevant practical skills and creative abilities can help individuals in preparing themselves for acquiring jobs as well as to sustain there. It is worth mentioning here that the National Education Policy (NEP) carries revolutionary reforms. NEP has been adopted by majority of the Central Universities and some of the State Universities. However, its practical implementation is a question mark as there are thousands of students studying in UG and PG courses, where it seems to be difficult to provide students the relevant choices of opting interdisciplinary and multidisciplinary courses. Moreover, it is a challenging task for the academic institutions to arrange practical training and internship for all the students. Under NEP, the UGC has given a framework of developing the curriculum for the uniformity in the education system of the entire country, whereas, Universities across India are not alike by resources, capabilities and capacities. Merely making policies, without giving due consideration to their feasibility and practicability, will not serve the true purpose until the policymakers do not get familiar with the ground reality. It is often seen that the Universities struggle with the limited budget that prevent them from adequately enhancing their infrastructure and meeting the needs of the university. There is a lack of requisite training programmes that are required and must be arranged for the development of faculties while implementing any major policies. The syllabi developed by the policymakers often seem to justify the famous saying "the old wine in a new bottle", as no concrete results can be achieved by merely reforming the syllabus. The various complexities and challenges prevailing as per Indian scenario, such as diverse geographical conditions, must be considered while formulating any policies. For instance, HNB Garhwal University is located in the hilly terrains and it mostly caters the students of the hilly region, which brings significant challenges for the University, as well as faculties to implement and execute the policies at ground level. The University is making all its efforts with the available funds and infrastructure to provide quality education to maximum students, however, the shortage of funds, inadequate infrastructure capabilities, lack of faculty-training programmes, refresher courses, etc., make it difficult to achieve the true goals of the academic reforms made for the improvement of the education system of India, including NEP.

It is, therefore, concluded that the challenges faced by students availing education in India are complex and multifaceted. However, under NEP, an effort has been made by the Indian government which seems to be worth admiring if policies outlined in the document are practically implemented at ground level. It is suggested that by introducing skill-based and entrepreneurship programmes, promoting lifelong learning, and addressing social barriers, the country can create an education system that may empower individuals with the skills, knowledge, and abilities they need to thrive in the 21st-century economy. This will not only improve the lives of individuals and their families but also contribute to the overall economic growth and prosperity of the nation, Department of Commerce

Postmodernism, its characteristics and its impact on society

Prof. Harbir Singh Randhawa
Department of English

The uniqueness of Postmodernism lies in the fact that its philosophers do not place its philosophy into a defined box of category. It is this aspect which in turn produces its current, coherent chaos and fluidity. Anything that seems to be out of place, individualistic and rebelling contemporary discourse is often termed to be "Postmodernist". To speak of the technical literary aspects of Postmodernism one must begin with the literary foundations laid by Barthes, Kristeva, and Derrida along with others like Rushdie and Shokof who gave the concepts of Hyperreality and Maximalism. In order to have a detailed insight into these aspects, let us individually explore each one of them.

Intertextuality: Intertextuality refers to those texts which gain meaning through referencing or signification of other texts. The language and its word in intertextuality gain an altogether a new meaning because of their references drawn which occur as a consequence of their literary backgrounds. The concept was first mentioned in 1966 by Julia Kristeva in Word, Dialogue and Novel and then later in The Bounded Text essays from 1966-67. In the words of Julia herself, "the literary word is an intersection of textual surfaces rather than a point (a fixed meaning), as a dialogue among several writings". Most Postmodernist works in literature are characteristic of borrowed slangs and texts taken from multiple ethnicities, languages, races and trends.

Pastiche: Pastiche means the mixing of multiple genres together to create a new narrative. Connected with intertextuality, pastiche intends to represent the chaos of postmodernism in a mosaic where the author "pastes" multiple elements of literature and society together. Pastiche often has traces of another acclaimed literary work which it deliberately celebrates through imitation. However this is not to be confused with parody for pastiche imitates a work of art not to mock it but to honour it. As Jameson suggests, pastiche is "the random cannibalization of all the styles of the past, the play of random stylistic allusion" Genres like temporal distortion and metafiction also come under the broader definition of pastiche. The emphasis of bigger narratives and their relevant existence as texts creates the presence of Pastiche in Postmodern literature. Many contemporary writers include elements of history, war, popular culture, fantasy, science and detective fiction in their works thereby giving them complications equally present in postmodern realities.

Metafiction: William H. Gass used the term 'Metafiction' in his 1970 essay titled, Philosophy and the Form of Fiction, for the first time. The word "metafiction" signals the kind of text that emphasizes its status as a text. By using devices like irony, metafiction brings about or questions the relationship between reality and literary fiction by addressing fictional illusion.

Notable examples of metafiction texts include, Kurt Vonnegut's Slaughterhouse-Five in 1969, Adam Douglas' The Hitchhiker's Guide to the Galaxy, 1979, Atwood's Blind Assassin in 2000 among others. Such metafictional illusion is also presented well by Murakami in his text After Dark, a part of this thesis.

Another related term – "historiographic metafiction" as coined by Linda Hutcheon, drew attention in the 1980s. This postmodernist fiction combines features of metafiction with history and narrates tales that actually happened in reality.

Minimalism and Maximalism: Minimalism is a literary device characterised by surface description of situations and images that are presented in terse style and an economy of words. Minimalist authors and playwrights deliberately choose to be stingy with their expressions and often discuss an ordinary, even mundane subject matter. A perfect example of minimalist art would be Samuel Beckett's Waiting for Godot.

Maximalism in turn was a reaction to the minimalist literary tendencies in literature. The term was coined by Daryush Shokof, a Germany based Iranian artist and film maker. When minimalism intends to make the narrative minute, clean, and low key; maximalism goes against such short descriptions and chooses to be as experimental as possible. Other postmodernist aspects such as intertextuality and metafiction further assist the maximalist to be immensely descriptive. According to Stefano Ercolino, the postmodern, maximalist novel is characteristic of, "a strong symbolic and morphological identity, with ten elements that define and structure it as a highly complex literary form: length, encyclopedic mode, dissonant chorality, diegetic exuberance, completeness, narrratorial omniscience, paranoid imagination, inter-semiocity, ethical commitment, and hybrid realm."

Irony, playfulness and black humour: Though not exclusive to Postmodernism, irony is an important part of its literature. A figure of speech which uses words which have different intended meanings, irony has mostly helped satirists to sharply express their ideas. Another postmodernist aspect of irony is "post-irony", as coined by author David Foster Wallace. This form of irony occasionally needs to be taken seriously while it is been 'unironic' about that idea. Unlike irony which is highly focused and brutal in its attack, post-irony mixes factors either by finding something serious in an absurd matter or by being completely vague about it. Black humour and playfulness are also the signature features of Postmodernism. Most Postmodernist authors choose very serious issues, often connected with the absurdism, conspiracy and disillusionment of the Post-war period and believe in presenting their works with dark ironic humour having hidden intended meanings.

Hyperreality, Technoculture and Magic Realism: Related with something what Baudrillard talks about in his Simulacra and Simulation, Hyperreality is a semiotic literary tendency which refers to the inability of one's consciousness to differentiate between the reality and a simulation of that reality. As mentioned by Baudrillard himself, hyperreality is "the generation by models of a real without origin or reality" Postmodernism being highly characteristic of technology and advancement, often talks of hyperreal situations in literary texts where readers, authors or the characters themselves are present in such situations which seem as highly advanced extensions of reality. Technological advancement also leads to the overflow of information and science hence leading to the production of art literature related with science fiction, robots, disillusionment of humanity and Magic Realism.

Paranoia: Paranoid fiction implies a work of Postmodernist literature that explores the subjective nature of reality and how several ideologies and discourses of power alter this subjectivity. Such fiction can be characteristic of several other postmodernist tools such as the unreliable narrator, magic realism, dystopia and symbolism among others which assist paranoid literature to make itself a fantastic reality that often seems unreal after a detailed analysis. Beginning around the early 19th century, paranoia fully developed and became a chief feature of Postmodernist literature through the works of established writers of surreality, absurdism and science fiction.

Late Capitalism and Globalisation: Fredric Jameson termed postmodernism as the "cultural logic of late capitalism" and that it is a "political stance on the nature of multinational capitalism today". The advent of globalisation and its boom in the nineties led to the formation of the liberal, post industrial society characteristic of transnationalism and consumerism. Such socio-economic transformations and interactions of nations affected literature and produced identities filled with consumerist intentions and mental chaos, a feature hugely present in all the books selected in this thesis and otherwise. Its experimental nature apart, a major symptom of Postmodernism is Capitalism. Many capitalist tendencies and Marxist critical literary theories have

laid deep the foundations of Postmodernist literature. The influence of money and market on literature and its production is highly visible in the trends that literature forms today. A detailed analysis about this aspect shall be done in the next section below.

Disillusionment: absurdity and disillusionment with concerned environments is a distinguished feature of Postmodernism. A major cause behind such cynicism and paranoia is the decades of disorientation followed by the two World Wars. The lost intellectuals understood their wretchedness through the Nihilistic philosophies of Camus, Sartre and Nietzsche. The same existential crisis carried forward to the 60s and the later decades as poor socio-economic conditions attached themselves with globalisation and the mixing of cultures in various countries y the 90s. The consequence is, the modern educated global citizen who is the by-product of rising capitalism, liberalisation and socio-economic advancement occurring out of globalisation. When the disillusionment of modernists included one's exasperation with the cruelties of humanity; the disillusionment of Postmodernists involved mankind's failure with technology, governance and religion. The existence of disillusioned Postmodernist identities increased in number as the modern educated individual was not only faced by the personal, Modernist clashes of existence but also was burdened by the societal and economic pressures of capitalism, consumerism, multiculturalism and technology along with it.

The result being – the production of such literature that elaborately showcases confused, isolated identities that have created a shell around to protect themselves from ugly realities and disconnected societies. Major Postmodernist novels today have plots based on characters involved in constant rat-race and self alienation. They display how capitalism and globalisation have transformed communities into societies filled with a multitude of peoples that are often unable to connect with each other. Altogether,literature today therefore, is not simply a collection of images and writings that produce a concurrent change in the society, but instead, literature is a piece of rapidly flowing influx of images and ideas that we, as consumers, prefer to read. As put by Struken and Cartwright, when we chose what we aim to acquire, we also end up achieving that in part. If literature shows Postcolonial countries like India as having filled with marginalisation and social evils that need to be rectified, there is a chance that we might end up actually rectifying some parts of our society. Negative side aside, such promotion of ideas also has in some way helped these developing countries like India to establish an international base and work on its development in the right manner. It has given voice to the marginalised and the deprived thereby declaring the influence and importance of literature on Society once again on pan-global form.

Quote

"Learning is not attained by chance, it must be sought for with ardor and attended to with diligence."

-Abigail Adams

Jahangir: His Personality and Character

Prof. Anju Bali Pandey
Department of History

Jahangir is one of the most interesting figures in Mughal history. There is much in his character that deserved to the condemned, but there is a great deal with that entitles him to be placed among the most fascinating personalities of Indian History". Dr. Ishwari Prasad.

According to Dr. Beni Prasad, "Jauntly to dismiss him. Jahangir a hard hearted fickle minded tyrant, soaked in wine and sunk in debauch as more than one modern writer has done, is at once unscientific unjust."

Jahangir died in the ---- of 7th Nov. 1627 near ----. He was then 58 years of age. He was buried in a beautiful garden at Shahdara near Lahore.

He was a devoted husband, and through poligamous he knew, whert it was to love a wife when he lost his first wife, (the Jaipur Princes) he refused to touch drinks and food for four days. He was keenly devoted to Nur Jahan. It was unthinkable for him to do any important work without consulting her. He was good friend and remembered and promoted them when he ascended the throne. He wishes the welfare of his subjects. Jahangir was a highly cultured and educated prince. He mastered Persian and Turki. He knew Hindi, Arabic and a few other languages. His knowledge of the Persian language was remarkable. Tuzuk-i-Jahangir was an excellent example of his composition. He was a many of great literary taste. He loved Poetry, Music, Painting, architecture and other fine arts. He was taking keen interest in Botany, Zoology and Medicine. He was fond of the beauties of nature of flowers, brooks, rivers, valleys and mountains. In his book Tuzuk-i-Jahangir he gives a vivid account of birds and animals. It seems that he was a love of animals. It seems that he was a specialist in Zoology.

Jahangir was keenly interested in Painting. He used to say that he was sure to find out as to who were the authors of various Painting. He writes in his memoirs, "my liking for painting and practice in judging it have arrived at such a point that when any work is brought before me either of the deceased artists or the present day, without the name being told me, I say on the spur of the moment that it is the work of such and such a man". (Jahangir Memoirs)

Jahangir was also interested in architecture. He altered the design of Akbar's tomb at Sikandra and partly built it Itimaduddaula Tomb near Agra is one of the finest building of his time. Under his patronage a great Mosque was built in Lahore Gardeas : Jahangir took great delight in laying out five gardens. Some of his gardens in Kashmir (Shalimar) and Lahore were laid out at his order.

Jahangir made beautiful currency and beautiful modal. Jahangir had fine taste in Dresses and pleasures of the Tabla. He praised the Mango as one of the best fruits and was fond of delicious Cherries of Kabul.

Defects of Jahangir in his character

Jahangirs main defects were his addiction to ease, drinks and sensual pleasures. His natural habit of falling under someone's control. As a Prince he was under the influence of his friends, as a ruler at first he was under the influence of Nur Jahan's Junta, and subsequently he came under the influence of his ambitious queen. He writes in his Memoirs that he started drinking wine at the age of 18, gradually. he increased the number of the cups of wine to 20. He was so much habituated to drinking that wine ceased

to intoxicate him and he changed to spirit. But he abstained from drinking on Thursday. Evening and from meat in Thursday and Sundays. The first being the day of his accession and the latter the Birthday of his father.

It is very difficult to define Jahangir's religious Belief. Sir Thomas Roe denounced him as an atheist. Some writers called him an eclectic or a devout Muslim or even a Christian.

Jahangir was a fairly successful ruler and administrator. He continued the administrative system of Akbar. He was not a constructive statesman who could initiate great reforms. The essential difference between his administration and that of his father was that the latter was on unfailing judge of Human character but Jahangir was swayed by other consideration.

Dr. Beni Prasad says, "Jahangir's reign on the whole was fruitful of peace and prosperity to the empire". Under him industry, and commerce progressed, painting reached its highest water mark, literature flourished as it had never done before. Tulsi Das composed the Ramayana which formed at first the Homer and the Bible, the Shakespeare and the Milton of the teeming Million of Northern India. He says, further, the political history of Jahangir's history is interesting enough, but its virtue lies in cultural development (Hist. of Jahangir pp. 430-438 Beni Prasad).

The late Sir Richard Buru, calls him a balanced and just personality.

Mahabat Khan Coup di etat

Immediately on the condition of peace with Shah Jahan the imperious Queen decided to reduce Mahabat Khan the greatest soldier and diplomat in the empire the submission. The following were the causes for this.

1. According to Dr. A. L. Srivastava during Shah Jahan's rebellion Mahabat Khan's prestige had risen considerably. He had to be employed to defeat Shah Jahan, so during the rebellion she said nothing to him.
2. Nur Jahan would not tolerate the existence of an indomitable personality like Mahabat Khan, who is view of his ability and achievements was not prepared to play a second fiddle to anyone.
3. Mahabat Khan would not like to take orders from any one except his patron and sovereign Jahangir.
4. Mahabat Khan resented the usurpation of power by Nur Jahan. Nur Jahan according to him was an ordinary women who was trying to dominate the court without caring for the loyal services of the trusted nobles of the empire.
5. Nur Jahan's candidate for the throne Shahryar was a good for nothing fellow. He was merely a tomb tool in the hands of his ambitious mother inlaw. On the other hand, Mahabat Khan supported the claims of Parvez who was in everyway more capable a Prime than Shahryaar and was not prepared to accept Nur Jahan's supremacy.
6. The Queen feared Mahabat Khan's ability and his devotion to the interests of Royal family and his dislike of herself. "On account of these reasons two powerful personages felt unable to live in peaces and Nur Jahan took early steps to encompass the ruins of the great generals" Dr. A. L. Srivastava. "Toward Coup" Mahabat Khan and Prince Parvez were together in Deccan in Burhanpur.

In alliance with her brother Asaf Khan, who was equally jealous of Mahabat, the Queen now framed charges of disloyalty and disobedience against the latter. The following were the charges-

(A) An imperial farman was issued asking him to send to court the elephant he had obtained in Bihar and Bengal during Shah Jahan's revolt.

(B) He was asked to furnish an account of the large sums of money collected by him from Jagirdars in the two provinces.

It was given in the Farma that if Mahabat failed to comply he was to be recalled to the court without delay. The Khan saw through the game and felt that Nur Jahan's plan was to disgrace him and to reduce him to dust. So be decided to proceed to the Punjab, where the Emperor happened to be at the time and represent his at the time and represent his case personally to his master.

With his 4 to 5,000 Rajput soldiers, he reached the vicinity of the imperial camp near the River Jhelum in March 1626. Jahangir had returned from Kashmir and was on his way to Kabul. He was to cross the River

Jhelum the next morning. The news of Mahabat Khan's approach creater a flutter in the Mughal camp. Instead of making arrangement for the disbandment of Mahabat troops the emperor only ordered him to remain where he was and the Queen chose to hurt him further. He was asked to explain why he had affianced his daughter to a noble Man's son named Barkhurdar without his precious permission of the court. Barkhurdar was summoned to court and was publicly disgraced and with his hand tied to his neck, sent to prison. The Dowry given to him by Mahabat was forfeited. Now Mahabat Khan decided to secure the person of the Emperor and strike a sudden blow to a the power of the Queen.

The Account of Revolt

According to Dr. A. L. Srivastava early in the morning of the next day, Mahabat at the head of the Rajput appeared suddenly before the imperial text. He had already detached about 2,000 of the horsemen to hold the bridge on the Jhelum and not to allow anyone to pass. Most of the imperial Army had gone to other side of the River, while the Emperor and the Queen with the handful of Men were still in the camp waiting to cross the river. Mahabat rode to the door of the imperial tent, and there alighted from his horse, when informed of this daring Act. Jahangir came out and took his seat in a Palaki. Mahabat came forward, saluted the Emperor and said that he had some to throw himself on his majesty's protection. He told further that he did not like to die at the hands of his enemy. Asaf Khan who was planning to his destruction. As he was talking to the emperor, his Rajput soldiers surrounded the royal camp. Jahangir wanted to give blow to Mahabat with his sword but he was dissuaded from doing so. He (Jahangir) agreed to account a horse and accompany Mahabat Jahangir was not allowed to go in and change his dress. The Emperor was next mounted on a elephant and taken to Mahabat's camp. Now Mahabat Khan tried to capture the Queen Nur Jahan. He came back but Nur Jahan had already crossed River Jhelum and went on the other side of the River. The Queen was unaware of Mahabasts coup. She was acquainted with two situation, when she crossed River Jhelum. She held a council of war, scolded her brother Asaf Khan for his negligence. She made arrangements for rescuing the King Jahangir.

Jahangir sent message to warm the Queen against such attempt. He sent his own ring to assure the Queen that the warming given was not under Mahabats influence but the indomitable queen could not believe. Accompanied by large number of troops she attempted to cross the River. But their was no proper leader to guide this operation. Quite a number of them were slain. Nur Jahan seated on an elephant received several wounds. Asaf Khan behaved throughout with weakness. He fled to the fort & at attack for safety.

After this failure Nur Jahan surrendered to Mahabat Khan and was permitted to join Jahangir Mahabat Khan's supremacy now complete. An army was sent against Asaf Khan at attack which secured his surrender. After about 2 months stay in the Punjab the emperor proceeded to Kabul, reconciling himself outwardly to Mahabats domination.

According to Dr. Srivastava, Mahabat was primarily as soldier and diplomat. He was not a statesman and administrator. His favourites mis-managed the affairs. It created resentment. At Kabul there was a quarrel between the Rajput troops and the Royal troops called Abadis. Mahabat became unpopular because 8 to 9000 Rajputs were killed. Mahabat became unpopular.

Besides Muslim public did not like the influence of Rajputs. This gave the an Astute Nur Jahan an opportunity to conspire against the general. Jahangir also gave impression that he was quite happy under the general.

The Period of Nur Jahan's influence:

The period of Nur Jahan's influence is usually considered in 2 divisons:-

1. 1611-1622 :- When her parents were still alive and exercised a wholesome restraint upon her ambition.
2. 1622-1627 :- When Jahangir himself was more or less an invalid the party politics became sharpened. In the 1st period according to Dr. Sharma, Khurram and Nur Jahan, were in alliance, in the 2nd they were antagonistic to each other. The marriage of Shahryar (born 1605), with Nur-

Jahan's daughter by Shes Afghan, Ladli Begum in 1620 introduced a fresh complication. Under these circumstance the division of the court into party's was inevitable. According to Dr. S. R. Sharma, at first there were only 2, the Junta and its opposition, later when the Junta broke itself there were more. Mahabat Khan throughout played an important role so an indefatigable opponent of the Parvenus as he considered Nur Jahans' relations and those whom he had exalted. In other words he stood forth as the champion of the older nobility and at one time went to the extent of advising the emperor against the party in power. It is also a known fact that Mahabat Khan also championed the cause of popular and pathetic Prince Khusrau adding another candidate to the party struggle in the court.

According to A. L. Srivastava "The result was that Nur Jahan's interference in the affairs of the state convulsed the empire in a civil was".

The result of party politics

The result of this party politics were many. Although in the beginning this strife played a dividend. Inspite of Jahangir's indifference to the state affaris because of excessive drinking. Nur Jahan carried out the administration very effectively. She had the cooperation of Khurram and so Khurram and so Khurram became the hero and won new territories like Mewar, Ahmednagar and Kanga. But there was other side of the picture also.

Shah Jahan's rebellion – Nur Jahan's party which had been governing the empire since 1612 began to show signs of disruption towards the end of 1621 Jahangir had wrecked his strong constitution. Nur Jahan grew alarmed. According to A. L. Srivasatava ambitious and dominating, she felt, tht in the event of emperor's death she would be deprived of the controlling authority and also her influence. She realized that there was no room in the empire for 2 masterful personalities like herself and Shah Jahan. So she decided to back oup Shahryar. In order to keep Shah Jahan away from throne, she obtained order from Jahangir to send Shah Jahan towards Kandhar and to leave Deccan where he was the governor. Shah Jahan was obliged to revolt. This resulted in the civil war between the father & the son.

Mahabat Khan's revolt (1626) - The result of this party politics was the revolt of Mahabat Khan in 1626. Mahabat Khan was the great enemy of Nur Jahan. During Shah Jahans' rebellion Mahabat Khan's prestige had risen considerably. Nur Jahan would not tolerate the existence of an indominate personality like Mahabat Kha. Mahabat Khan resented the usurpation of power by Nur Jahan because she was an ordinary women before marriage. He also considered Shahryars as a good for nothing fellow. On the other hand, Mahabat Khan supported the claims of Parvez, who was more capable than Shahryar. As soon as Shah Jahan had agreed to unconditional surrender Nur Jahan got the transfer of the Mahabat Khan to Bengal. Besides this she started insulting Mahabat Khan, so Mahabat Khan's coup de'tat started in March 1926.

Loss of Kandhar

According to A. L. Srivastava, towards the end of 1621, the Shah of Persia who must have been duly informed of the break up of Nur Jahan's Junta and the growing estragement between Nur Jahan and Shah Jahan sent a large force for the capture of Kandhar. Jahangir directed Shah Jahan to proceed towards Kandhar but the Prince revolted because of his jealously with Nur Jahan and Kandhar was lost.

The End of the Deccan war

In 1626 Nur Jahan recalled Mahabat Khan & appointed Khani Jaahan Lodhi to take charge of that province so the imperial prestige suffered under. Khani Jahan Lodi. He could not make any success under Malik Ambar. Khani Jahan also accepted bribe from Hamed Khan who succeeded Malik Ambar. So Deccan policy failed.

Conclusion

It is a fact that the history of Jahangir moves round party strife existing in Jahangir's court. In the beginning there was a great success because in Junta Khurram and Nur Jahan were together. But after 1622 there were revolts and rebellions. The influence of the Mughal Empire went down considerably as mentioned above

Vision for Quality of Education

Prof. Prashant Singh
Department of Chemistry

Quality education is the cornerstone of a thriving society, fostering personal growth, innovation, and social progress. A vision for the quality of education revolves around several key principles.

First and foremost, accessibility is essential. Quality education should be accessible to all, regardless of socio-economic status, geography, or background. This means ensuring equal opportunities for everyone and addressing disparities in resources, infrastructure, and teacher quality.

Second, a modern curriculum should prepare students for the challenges of the 21st century. This involves teaching not only traditional subjects but also critical thinking, problem-solving, digital literacy, and socio-emotional skills. Education should be adaptive and forward-looking, staying abreast of technological advancements and societal changes.

Third, high-quality educators are indispensable. Teachers should be well-trained, motivated, and supported in their professional development. They should inspire a love for learning, encouraging students to explore their interests and talents.

Fourth, assessment and evaluation methods should focus on holistic development, going beyond standardized testing to measure skills, creativity, and character. Education should foster creativity, curiosity, and a sense of ethics.

Fifth, collaboration between schools, families, and communities is pivotal. Engaged parents, involved communities, and partnerships with local businesses and organizations can enhance the learning experience and provide students with practical exposure.

In conclusion, the vision for quality education is one that is inclusive, forward-thinking, teacher-centric, and holistic. It equips students with the knowledge and skills they need to thrive in the ever-changing world, fostering well-rounded individuals who contribute positively to society.

Quote

"The more that you read, the more things you will know, the more that you learn, the more places you'll go."

Group of twenty - G20

Prof. Rakhi Upadhyay
Hindi Department

The G20 or Group of 20 is an intergovernmental forum comprising 19 countries and the European Union (EU). It works to address major issues related to the global economy, such as international financial stability, climate change mitigation and sustainable development.

The G20 is composed of most of the world's largest economies finance ministries, including both industrialised and developing nations; it accounts for around 80% of gross world product (GWP 75% of international trade, two-thirds of the global population and 60% of the world's land area

The G20 was founded in 1999 in response to several world economic crises Since 2008 it has convened at least once a year, with summits involving each member's or state, finance minister, or foreign minister, and other high-ranking officials; the EU is represented by the European Commission and the European Central Bank. Other countries international organizations and nongovernmental organizations are invited to attend the summits, some on a permanent basis.

In its 2009 summits, the G20 declared itself the primary venue for international economic and financial cooperation. The group's stature has risen during the subsequent decade, and it is recognised by analysts as exercising considerable global influence; it is also criticised for its limited membership, lack of enforcement powers, and for the alleged undermining of existing international institutions. Summits are often met with protests, particularly by anti-globalization groups.

G20 Summits :

Following is the list of G20 meetings held so far.

	Date	Host Country	Host City	Host Leader
1st	14-15 Nov 2008	United States	Washington DC	George W Bush
2nd	2 Apr 2009	United Kingdom	London	Gordon Brown
3rd	24-25 Sep 2009	United States	Pittsburgh	Barack Obama
4th	26-27 Jun 2010	Canada	Toronto	Stephen Harper
5th	11-12 Nov 2010	South Korea	Seoul	Lee Myungbak
6th	3-4 Nov 2011	France	Cannes	Nicolas Sarkozy
7th	18-19 Jun 2012	Mexico	San Jose del Cabo, Los Cabos	Felipe Calderon
8th	5-6 Sep 2013	Russia	Saint Petersburg	Vladimir Putin

	Date	Host Country	Host City	Host Leader
9th	15-16 Nov 2014	Australia	Brisbane	Tony Abbott
10th	15-16 Nov 2015	Turkey	Serik, Antalya	Recep Tayyip Erdogan
11th	4-5 Sep 2016	China	Hangzhou	Xi Jinping
12th	7-8 Jul 2017	Germany	Hamburg	Angela Merkel
13th	30 Nov -1 Dec 2018	Argentina	Buenos Aires	Mauricio Macri
14th	28-29 Jun 2019	Japan	Osaka	Shinzo Abe
15th	21-22 Nov 2020	Saudi Arabia	Riyadh	King Salman
16th	30-31 Oct 2021	Italy	Rome	Mario Draghi
17th	15-16 Nov 2022	Indonesia	Bali	Joko Widodo
18th	2023	India	New Delhi	Narendra Modi

The 18th 19th and 20th summits are scheduled in 2023, 2024, and 2025 in India, Brazil, and South Africa, respectively.

G20 Agenda in recent years :

- The main intention of the first G20 agenda was the growth of the global economy and to improve the structural factors affecting the global economy.
- The agenda during the second summit was a follow-up to the first. Certain organisations were given powers to be influential in working to retain and strengthen financial stability, such as the Financial Stability Board (FSB).
- At the Pittsburgh summit, the G20 agenda was to make strict rules for the banking sector to reduce financial risk to the government.
- "Recovery and a new beginning" were the themes of the fourth summit held in Toronto. Evaluation of progress in financial reform was a significant discussion subject, as was also global trade and growth.
- The Seoul summit discussed "Shared Growth Beyond Crisis". G20 also started the Multi-Year Action Plan (MYAP) during this summit. The plan works under nine pillars, including Human Resource Development, private investment, job creation, knowledge sharing etc.
- In the sixth summit held at Cannes, the Cannes Action Plan for Growth and Jobs Adaptation was instituted. Agricultural Market Information System (AMIS) was also discussed in this meeting.
- The seventh summit was held in Mexico. Unemployment in youth worldwide was the central issue of concern at this summit. And also, sustainable development, green growth and fighting against climate change were on the G20 agenda.
- The motto of the Saint Petersburg summit was "Boosting Economic Growth and Job Creation". Base Erosion and Profit Shifting (BEPS) was also introduced at this summit.
- The 2014 G20 summit in Brisbane saw an agenda focused on creating jobs and promoting resilience in the global economy. And also, the objective was to increase GDP by 2% with the help of National Growth Strategies (NGS).
- The Antalya G20 summit was the tenth summit. Migration and the refugee movement was the principal matter on the agenda for this summit. There were discussions on the fight against terrorism too.
- The eleventh summit in 2016 saw the agenda revolve around energy efficiency, international negotiation, and climate change.
- "Shaping an interconnected world" was the theme of the Hamburg summit in 2017. Fighting against terrorism also was a part of the agenda. Energy security was another highlight.
- The 2018 G20 summit in Buenos Aires was

focused on sustainable development. Food security was also a discussion topic.

- The fourteenth summit was held in Osaka, Japan. Ensuring global sustainability and development was the motto. Digital transformation, energy, climate, etc., were other topics.
- The Riyadh G20 summit in 2020 was virtual due to the COVID-19 pandemic. There were discussions on fighting COVID-19 and its after-effects on specific industries.
- "People, Planet and Prosperity" was the motto of the 2021 G20 summit hosted by Rome. Recovery from the pandemic and improving global health were on the agenda. Food security was also discussed.

18th G20 :

- India's G20 Presidency will work to promote this universal sense of one-ness. Hence our theme - 'One Earth, One Family, One Future'" – Prime Minister, , Narendra Modi
- December 1st, 2022 is a momentous day as India assumed the presidency of the G20 forum, taking over from Indonesia. As the largest democracy in the world, and the fastest growing economy, India's G20 presidency will play a crucial role in building upon the significant achievements of the previous 17 presidencies.
- As it takes the G20 Presidency, India is on a mission to bring about a shared global future for all through the Amrit Kaal initiative with a focus on the LiFE movement which aims to promote environmentally-conscious practices and a sustainable way of living. With a clear plan and a development-oriented approach, India aims to promote a rules-based order, peace and just growth for all. The 200+ events planned in the run up to the 2023 Summit will strengthen India's agenda and the six thematic priorities of India's G20 presidency.
- The G20 group of 19 countries and the EU was established in 1999 as a platform for Finance Ministers and Central Bank Governors to discuss international economic and financial issues. Together, the G20 countries account for almost two-thirds of the global population, 75% of global trade, and 85% of the world's GDP. In the wake of the global financial and economic crisis of 2007,

the G20 was elevated to the level of Heads of State/Government and was named the "premier forum for international economic cooperation."

- The G20 has two main tracks of engagement: the Finance Track for finance ministers and central bank governors and the Sherpa Track. The G20's proceedings are led by the Sherpas, who are appointed as personal envoys of the leaders of member nations.These Sherpas are responsible for overseeing the negotiations that occur throughout the year, deliberating on the agenda for the summit and coordinating the substantive work of the G20. Both tracks have working groups to address specific themes with representatives from relevant parties.
- Working groups this year will focus on global priority areas such as green development, climate finance, inclusive growth, digital economy, public infrastructure, technology transformation, and reforms for women empowerment for socio-economic progress. All these steps are taken to accelerate progress towards the Sustainable Development Goals and secure a better future for the generations to come.

India's G20 Presidency:

- India will convene the G20 Leaders' Summit for the first time in 2023, as 43 Heads of Delegations-the largest ever in the G20–will participate in the final New Delhi Summit in September later this year. As a nation committed to democracy and multilateralism, India's presidency will be a significant milestone as it seeks to find practical global solutions for the benefit of all and embody the idea of "Vasudhaiva Kutumbakam," or "the world is one family."
- The G20 Summit is held annually with a rotating presidency, and in 2023, India will hold the presidency. The group does not have a permanent

secretariat and is supported by the previous, current, and future holders of the presidency, known as the troika. In 2023, the troika consists of Indonesia, Brazil, and India.

- This summit will conclude a series of meetings throughout the year, with potential host cities for meetings from December 2022 to February 2023 including Bengaluru, Chandigarh, Chennai, Guwahati, Indore, Jodhpur, Khajuraho, Kolkata, Lucknow, Mumbai, Pune, Rann of Kutch, Surat, Thiruvananthapuram, and Udaipur.

Vasudhaiva Kutumbakam, which translates to "One Earth, One Family, One Future," is the theme of India's G20 presidency. It is inspired from the Maha Upanishad, an old Sanskrit scripture. The theme fundamentally highlights the importance of all life—human, animal, plant, and microorganism—as well as their interdependence on Earth and across the universe. The theme also exemplifies LiFE (Lifestyle for Environment), which highlights the importance of environmentally sustainable and responsible lifestyle choices, both at the individual and national level, in creating a cleaner, greener, and bluer future.

The G20 Presidency also heralds for India the start of "Amritkaal," a 25-year period commencing from the 75th anniversary of its independence on August 15, 2022, leading up to the centenary of its independence

India's G20 Priorities:

1. Green Development, Climate Finance & LiFE

- India's focus on climate change, with a particular emphasis on climate finance and technology, as well as ensuring just energy transitions for developing countries.
- Introduction of the LiFE movement, which promotes environmentally-conscious practices and is based on India's sustainable traditions.

2. Accelerated, Inclusive & Resilient Growth

- Focus on areas that have the potential to bring structural transformation, including supporting small and medium-sized enterprises in global trade, promoting labour rights and welfare, addressing the global skills gap, and building inclusive agricultural value chains and food systems.

3. Accelerating Progress on SDGs

- Recommitment to achieving the targets set out in the 2030 Agenda for Sustainable Development, with a particular focus on addressing the impact of the COVID-19 pandemic.

4. **Technological Transformation & Digital Public Infrastructure**

- Promotion of a human-centric approach to technology and increased knowledge-sharing in areas such as digital public infrastructure, financial inclusion, and tech-enabled development in sectors such as agriculture and education.

5. Multilateral Institutions for the 21st century

- Efforts to reform multilateralism and create a more accountable, inclusive, and representative international system that is fit for addressing 21st century challenges.

6. Women-led Development

- Emphasis on inclusive growth and development, with a focus on women empowerment and representation in order to boost socio-economic development and the achievement of SDGs.

Conclusion:

G20, or the Group of 20, was formed to safeguard the global economy by some of the most powerful countries in the world. Over the years, it has become an influential group capable of addressing some of the most pressing issues in the world, including climate change. The G20 members meet every year to discuss these issues and implement steps to safeguard the world's economy.

Nature and Scope of English Language in India

Dr. Monisha Saxena
Associate Prof., Deptt. of English

"Language shapes the way we think, and determines what we can think about," said Benjamin Lee Whorf. This highlights the role and necessity of language and communication in our lives. Communication plays a seminal role in our lives, helping us to express and share ideas, emotions and feelings. Language is a means of communication as it enables our thoughts to be translated into words. The fact that English enjoys a special place amidst a plethora of languages all over the world, makes it special. It has established English as a language of immense possibilities. Even India has declared English as its official language. Despite being a multilingual nation, It is interesting that we are the second largest English-speaking country after the U.S. For an educated person, it is the most widely used lingua – franca which he can use for social interaction and exchange of ideas. Our speech does have some English words here and there, even if we are conversing in languages other than English. For example, Hindi and English were mixed up to such an extent that they came to be known as a new language altogether - 'Hinglish'. Used in different countries all over the world, the English language holds the status of a native, second, official, foreign or international communication language in different countries.

Education from English medium schools is no longer a desirable label for many. It has become a social necessity for a vast cross section of our population. English has become the ladder for social mobility. The ever- increasing demand is such that we see coaching centers and English medium schools mushrooming in considerable numbers in all parts of the country. Though the language was an imposition of the British upon our country, it has become part of our linguistic fabric now as it has stayed with us till date. As Indians, we hold the language in high esteem. It is a 'must-know' language in our country with firm roots in all offices, professions, societies and social, economic and political structures. We hold English as a prerequisite not only for economic prosperity but also for social value. People belonging to the upper and middle classes want their children to be imparted with the best of education, for which they consider English medium mandatory. The lower class people follow the models set by the upper and middle classes. This has resulted in a tremendous growth of English medium schools all over India.

So, how did English become a global language? The first and most important reason for the spread of English is the British Empire. Before nearly a quarter of the world was colonized by the British Empire, English was spoken only by the British. But when they started to trade with places like Asia and Africa and colonised them, they naturally started the spread of English. According to Professor Timothy J. Scrase, "English is not only important in getting a better job; it is everywhere in social interaction." This makes very clear the prestigious position the language holds in our country. People belonging to different language groups use English for interpersonal communication. Talking of the nature and scope of the English language, below are a few points. Research show that employees with English language communication skills have a better scope and progress faster in companies. It is also helpful to perform targetted tasks with ease. English also dominates business, publication and media in our country. Books and media are critical as they are the primary source of education and information.

Discussing the dominance of English language in third-world book publication, Ashcroft, Griffiths and Tiffin, declare that half of the book titles in India are published in English. Of late, Bollywood has also started following the same pattern. Several international journals are published in English. Also, one-third of the books all over the world are published in this language. Similarly, many popular newspapers, news channels, journals and magazines in India are in English. Media thus becomes an

essential channel of learning and improving English. The growth and spread of English in India have given a new dimension to careers in the field of writing and teaching the language. It has provided new and exciting opportunities to people and has increased the scope of taking up English as a career.

More and more people are taking up jobs of interpreters, translators, writers, professors in English. It aids and facilitates our personality development and helps us to perform better at work. Why do we need to learn English? There are several reasons for the same. It is, in fact, one of the most learned foreign languages in the world. In this world of globalization, English is the dominant language of trade and commerce. It is also the language of news and information, higher education and research. It is used for communication in most professions of the world, and it has achieved the status of a global language in the economic context. It is the language that moves with us everywhere we go. The demand for English at all levels in the society that we live in has increased. Anyone who is not well-acquainted with the English language is indeed looked down upon. This pretty much clears all doubts about why we learn English. It not only prepares us for a career in today's world but also helps us to remain steady and confident of ourselves.

The scope of English is indeed wide. Pick any field of study or career, it requires the language. Be it science, commerce, business, tourism, politics, media, internet, google, computers or any other area of work or study, English is a must. This language has spread most extensively throughout the world. It has been dominating international business, education and communication. It is a cosmopolitan language as it is recognised, understood and used globally. Thus, it connects people from different linguistic backgrounds and cultures. Why is English necessary for higher education? English is a global language and has a significant impact on students in India. The Indian Constitution considers it as one of the languages that must be used by all state institutions, including universities, colleges, and schools. In fact, English is taught as a compulsory subject in most schools.

Overall, the position enjoyed by English in India, reflects the country's complex history, social issues and cultural diversity and continues to play an important role in shaping India's literary and cultural identity. English is the medium of instruction in many prestigious universities and educational institutions around the world. Proficiency in English opens doors to higher education opportunities abroad, enabling students to pursue advanced degrees, scholarships and research programs in renowned universities. Many multinational companies and organizations in India require English as a primary language of communication, so fluency in English can increase job opportunities and career growth. It is the language of science, aviation, computers, diplomacy and tourism. Last but not the least, it is the language of international communication, the media and the internet. Whether it is for professional or personal reasons, understanding the importance of English will help you reach your goals.

The role of English in our life is indeed considerable. It is the official language of many countries in the world. Communication is very important in today's time; English provides the medium for all the cultures to communicate through books, movies, plays, internet or other sources. Let us consider a few ways in which we can improve our spoken English:

- Try speaking in the language daily.
- Reflect on your conversations.
- Listen to English news bulletins and read English dailies. Preferably, read aloud.
- Record your voice while practicing speaking in the language.
- Learn phrases as well as single words. After that, ensure that you can apply them in your day-to-day speech.
- Think in English. This will lessen the burden of translation from mother tongue to English.
- Join English classes. You can speed up learning the language by being regular with your classes and taking the help of your English Language teachers.

You can also try to translate stories in your mother tongue into English orally. This will give you a fair idea of your present position with the language and help you understand where you have faltered. It may be a tough way of learning the language but, considering its ever growing significance, the efforts are worth it.

Go Get Education

Prof (Dr.) Ranjana Rawat
Department of History

Be self-reliant, be industrious

Work, gather wisdom and riches,

All gets lost without knowledge

We become animal without wisdom,

Sit idle no more, go, get education .....

This is a slogan given by Savitribai Phule to women, in particular, and to people from the backward and to people from the backward castes. She exhorted them to get an education as means to break free from the shackless of social constructed discriminatory practices.

Savitribai was born on January 3, 1831, in Naigaon village in Maharashtra. She is formally recognized as India's first female teacher. She played a pivotal role in women's empowerment with the support of her husband, Jyotibarao Phule.

Born in a family of socially backward Mali community, she was illiterate when she married to Jyotiba at the tender age of nine. Fortunately, Jyotiba strongly believed in the power of education in removing social inequalities. He decided to start this revolution at home by teaching his wife to read and write, much against the family problems. Later Jyotiba admitted Savitribai to a teacher's training institute in Pasi.

Savitribai started teaching girls at Maharwada in Pune. Later the couple started their own school at Bhide Wada, which became India's girls school run by Indians. The school started with the nine girls, but the number increased gradually. Later, three more schools were opened for girls in Pune, with nearly 150 students altogether.

The couple introduced several innovative measures in teaching with a special focus on curriculum and teaching methods. Also regular parent-teacher meetings were arranged to educate parents on the importance of education. Special emphasis was given to subjects like studies. Consequently, the number of girls in their enrolled in government schools is Pune.

By spreading rumers about couple, they tried to close these school. They attacked on her in different ways. But, gradually, Savitribai gained the courage to respond to these insults, saying 'Your efforts inspire me to continue my work. May God Bless You'. However, this public hooliganism stopped one day after Savitribai stopped a trouble manager and this act of her became sensational news across Pune. According to conservations, it was a sin to educate women and the children of backward castes.

Left on the streets, the couple were accommodated by a close priest Usman Sheikh and his family. His sister Fatima Begum Sheikh was already literate. Encouraged by her brother, Fatima accompanied Savitribai at another teacher training programme. After the training, both the them started a school at Usman Sheikh's residence. They opened 18 schools during 1848-1852 in Maharashtra. Afterwards, the couple opened a night school for women and the children of those from working class community. They set up 52 fee hostels for poor students across Maharashtra.

They set up Satya Shodhak Samaj, a plateform which as open to all. They started 'Satya Shodhak Marriage' where the marrying couple has to take a pledge of promote education and equality. Widow remarriage encouraged, introduced simple ceremonies for solemnising the wedding, organized awareness programmes against dowry.

When Jyotiba died there was an argument about who would light the pyre, between the adopted son and the family member. While the argument was going on, she took up the fire and lit the pyre on her own. That is why I feel she deserves the name 'Kranti Jyoti'.

Savitribai Phule died on 10th March 1897, while caring for a patient in the clinic she had opened for the treatment of those affected by the bubonic plage. Hen achievements were diverse and numerous but they had a singular effect-posing a brave and pioneering challenge to hate and culture. It is ironical that the mainstreams feminist movement in India does not acknowledged here.

Quotes

"If you educate a woman,
you educate an entire family."

•

"Women should not be confined
to the four walls of a house."

•

"The strength of a society
depends on the status of its
women."

Future Scope of Water Safety Planning in India

Prof. Prashant Singh
Department of Chemistry

Water safety planning is a crucial aspect of ensuring access to clean and safe water, especially in a country as diverse and populous as India. This article provides a comprehensive overview of the future scope of water safety planning in India with an aim to analyze measures for the propose of future directions for sustainable water management.

As we look towards the future, the field of water safety planning in India presents a dynamic landscape with emerging challenges and opportunities. Addressing the future scope involves understanding potential issues, envisioning innovative solutions, and charting a path towards sustainable water management. The future scope of water safety planning in India is discussed hereunder, considering the evolving socio-economic and environmental landscape. Anticipated challenges, potential technological advancements, and policy recommendations are presented to guide the formulation of a robust and adaptive water safety framework. The role of research and innovation in addressing future water safety challenges is also emphasized. The following areas outline the future scope of water safety planning in India:

1. Climate Change Resilience:

Challenge: Climate change poses a significant threat to water resources, leading to altered precipitation patterns, increased temperatures, and extreme weather events.

Opportunity: Future water safety planning must integrate climate-resilient strategies, including the development of adaptive infrastructure, efficient water storage, and sustainable water usage practices.

2. Technological Innovations:

Challenge: Rapid technological advancements are essential to improve water quality monitoring, early detection of contaminants, and efficient water treatment processes.

Opportunity: Embracing smart technologies, such as IoT-enabled sensors, artificial intelligence, and data analytics, can revolutionize water safety planning. Automated monitoring systems, real-time data analysis, and predictive modelling can enhance the efficiency and effectiveness of water management.

3. Integrated Water Resource Management:

Challenge: The fragmented approach to water resource management often leads to inefficiencies and inequitable distribution.

Opportunity: Implementing integrated water resource management, combining surface water and groundwater management, can optimize water use. This holistic approach ensures sustainability, reduces water wastage, and addresses the interdependence of different water sources.

4. Community Engagement and Education:

Challenge: Limited awareness among communities about the importance of water safety and sustainable water practices.

Opportunity: Future water safety planning should prioritize community engagement and education programs. Empowering communities with knowledge about water conservation, sanitation, and pollution control can foster a sense of ownership and responsibility.

5. Policy Frameworks and Governance:

Challenge: Inadequate enforcement of water safety regulations and the need for updated policies to address emerging challenges.

Opportunity: Strengthening regulatory frameworks, ensuring transparent governance, and aligning policies with evolving needs are crucial. Collaboration between government bodies, NGOs, and local communities is essential for effective policy implementation.

6. Research and Development:

Challenge: The need for continuous research to stay ahead of emerging contaminants, treatment technologies, and evolving water quality standards.

Opportunity: Investing in research and development can drive innovation in water safety planning. This includes developing cost-effective treatment methods, exploring alternative water sources, and understanding the long-term impacts of emerging contaminants.

7. Public-Private Partnerships:

Challenge: Limited resources and funding for water safety infrastructure projects.

Opportunity: Encouraging public-private partnerships can mobilize resources and expertise for large-scale water safety initiatives. This collaborative approach can accelerate the implementation of innovative technologies and infrastructure projects.

In conclusion, the future scope of water safety planning in India demands a multi-dimensional approach that addresses both existing challenges and those on the horizon. By embracing technological innovations, fostering community participation, enhancing governance frameworks, and investing in research, India can pave the way for a sustainable and resilient water future. The key lies in proactive planning, adaptability, and a commitment to safeguarding this vital resource for future generations.

Zero Budget Farming

Dr. Naina Srivastava
Associate Professor
Department of Botany

Zero-budget agriculture is farming that aims to reduce or eliminate the use of external inputs such as fertilizers, pesticides, and seeds. This is a sustainable farming method that has become popular in India in recent years. In zero-budget farming, farmers rely on natural resources such as cow dung, urine, and other organic matter to fertilize the soil. They also use seeds that are adapted to the local environment and are more resistant to pests and diseases. In zero-budget farming, farmers rely on natural resources such as cow dung, urine, and other organic matter to fertilize the soil.They also use seeds that are adapted to the local environment and are more resistant to pests and diseases. The basic principles of zero budget farming include: Zero External Input: Farmers do not use external inputs such as fertilizers, pesticides or seeds. They all depend on natural resources and traditional agriculture. Soil health: Farmers, crop rotation, co-planting and compost etc. focuses on improving soil health through practices such as the use of organic products. Seed protection: Farmers use seeds that adapt to the local environment and are more resistant to diseases and pests.They also store and change genes for genetic diversity. Water conservation: Farmers use techniques such as rainwater harvesting, mulching and drip irrigation to conserve water. Zero-budget farming has many advantages over traditional farming. It lowers production costs, improves soil fertility and provides healthier, more nutritious food. It also supports sustainable agriculture and helps mitigate climate change by reducing greenhouse gas emissions.Zero Budget Farming is a sustainable farming method gaining popularity in India. Leveraging natural resources and traditional agriculture, farmers can improve soil health, conserve water and produce healthy and nutritious food without relying on external devices. and save water. In Uttarakhand, farmers use agricultural methods to increase soil fertility, reduce costs and produce more nutritious food. They rely on natural sources such as cow dung, urine and other organic matter to fertilize the soil. They also use seeds that are adapted to the local environment and are more resistant to pests and diseases. An important part of natural farming is the use of Jeevamrut, a fermented liquid from cow dung, cow urine, jaggery, mung bean powder, and water. It is used as a liquid fertilizer and can also help improve soil health by increasing microbial life in the soil. Another important application of organic farming is

the use of mulch, which involves covering the soil with a layer of organic material such as leaves, straw or grass. This helps retain moisture, reduce weeds, and provide nutrients to plants as organic matter decomposes. In addition to these practices, natural farming also means the use of skills in agriculture and community participation.Farmers are encouraged to collect and exchange their seeds and work together to improve soil health and water conservation in their communities. Overall, zero-budget farming or natural farming has the potential to transform Uttarakhand agriculture by promoting sustainable and eco-friendly agriculture. outside effects. Fertilizers, medicines, seeds, etc. In the northern Indian state of Uttarakhand, zero-budget farming is called natural farming. Here are some of the best agricultural products in Uttarakhand: Jeevamrut: OTHER PRACTICES OF ZBNF

INTERCROPPING AND CROP ROTATION

Intercropping is the simultaneous cultivation of two or more distinct crops on the same plot of land. Some of the main goals of intercropping include improving solar radiation harvesting, making better use of land and other resources, and reducing evaporation and erosion.

Additionally, it contributes to farmers' revenue growth or provides food in the event that their primary crop fails. The intercropping system's component crops include legumes, millets, grains, vegetables, fruit trees, and medicinal plants, among others. Cropping system diversification is another crucial ZBNF technique because it disrupts the environment, which, in turn, prevents the accumulation of illnesses and pests.

PEST MANAGEMENT

Pests and illnesses cause the majority of the yield loss in crops, with weeds coming in second. Natural farming faces a lot of difficulties in trying to control this loss. A chemical that eliminates or regulates the insect population in the crop field is created using plant extractions. A combination of buttermilk, cow milk, pepper powder, neem seed, and green chilies is used to make several plant protection products (Palekar, 2016). The naturally extracted chemical-free substances that were discovered in various study articles are described below. As follows:

1. **Agriastra:** It is made up of 10 litres of local cow pee, 1 kilogramme of tobacco leaves, 500 g of green chilli, 500 g of local garlic, and 500 g of pulp from crushed neem leaves (5 L) Keep it in a cool location. Spray crops with 2 L per 100 L of water. Pests including Leaf Roller, Stem Borer, Fruit Borer, and Pod Borer are successfully controlled by it.
2. **Brahmastra:** The second method for reducing insect populations in natural farming involves gathering various plant leaves, including neem, custard apple, lantern camellia, guava, pomegranate, papaya, and white datura leaves, which are then crushed and boiled with urine to create filtration. The extractant can be stored after filtering for further use. It works best against all types of sucking pests, including fruit and pod borer.
3. **Neemastra:** A mixture of 5 L of local cow urine, 5 kg of cow dung, 5 kg of neem leaves, and 5 kg of neem pulp should be used, and it should be kept airtight for 24 hours to allow for fermentation. After fermentation, the product is prepared for use. mainly eradicates Mealy Bug and other sucking pests.

COW DUNG

Only native Indian cows (Bos indicus) faeces are advised in ZBNF activities since these species have more advantageous microorganisms (about 3-5 crores) than foreign breeds. Palekar claims that the faeces of foreign breeds contains several dangerous germs, fungi, and other diseases, whereas Indian breeds are only proven to be effective for crop cultivation. 30 acres of land may be farmed by one breed of indigenous cattle in the area. Therefore, proponents of ZBNF advise farmers to utilise the dung and urine of their native Indian cows for ZBNF and those of foreign breeds for the production of biogas or fuel instead of mixing the faeces of Indian and foreign bovine breeds (Munster, 2017). The majority of ZBNF supporters stop drinking milk and milk products because they कवद–रु३9यज want to dairy-fie the local cattle, which would only boost agricultural output.

DIFFERENCE BETWEEN ZBNF AND ORGANIC FARMING

The primary difference between ZBNF and organic farming is expense, as the latter is a more expensive method. The emission of greenhouse gases as a result

of organic farming is another important distinction that makes ZBNF unique. Another distinction is that ZBNF practise takes less time and effort than organic agricultural operations. For instance, whereas ZBNF's organic formulations (Jivamrita/Jeevamrutha and Bijamrita/Beejamrutha) may be made in only a few days, the creation of organic manures takes weeks to months (Khadse et al., 2019).

Benefits

In addition to assisting farmers in paying off debt, this method raises soil fertility, production, and product quality. Earthworms break down plants and animals, which adds humus to the soil (Ranjan and Sow, 2021). By creating tiny and large-scale holes in the soil, it also increases the soil's ability to store water and to breathe. In addition to preventing insect harm, the pest management technique utilised here guards against the negative side effects of chemical techniques, including as amplification, pollution, and carcinogens. It does not contribute to the erosion and contamination of soil and water. Intercropping and crop rotation prevent the soil from becoming depleted of moisture and nutrients. While mulching slows water evaporation and keeps the soil adequately wet. The soil's microorganisms benefit from the favourable habitat it provides. The term "quality of product" refers to being devoid of undetectable disease-causing substances, which is of considerable concern nowadays. In conclusion, ZBNF is unquestionably a significant approach from the perspectives of economics, society, biology, and physiology (Duddigan et al., 2022).

SUCCESS STORIES OF ZBNF

ZBNF's lengthy journey has just just begun. However, it has managed to demonstrate its value. Farmers seeking an alternative to chemical farming have already expressed interest in it. Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala, Himachal Pradesh, Uttarakhand, and Chhattishgarh are the six Indian states that have begun to make significant inroads towards ZBNF. Punjab and Bihar have both indicated a strong interest in it. Gujarat, Rajasthan, and Meghalaya are also monitoring it (Bharucha et al., 2020). The entire country is being inspired to give it a go at least once by the successful outcomes in states like Karnataka and Andhra Pradesh in particular.

A. KARNATAKA STORY

Karnataka Rajya Raitha Sangha (KRRS), a state farmers' organisation, joined up with Subhash Palekar in 2002 to promote ZBNF in the state. Through a number of training camps, KRRS was the primary one of many partners that significantly contributed to mobilising farmers in support of ZBNF. According to Khadse et al. (2017), farmers were interested in adopting ZBNF for a number of reasons, including family health (54%), food security (46%), environmental safety (42%), decreased cultivation costs (38%), decreased reliance on various corporate sectors (33%), decreased debt (30%), and spiritual motivation (30%). According to a rough estimate, almost 1 lakh farm households in Karnataka have already switched from traditional agriculture to ZBNF, and the majority of them all have their own plots, irrigation systems, and at least one cow (Sreenivasa et al., 2009).

B. ANDHRA PRADESH STORY

In Andhra Pradesh, the ZBNF movement initially began in 2015. Andhra Pradesh was the Indian state that used the most pesticides before to bifurcation. The state administration has been interested in this movement as a result of both the state's chemical-based agriculture problems and the ZBNF's early triumphs here. By 2022, the government of Andhra Pradesh plans to switch the state's agriculture system from the first green revolution state in India to the first ZBNF state, as was declared in 2018. (Saldanha, 2018). To propagate ZBNF throughout the agricultural community in Andhra Pradesh, the government established Rythu Sadhikara Samstha as a non- profit organisation. In order to gather money for a successful ZBNF model, the state administration also worked with other national and international organisations. ZBNF was embraced by 16300 farmers from 972 villages across 13 districts in 2017–18, and an action plan to reach 5,000 farmers was developed for 2018–19. (Saldanha, 2018). The government has stated its intention to have 8 million hectares of cultivable land covered by ZBNF by the end of 2026, covering all 6 million farmers by 2024. (Saldanha, 2018). The net income of tribal farmers, landless farmers, tenant farmers, single women farmers, and other types of farmers has increased, which has resulted in a decline in input costs, an increase in yields, fair trade on domestic and international markets, improved food and nutritional

security, and a reduction in economic inequality, according to ZBNF farmers in Andhra Pradesh. Growing rice, rain-fed groundnuts, and cotton using ZBNF techniques allowed farmers to boost their net earnings by 51%, 135%, and 87%, respectively, in 2017. In the fields of ZBNF farmers in Anantapur, Andhra Pradesh, there were 9% and 36% increases in the yields of rice and groundnuts, respectively (Tripathi et al., 2018). According to data from the Andhra Pradesh government's 2017 crop cutting experiments, ZBNF fields produced higher yields of rice (6416 kg/ha), irrigated groundnut (2868 kg/ha), black gramme (1300 kg/ha), chilli (10240 kg/ha), and maize (12844 kg/ha) than non-ZBNF fields (5816 kg/ha, 2233 kg/ha, 1027 kg/ha, 7740 kg/ha, and 11856 kg (Mishra, 2014). Additionally, ZBNF adoption has been linked to reported decreases in production costs and increases in net revenue for many crops, including black gramme, rice, and others in this state (Amareswari and Sujathamma, 2014). Table 2 compares the performance of several rain-fed crops grown with ZBNF and non-ZBNF throughout the monsoon season (Bharucha et al., 2020). Furthermore, the agricultural community's health was improved by ZBNF by displacing dangerous pesticides and chemical fertilisers. In Andhra Pradesh's 35 villages, ZBNF began implementing integrated health and nutrition strategies in 2018. (Tripathi et al., 2018). By ensuring capacity building, knowledge, skill development, and dissemination of sustainable production technologies to the farming community's grassroots levels through community resource persons or master farmers (farmer to farmer dissemination), the ZBNF programme further expanded its target and contributed to the creation of rural jobs in agriculture and its related sectors. Jeevamrut is a fermented liquid made from cow dung, cow urine, jaggery, mung bean powder and water. It is used as a natural fertilizer and can also help improve soil health by increasing soil microbial activity. Mulching: Mulching is good practice in zero-income agriculture to help conserve moisture, reduce weeds, and provide nutrients to the soil. Farmers in Uttarakhand use materials such as leaves, straw or grass as mulch. Seed protection: Zero-budget farming means using native seeds that are adapted to the local environment and are more resistant to pests and diseases. Farmers in Uttarakhand store and trade these seeds to preserve genetic diversity. Crop rotation: Crop rotation is a good practice in zero income farming that helps keep the soil healthy and prevents the growth of pests and diseases. Farmers in Uttarakhand alternate crops in certain areas over time to keep the soil healthy and fertile. Mid-Sowing: Inter-planting is the practice of planting two or more crops on the same land at the same time. This practice helps increase soil fertility, prevent pests and diseases, and maximize space and resources. Rainwater Harvesting: Farmers in Uttarakhand use techniques such as rainwater harvesting to conserve water and ensure efficient use of water. They collect rainwater in a tank and use it for irrigation. In conclusion, zero farming practices such as mulching, seed protection, weeding, crop growing and rainwater harvesting are good and effective techniques that can help Uttarakhand farmers cut costs, improve soil health, create a healthier and better diet, Jeevamrut said. By relying on natural resources and traditional farming methods, farmers can create a more sustainable and environmentally friendly agriculture. Zero-budget agriculture is a type of agriculture that aims to reduce or eliminate the use of external inputs such as fertilizers, pesticides and seeds. In zero-income agriculture, farmers rely on natural resources such as cow dung, urine and other organic matter to fertilize the soil. They also use seeds that have adapted to the local environment and are more resistant to pests and diseases. The main principles of zero budget farming include: Zero input: Farmers do not use external inputs such as fertilizers, pesticides or seeds. They all depend on natural resources and traditional agriculture. Soil health: Farmers, crop rotation, co-planting and compost etc. focuses on improving soil health through practices such as the use of organic products. Disease Control: Farmers use locally adapted seeds to protect against pests and diseases. They also store and change genes for genetic diversity. Water conservation: Farmers use techniques such as rainwater harvesting, mulching and drip irrigation to conserve water. Zero-budget farming has many advantages over traditional farming. It lowers production costs, improves soil fertility and provides healthier, more nutritious food. It also supports sustainable agriculture and helps mitigate climate change by reducing greenhouse gas emissions. In conclusion, zero budget farming is a sustainable farming method popular in India. Leveraging natural resources and traditional agriculture, farmers can improve soil health, conserve water and produce healthy and nutritious food without relying on external devices.

The Psychology of Time: How Our Perception of Time Shapes Our Lives.

Kutti Rawat
Department of Geography

"If you want to know the value of one year, just ask a student who failed a course.

If you want to know the value of one month, ask a mother who gave birth to a premature baby.

If you want to know the value of one hour, ask the lovers waiting to meet.

If you want to know the value of one minute, ask the person who just missed the bus.

If you want to know the value of one second, ask the person who just escaped death in a car accident.

And if you want to know the value of one-hundredth of a second, ask the athlete who won a silver medal in the Olympics."

Quote by- *Marc Levy*

Once upon a time a person asked: "What's the biggest mistake we make in life?" The Buddha replied, "The biggest mistake is you think you have time." Time is free but it's priceless. You can't own it but you can use it. You can't keep it but you can spend it. And once it's lost, you can never get it back.

Time, the great equalizer, treats everyone the same, yet its impact on success is anything but uniform. This article explores the profound connection between time and success, drawing insights from the lives of achievers who have mastered the art of harnessing every moment to propel themselves toward their goals. By uncovering the strategies and mindsets of these high achievers, we can glean valuable lessons for optimizing our own relationship with time.

The Principle of Prioritization: Successful individuals understand the importance of setting priorities. By identifying and focusing on high-impact tasks, they maximize the return on their time investment. Lessons from achievers emphasize the need to distinguish between what is urgent and what is truly important to achieve long-term success.

Time Blocking and Effective Scheduling: Achievers often employ time-blocking techniques to structure their days effectively. Whether it's allocating specific blocks of time for focused work, strategic planning, or personal development, the disciplined use of time is a key factor in their success.

Learning from Setbacks: Resilient achievers view setbacks not as wasted time but as invaluable lessons. Understanding the power of learning from failures, they leverage each experience to refine their strategies, enhance their skills, and grow personally and professionally.

Strategic Goal Setting and Time Management: Successful individuals are meticulous in goal setting and time management. They break down larger goals into manageable tasks, set realistic deadlines, and maintain a disciplined approach to execution. Lessons from achievers underscore the importance of aligning daily activities with long-term objectives.

Continuous Learning and Adaptability: Time is recognized as a resource for constant learning and adaptation. Achievers invest time in staying informed about industry trends, acquiring new skills, and adapting to changing circumstances. The ability to evolve and grow with the times is a common trait among those who consistently achieve success.

Mindfulness and Present Moment Focus: While achieving future goals is crucial, successful individuals also appreciate the importance of being present in the current moment. Mindfulness and focus enhance their productivity, creativity, and overall well-being. Lessons from achievers emphasize the balance between future aspirations and present engagement.

Effective Delegation and Collaboration: Achievers understand the value of collaboration and effective delegation. By entrusting tasks to capable individuals and fostering a culture of teamwork, they optimize their own time and leverage the strengths of those around them.

Conclusion: In the pursuit of success, time is both a resource and a challenge. By studying the habits and strategies of high achievers, we uncover valuable lessons on how to harness the power of every moment. The principles of prioritization, effective scheduling, resilience, continuous learning, mindfulness, and collaboration emerge as timeless strategies that, when applied, pave the way for sustained success. As we navigate our own journeys, the lessons from achievers guide us toward a more intentional, focused, and successful use of our most precious resource-time.

Life-giving Rivers of Uttarakhand

Ashutosh Bhatt
Research Scholar, Department of Sanskrit

The Ganga is the most beneficial river for humans. It flows continuously from the Himalayan foothills to the plains. These Dev rivers finally take on the form of rivers after emerging from a variety of Himalayan glaciers. These rivers are life-giving, and they have been endowed with divinity for safety and prosperity. The state of Uttarakhand has a particular regard for these rivers. Yamunotri Dham and Gangotri Dham are two of the four Dhams in this location that are devoted to Bhagwati Ganga and Yamuna.

Yamunottari: This Dham is currently located in the district of Uttarkashi. Yamuna, the daughter of Surya. The clear water stream emanating from the vast ice blocks above flows towards the north, hence it is called Yamunottari. Yamuna is known as Kalind Nandini or Kalindini because the snow from a mountain named Kalindagiri melts and becomes the Ganga. Although this place is very ancient, no temple was situated here in the past. The temple was built by Garhwal King Maharaja Pratapshah in Vikram Samvat 1919. they crafted the black marble Yamuna Devi and placed it at Yamunotri. Maharaj has given the right of worship to the Bhardwaj gotriya Brahmins of Kharsali village. Every year on Vaishakh Shukla Akshaya Tritiya Tithi, the doors of the Yamunottari temple open, and they close on Yamdvitiya Tithi in the Kartik month. The six-month puja is performed with the Chalavigraha in the priests' village Kharsali. Apart from Yamuna ji, the idol of Ganga ji is also situated on white marble in Yamunotri temple. Both Ganga and Yamuna are considered sisters. On the side of the temple, a hot water stream comes out from inside the mountain rock and there is also a water reservoir above it which is called Surya Kund. Its temperature is very high. Travelers put rice tied in a cloth in this pond, it gets cooked due to the hot water, which is called Prasad of Yamunottari by the devotees.

Gangottari: Gangotri is the location where the Ganges emerges from the Gomukh glacier. The stream of Ganga flows from the Gomukh glacier below the Bhagiratha peak. The name of this place is Gomukh. The path to reach here is very difficult. According to the legend, King Bhagiratha had performed rigorous penance on Shrikanth (Srimukh) mountain. Pleased with the penance, Bhagwati Ganga accepted to come to the earth but the earth could not bear the flow of the fierce current. Ultimately, Bhagiratha pleased Lord Shiva by performing rigorous penance of Lord

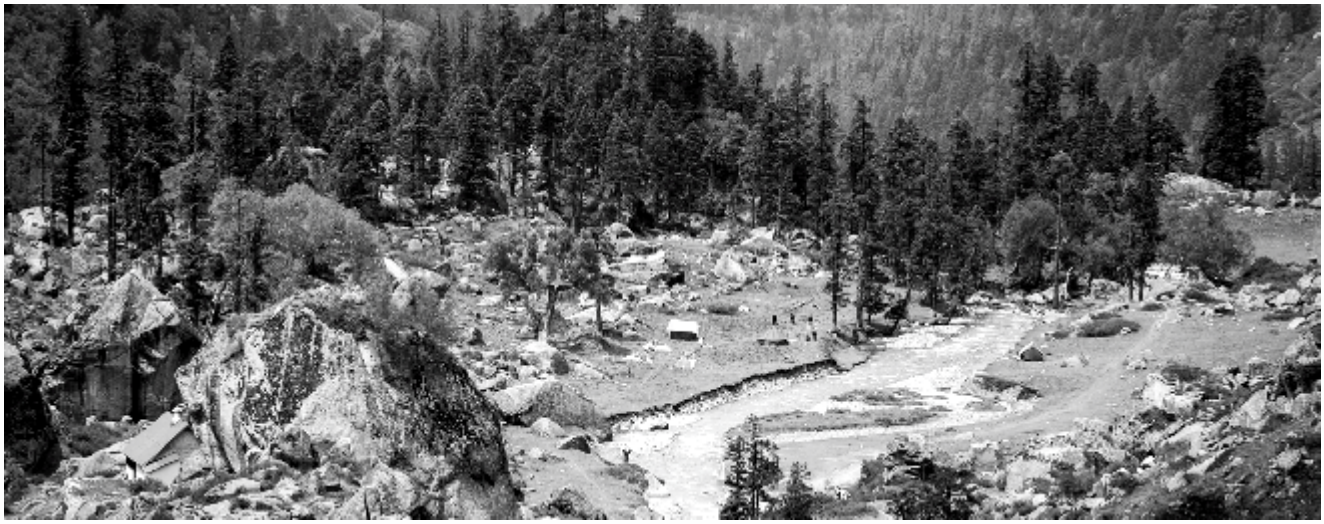

Shiva. Shiva was pleased and absorbed the flow of the Ganga stream in his locks. Freeing the Ganga from its locks, a stream followed Bhagiratha and this stream was called Ganga Gomukh. Which is actually called Bhagirathi. According to folk beliefs, the first temple was built by Adi Shankaracharya. Subsequently, the temple, which was damaged by natural disasters, got a new temple built by Gorkha Sardar Amarsingh Thapa during the Gorkha rule. When the temple got damaged again due to geographical reasons, the King of Jaipur built a new temple. Which is still in place today. The main idol in the temple is of Mother Ganga. As soon as the stairs descend on the temple road, there is a huge rock which is called Bhagiratha Shila. It is believed that King Bhagiratha had performed penance sitting on this rock. Bhagirathi stream is among the nearby tourist places. The water of this stream passes between the rocks and falls on the natural Shivalinga in the form of a waterfall and looks very beautiful. This place is known as Gaurikund. On the foot path ahead of the temple, before Gomukh, one can see Chirvasa, Bhojvasa and finally Gomukh, the origin place of Ganga.

Devprayag, Rudraprayag, Karnaprayag, Nandprayag and Vishnuprayag are counted among the Panch Prayags. When starting the journey from Rishikesh, Devprayag comes first. Here there is a confluence of Alaknanda coming from Badrinath and Bhagirathi coming from Gangottari. This place is the penance place of Devsharma. In Treta Yuga, Lord Ram had reached this place to give him darshan after killing Ravan.

The Alaknanda River from Shri Badrinath and the Mandakini River from Kedarnath converge at Rudraprayag Sangam. This location is close to Narada Shila. The belief goes that Narad had appeased Lord Shiva by performing penance here. Rudranath was the manifestation of the Lord, who also gifted Narad a veena. Just above the confluence, seated in the form of Rudra, is Lord Shiva. Karnaprayag is the third confluence place. Here Alaknanda and Pindar rivers meet. Pindar River flows from Pindari Glacier, passes through Bageshwar in Kumaun and finally merges at Karnaprayag. There is an ancient temple of Mother Uma in Karnaprayag. There is also a temple of Karna at some distance. Legend has it that it was at this place that Lord Surya gave infallible armor and earrings to Karna.

Nandprayag is the second Prayag place. Alaknanda and Nandakini coming from Trishul mountain meet here. In Kedarkhand of Skandapurana, this place has been called Kanvashram. However, in ancient times, a huge yagya was performed at this place by a Nanda king. Due to which this place is currently known as Nandprayag.

Vishnuprayag is the confluence of Dhauliganga and Alaknanda. This is the first Prayag of Uttarakhand. There is an ancient temple of Lord Vishnu.

Finally, it is known as Ganga in Rishikesh and Haridwar region.

Therefore, in this way, the greatness of Ganga in the land of God and its public worship is present in the hearts of every person. This area is called the motherland of Ganga because it originated here. At present, there is a need to pay special attention to the cleanliness and well-being of Ganga. If it gets affected, the entire nation will have to suffer its adverse consequences, hence it is important that we protect it from getting contaminated in the initial period itself. Finally, remembering the sentiments of an unknown Sanskrit poet, we pay our respects to Mother Ganga, the life–giver –

जनानां धात्री त्वं सुमधुर–फलान्नानि ददती
विशालां सिंचन्ती मधुमयजलैर्भारतभुवम्।
अये शुभ्रे गंगे ! विलसिततरंगे ! त्रिपथगे !
तवोत्संगे धन्याः शिशव इव खेलन्ति मनुजाः।।

My NSS Journey: A Journey of Service and Personal Development

Deepak Sharma
B.A. 3rd Year

The National Service Scheme (NSS) is an initiative taken by the Government of India to engage college students in social service and promote their personality development. I decided to join NSS during my college years and it has been a transformative experience for me. I was initially unsure about how this would impact my college life, but little did I know that it would turn out to be one of the best decisions I ever made.

Of course, no journey is without its challenges. One of the biggest challenges I faced during my NSS journey was managing my time between college studies and NSS activities. However, I soon realized that time management and prioritization are essential skills that can be developed through NSS and this was proved when i secured highest Cgpa in 2nd year in my course while following up my active involvement and participation in all the programs of nss .Another big challenge that i faced during my NSS journey was the limited availability of resources in our college. However, I did not let this discourage me and my team , Instead, we made the best use of the resources available to us , including my team's enthusiasm and creativity.

We organized events such as wall painting on the government high school, plantation drives, clothes donation drives, and AIDS awareness sessions and campaigns followed by nss 7day special camp . We also collaborated with a pan-India NGO for community service . These initiatives helped us in developing leadership and team-building skills and taught the importance of perseverance and innovation.

In addition to organizing community service events, I also took on the responsibility of creating and managing the social media page for NSS DAV. This gave me the opportunity to showcase our work and build a strong network of volunteers and supporters. The success of our social media page helped us attract more volunteers and spread awareness about the importance of community service.

My hard work and dedication paid off when I was selected to participate as the only volunteer delegate from our state Uttarakhand, in the PBD 2023 program which was held in Indore, MP. This was a great opportunity to interact with delegates from different nations and learn about their experiences in developing nation and SDG programs.

I was given the honour of being appointed as the Commander (student coordinator) of NSS in my college. This has been a great responsibility and an opportunity to lead and inspire others to contribute to society.

Throughout my journey, I have been fortunate to have the guidance and support of my mentors and program officers. Their encouragement and advice have helped me develop my leadership skills and overcome the challenges I faced. They have taught me the importance of teamwork, planning, and effective communication.

My NSS journey has been an unforgettable experience that has taught me the importance of service to society and the impact it can have on people's lives. I am grateful for the opportunities that NSS has provided me and the person it has helped me become. I encourage every college student to take up NSS and embark on their own journey of service and personal development.

Jai Hind

29UK BN NCC, DEHRADUN GROUP

Cadet Anurag
B.Sc. 3rd Semester

Introduction: Nature of a CompanyA company, in its ordinary, non-technical sense, means a body of individuals associated for a common objective, which may be to carry on business for gain or to engage in some human activity for the benefit of the society.Accordingly, the word 'company' is employed to represent associations formed to carry on some business for profit or to promote art, science, education or to fulfill some charitable purpose. This body of individuals may be incorporated or unincorporated.The concept of 'Company' or 'Corporation' in business is not new but was dealt with, in 4th century BC itself during 'Arthashastra' days. The nature of company got revamped over a period according to the needs of business dynamics. Company form of business has certain distinct advantages over other forms of businesses like Sole Proprietorship/Partnership etc. It includes features such as Limited Liability, Perpetual Succession etc.Historical Development of the Nature of Company law in IndiaIn the year 1850, the first Company enactment for the registration of the joint-stock company was introduced in India. This enactment as mentioned before was based upon the English Companies Act, 1844.In the year 1913 another Indian Companies Act was enacted based upon English Companies Consolidation Act, 1908. Companies Act of 1913 was amended in the year 1914, 1915, 1920, 1926, 1930 and 1932. But the major amendment to the Companies Act of 1913 who was made in the year 1936 this amendment was based upon the English Companies Act. 1929. The act of 1913 regulated the Indian business company until 1956.On 28th October 1950, the Government of India appointed a Committee of twelve members representing various interests under the chairmanship of Shri H. C. Bhabha, to go into the entire question of the revision of the Companies Act, with particular significance to the development of trade and industry of India. The Bill was referred to a Joint Committee of both Houses of Parliament in May 1954. The Joint Committee submitted its report in May 1955, making some material amendments to the Bill. The Bill, as amended by the Joint Committee, underwent some further amendments In Parliament and was passed in November 1955. The new Companies Act (I of 1956) came into force from 1st April 1956.Recently, the Companies Act, 2013 replaced the Companies Act, 1956. The legislators introduced ideas of the likes of:Corporate Social Responsibility (CSR)Class action suitsFixed term for the Independent DirectorsThe provision of raising money from the public was made little stringentProhibition on insider trading by company directors or key managerial personnel by declaring such activities as a criminal offenceIt permits shareholder agreements providing for the 'Right of First Offer' or 'Right of first Refusal' even in the case of Public Companies

Educational Technology

Rishabh Singh
B.Ed. 1st Semester

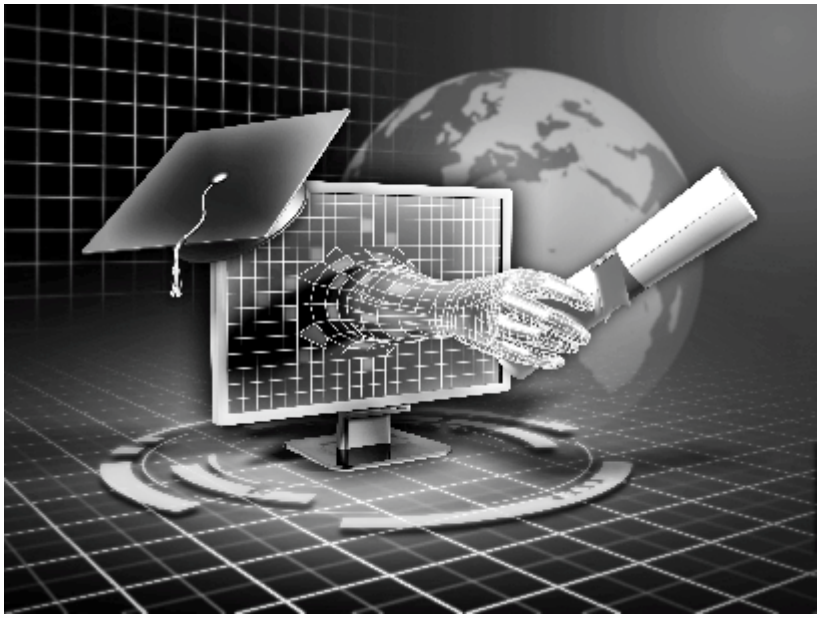

From the ancient abacus to handheld calculators, from slide projectors and classroom film strips to virtual reality and next generation e-learning, Educational technology blooming and inspiring teachers and students in an exciting way.

The World is changing so as the field of Education is demanding reforms. Technology is a game changing tool which is fulfilling the aspirations of Ed reformers. The advancement in digital technology is continuously adding stars in the field of education and taking the growth of minds to the next level. The transformation in the style of teaching witnessed in present scenario with the assistance of Technology is a dream comes true for many.

Technology is a tool in the hands of teachers to stimulate young minds and opens up new opportunity for the students. The growing technological fields like Virtual and Augmented reality, high-tech collaboration tools, gamification, podcasting, blogging, 3D printing, artificial intelligence, personalized learning and much more.

What is Educational Technology?

Educational Technology is the field of study that investigates the process of analyzing, designing, developing, implementing, and evaluating the instructional environment, learning materials, learners, and the learning process in order to improve teaching and learning.

Why is Educational Technology in Education Important?

Educational technology in education is important because it helps today's teachers to integrate new technologies and tools into their classroom. Teachers are able to upgrade and improve the learner-centeredness of their classroom. It enables teachers to engage their students in unique, innovative, and equitable ways. Teachers are also able to expand their network and connect with other teachers and educators nationally and globally.

Essential Objectives of Education Technology

To equip educators with imperative planning and designing skills for utilising and assessing a proficient learning process.

To familiarize the learners with the basic facets of community education.

To introduce the learners to the pervasiveness and eminence of educational technology in the contemporary world.

To promote better learning with the use of diverse technologies.

To impart educators with the knowledge of how educational technology can be effectively implemented for teaching and learning processes.

To acquaint the learner to the prominent revolutionary phenomena in education, i.e. the computing and digital technologies.

Responsibility of Educational Technology Facilitators

Facilitators of an educational technology plan, design and develop productive learning atmosphere and range of experience by assisted technology. Their responsibilities include:

Plan learning environments and experiences with the use of technology to build efficient teaching and learning environments.

Design and develop appropriate technology-driven learning opportunities to support the diverse needs of different learners.

Evaluate the accuracy and suitability of technological resources.

Manage technology resources within the context of learning activities and pedagogy.

Build management strategies for students learning in a technology-enhanced environment.

Identify instructional design principles to develop technological resources.

Scope of Educational Technology

The use of educational technology is not restricted to teaching and learning methodologies and theories, but to provide in-depth assistance in the development of an individual's personality.

Educational technology makes the teaching-learning process more efficient and process-oriented.

Mechanical and electronic gadgets can be readily utilized for educational requirements.

Educational technology has improved the learning process for students with the help of teaching aids and programmed instructional material, etc.

Traditional mediums like television, radio, tape-recorder, V.C.R. and computers can be used to impart distance and correspondence education.

The advancement of the internet has increased education dissemination all over the world with much ease.

Mechanism of feedback through the use of technology improves the quality of teachers training in academic institutions.

Technology-driven innovative analytical tools and instruments can help in solving educational administrative problems.

Educational technology serves to develop and understand the structure and nature of teaching.

Best utilization of education technology supports the scientific foundation and new discoveries.

Examples of Educational Technology

Here are some popular EdTech companies and products that are contributing to the expanding options for technology in the classroom. These examples of education technology in the form of learning management systems, hardware products like video conferencing cameras for the classroom, and educational gaming platforms show the range of how technology can be infused in both teaching and learning :·

The Meeting Owl

The Meeting Owl is a video conferencing camera for classrooms that enables hybrid collaboration for students and teachers. The Meeting Owl turns any classroom environment into a hybrid classroom with its unique 360-degree camera that can capture audio and video from everyone in the room.·

Google Classroom

Teachers can use Google Classroom to organize assignments and create a collaborative online learning environment for students. It's an all-in-one educators can create classes, distribute and grade assignments, provide feedback, and connect with students.

Kahoot!

Kahoot! is a quiz game that can be created by teachers and answered by students about any topic they want. Students answer questions together and win points for the more answers they get correct.

Apex Learning

Apex Learning has online courses that accompany middle and high school classes. They can be assigned by teachers to supplement what students are currently learning and keep students on top of their subjects if they need more help.

SMART Technologies

SMART Technologies makes a host of technology solutions for schools and students. Their most popular item is the SMART Board, a digital screen that functions as a whiteboard for students and teachers to write and demonstrate on. Drawings can be recorded and copied for further use and study.

What are the Challenges Associated with EdTech?

Limited Practical Attachment to Learning: Subjects of Science and technology include hands-on laboratory sessions, dissertation projects and field trips to complement theoretical studies.

This aspect of learning is severely limited in online education.

Limited Social Skill Enhancement: Education is not just about subject knowledge but also about developing social skills and sportsmanship among the students, which is built over the years.

Relying solely on online education may hinder the holistic development of children, and many may underperform later in their professional and personal lives.

Lack of Digital Infrastructure: While India enjoys a wide geographic and cultural diversity, it also suffers from a huge socio-economic divide, including non-uniformity of digital infrastructure facilities.

Interrupted power supply and weak or non-existent internet connectivity are major challenges hindering the percolation of online education at the grassroot.

Widening Gender Inequality: Online education may lead to a wider gender gap.

In a recent survey of 733 students studying in government schools in Bihar, only 28% of the girls had smartphones in their homes, in contrast to 36% of the boys.

However, girls were found to spend a disproportionately longer time on household chores than boys, which often overlapped with the time of telecast of these lessons.

Business Malpractice: With the growing market for digital education, EdTech companies are likely to engage in various forms of business malpractice to attract consumers.

Most recently, issues of misleading advertisements and unfair trade practices have come to light.

The Department of School Education and Literacy stated that Ed-Tech companies are luring parents in the garb of offering free services and getting the Electronic Fund Transfer (EFT) Mandate signed or activating the auto-debit feature, especially targeting vulnerable families.

Educator-Learner Adaptability Concern: Using the internet for entertainment is common, but for online lessons is a big challenge.

Teachers may not be well-versed with creating digital content, and conveying it effectively online.

Similarly, a sudden expectation from them to upgrade, and from students to adapt, is unfair.

What are the Recent Grassroot Innovative EdTech Programmes in India?

Assam's online career guidance portal is strengthening school-to-work and higher- education transition for students in grades 9 to 12.

Jharkhand's DigiSAT is spearheading behaviour change by establishing stronger parent-teacher-student linkages;

Himachal Pradesh's HarGhar Pathshala is providing digital education for children with special needs.

Madhya Pradesh's DigiLEP is delivering content for learning enhancement through a well-structured mechanism with over 50,000 WhatsApp groups covering all clusters and secondary schools.

Kerala's Aksharavriksham initiative is focusing on digital "edutainment" to support learning and skill development via games and activities.

The Government School Transformation Programme Odisha under the 5T initiative (Transparency, Teamwork, Technology, and Timeliness leading to Transformation) of the Odisha government is a good step in this direction.

IIT Kharagpur has collaborated with Amazon Web Services to develop the National Al Resource Platform (NAIRP), the future possibilities of which include monitoring eye movement, motion and other parameters for better teaching and learning.

Towards - "What is Told is What is Sold": Apart from

stressing on transparency and warning against misleading ads of edtech companies, there is need for a proper mechanism for monitoring malpractices and time bound grievance redressal.

Hybrid Mode of Learning: Edtech is not a magic wand that can solve the learning crisis in India. Neither is it a replacement for teachers in schools, both online and offline learning should be balanced.

Major online players like Byju's and Unacademy have forayed offline or hybrid learning models.

Conclusion

Despite the fact that online education opens many possibilities for both students and teachers, it can also widen social inequalities in India. With regard to online education, we must ensure that all our policies and interventions are inclusive. India will lead the way ahead with good vision and sincere efforts.

Role of women in the legal Profession

Shreya Sharma
LLB 4th Semester

The role of women in the legal world is crucial for a number of reasons. Firstly, it ensures that the legal profession is diverse and inclusive, representing a range of perspectives and experiences. This is important because the law affects everyone, and it is essential that those making decisions about it understand the needs and concerns of all members of society.

Secondly, having women in the legal field helps to break down gender stereotypes and challenge traditional notions of what a lawyer or judge should look like. This can inspire young women to pursue careers in law, and show them that they too can succeed in this field.

Thirdly, women in the legal profession are often at the forefront of fighting for gender equality and social justice. They bring a unique perspective to issues such as sexual harassment, domestic violence, and discrimination, and are often able to advocate for marginalized groups in a way that their male counterparts cannot.

Finally, having women in positions of power in the legal world is important for the overall health of our democracy. When women are represented in government and the judiciary, it sends a message that everyone has a voice and a place in our society. This can help to build trust and confidence in our legal system, and ensure that it is truly representative of the people it serves.

Overall, the role of women in the legal world is critical for ensuring that our legal system is fair, just, and inclusive. By supporting and empowering women in this field, we can create a better future for all.

Artificial Intelligence - The Fourth Industrial Revolution

Soni
B.Ed. 1st semester

Artificial intelligence is the branch of computer science concerned with making computers behave like humans.Artificial intelligence (AI) refers to the ability of machines to perform cognitive tasks like thinking, perceiving, learning, problem solving and decision making. Initially conceived as a technology that could mimic human intelligence.Artificial Intelligence includes technologies like pattern recognition, machine learning, neural networks, big data, self-algorithms, etc.

The capabilities of AI have expanded rapidly, and due to this, its utility is growing in a number of fields. Artificial Intelligence, also popular as Industrial Revolution 4.0, has been making a huge impact on technological and scientific innovation in a wide range of fields.

Artificial Intelligence was first introduced in 1956 by Jon McCarthy at the Dartmouth conference, Massachusetts Institute of Technology.

Applications of Artificial Intelligence (AI):

1. Healthcare Sector: Machine learning is being used for faster, cheaper and more accurate diagnosis and thus improving patient outcomes and reducing costs. For Example, IBM Watson and chatbots are some of such tools.

2. Business Sector: To take care of highly repetitive tasks Robotic process automation is applied which perform faster and effortlessly than humans. Further,

Machine learning algorithms are being integrated into analytics and CRM platforms to provide better customer service.

3. Educational sector: AI can make some of the educational processes automated such as grading, rewarding marks etc. therefore giving educators more time. Further, it can assess students and adapt to their needs, helping them work at their own pace. AI may

change where and how students learn, perhaps even replacing some teachers.

4. Financial Sector: It can be applied to the personal finance applications and could collect personal data and provide financial advice. In fact, today software trades more than humans on the Wall Street.

5. Legal Sector: Automation can lead to faster resolution of already pending cases by reducing the time taken while analyzing cases thus better use of time and more efficient processes.

6. Manufacturing sector: Robots are being used for manufacturing since a long time now, however, more advanced exponential technologies have emerged such as additive manufacturing (3D Printing) which with the help of AI can revolutionize the entire manufacturing supply chain ecosystem.

7. Speech Recognition: There are intelligent systems that are capable of hearing and grasping the language in terms of sentences and their meanings while human talks to it. It can handle different accents, slang words, noise in the background, change in human's noise due to cold, etc.

8. Agriculture: AI also plays a vital role in driving the food revolution. AI addresses many challenges like excess pesticide use, inadequate demand prediction, and lack of assured irrigation.

Possible areas for AI applications in Indian conditions

1. It can complement Digital India Mission by

   helping in the big data analysis which is not possible without using AI.
2. Targeted delivery of services, schemes, and subsidy can be further fine-tuned.
3. Smart border surveillance and monitoring to enhance security.
4. Weather forecasting models may become proactive and therefore preplanning for any future mishaps such as floods, droughts and therefore addressing the farming crisis, farmer's suicide, crop losses, etc.
5. Disaster management can be faster and more accessible with the help of robots and intelligent machines.
6. In the counterinsurgency and patrolling operations, we often hear the loss of CRPF jawans which can be minimized by using the robotic army and lesser human personnel.

Concerns with the AI

1. Job losses:

Replacement of humans with machines can lead to large-scale unemployment. Unemployment is a socially undesirable phenomenon.

2. Human error: Being largely algorithm-based, technology can be coded to have a negative impact on certain demographics and discriminate against people.

3. For example, Microsoft's ill-fated chatbot, Tay Tweets, had to be taken down after only 16 hours after it started to tweet racist and inflammatory content – ideas it repeated from other Twitter users.

Worryingly, if security is not 100%, hackers can take advantage of AI's thirst for knowledge

4. High Cost: Creation of artificial intelligence requires huge costs as they are very complex machines. Their repair and maintenance require huge costs.

5. Not ethical to replicate Humans: Intelligence is believed to be a gift of nature. Therefore an ethical argument continues, whether human intelligence is to be replicated or not

6. Cannot replicate Humans: Machines do not have any emotions and moral values. They perform what is programmed and cannot make the judgment of right or wrong. They cannot take decisions if they encounter a situation unfamiliar to them.

7. No Original Creativity: While the AI can help you design and create, they are no match to the power of thinking that the human brain has or even the originality of a creative mind.

8. Privacy & Security: The increasing accessibility of facial-recognition technology has also increased concerns with respect to privacy, security, and civil liberties.

India's G20 Presidency

Ankita
B.Ed. 1st Semester

India holds the presidency of The G20 from December 1, 2022 to November 30, 2023. The 43 heads of delegations the largest final ever in G20 will be participating New Delhi Submit in september this year.

The Logo draws inspiration from the vibrant colours of India's National Flag - Saffron, White, Green and Blue. It juxtaposes planet Earth with the Lotus. India's national flower that reflects growth amid challenges. The Earth reflects India's pro-planet approach to life, one in perfect harmony with nature. Below the G20 Logo is Bharat written in the Devnagari script.

The theme of India's G20 presidency "Vasudhaiva Kutumbakam - One Earth One Family, One Future" is drawn from the ancient Sanskrit text of the Make Upanishad. Essentially the theme Affirms the value of all life - human, animal, plant and microorganisms and their interconnectedness on the planet Earth and in the wider Universe. The theme also spot lights LIFE (lifestyle for Environment), with its associated. environmentally sustainable and responsible choices. Both at the level of individual life style as well as national development leading to Globally transformative actions resulting in a cleaner, greener and bluer future.

For India, the G20 presidency also marks the beginning of "Amritkaal", the 25 the year beginning from the 75th Anniversary of its Independance from 15 August 2022, leading up to the centenary of its independance. Towards a futuristic prosperous inclusive and developed. society distinguished by a human centric approach at its core.

A New working group on Disaster Risk Reduction will be established under India's presidency to encourage collective work by the G20, undertake Multi Disciplinary research and exchange best practices on Disaster Risk reduction.

India's special Invitee Guest Countries are Bangladesh Egypt, Mauritius, Netherlands, Nigeria, Oman,

Singapore, Spain & UAE.

G20 Invited International Organizations are UN, IMF, WB, WHO, ILO, FSB, OFCD AU Chair, NEPAD Chair, ASEAN Chair, ADB, ISA and CDRI.

G20 Meetings will not be limited to New Delhi or other Metropolises. Drawing inspiration from tis G20 Presidency theme as well as Prime Minister's Vision of an 'All of Government" approach. India will host 200 meetings Over 50 cities across 32 Dif Work streams and would have the opportunity to offer G20 delegates and guests in a glimpse of India's Rich Cultural Heritage and provide them with a Unique Indian Experience.

India's G20 Priorities

Green Development Climate Finance & LiFE

The opportunity to lead G20 comes at a time of compounding existential threat with the COVID-19 Pandemic having exposed the fragilities of our systems under the cascading impacts of Climate change. In this regard Climate change is a key priority for India's presidential presidency, with a particular focus towards. Not only Climate Finance and Technology but also ensuring just energy transitions for developing nations across the world.

Accelerated Inclusive & Resilient Growth:

An accelerated resilient and inclusive growth is a corner-stone for sustainable development. During its G20 presidency India aims to focus on areas that have the potential to bring structural transformation. This includes an ambition to accelerate integration of MSMEs in Global trade.

Accelerating progress on SDGs:

India's G20 Presidency collides with the crucial midpoint of 2030 Agenda. India wants to focus on recommitting G20's efforts to achieving the targets laid out in the 2030 Agenda for Sustainable Development.

Technological Transformation & Digital Public Infrastructure :

As G20 presidency India can foreground its belief in a human-centric approach of technology and facilitates greater knowledge-sharing in priority areas like digital public infrastructure. Financial inclusion and tech-enabled development in sector ranging from agriculture to education.

- Multilateral Institution for the 21st Centaury.

Women led Development :

Highlight inclusive growth and development with women empowerment and representation.

Child Rearing and Learning

Nikhil Kundu
M.A (Sociology) 4th Semester

Child rearing is not just the basic food, shelter, clothing triad that keeps children alive, but also the active moulding of character, personality, talents, and emotional and physical well-being of the child. In most nations, child-rearing practices are highly influenced by the traditional norms and values. These practices bear the greatest impact on the health seeking behaviour of a nation. Child rearing includes role of mothers, fathers, siblings and other family members.

There is a certain age of child in which he/she should get admitted in the school. No one give it importance but it's a main key of socialization. In developing countries, people seek admission for their children in school as little as 2.5 years which is wrong because at such a young age child needs special care n look after in his/her primary institution "FAMILY".

The proper age of child of facing the world other than home should not be less than four years because childhood is the socializing phase. Whatever comes in front of the child becomes the part of his/her learning. The basic and the first place of child's learning is his/her mother's lap and it must be continued for few years at least till four years of age.

The mental state of child is fulfilled and filled by the socialization process by primary and secondary institutions. We know that whatever child learns in

his/her childhood becomes the obvious part of his/her life. Family has a vital role in child rearing. Some parents think that they should admit their child in schools when he/she starts speaking. So that the child will be educated in very young age comparatively to others. In other words, we can say the race of age in education that whose child will complete his/her studies first starts early. It is a fact in our society. I believe that till four years he/she should be socialized at home completely.

Sociology is a complete discipline which covers every issue of our life and every problem is correlated to each other. There are enormous challenges that come with parenting. No matter where in the world they may live, each family has its own methods and traditions when it comes to raising a child.

Azadi Ka Amrit Mahotsava

Aishwarya Singh
B.Ed. 1st semester

"Azadi Ka Amrit Mahotsava" is an initiative of the government India to celebrate and commemorate 75 years of Independence and the glorious history of its people, culture and achievements."

It is dedicated to the people of India who have not only been instrumental in bringing India this far in it's evolutionary journey but also hold within them the power and potential to enable the vision of activating **India 2.0** filled by the spirit of Aatmanirbhar Bharat" (Self- Independent India).

The official celebration of Azadi ka Amrit Mahotsava commenced on 12th March 2021 which started a 75-week count down to our 75th Anniversary of Independence and end post a year on 15th August 2023.

Historical background of Idea : On 12th March 1930, Mahatma Gandhi started Dandi March from Sabarmati Ashram for the awakening self-reliance and self-respect of the country. On this very day in 2021, the symbolic Dandi Yatra was started by our PM Mr. Narendra Modi, marking the revival of our journey of self-reliance and self esteems thus beginning Azadi ka Amrit Mahotsava.

The Mahotsava symbolizes the awakening of the nation the festival of fulfilling of the dream of good governance and of global peace and development.

Aim of the Program is to create vision for India in 2047. The Amrit Mahotsava is being celebrated on the basis of its five pillars-

- Struggle for Independence
- Ideas of 75 years
- Achievements of 75 years
- Actions of 75 years
- Resolutions of 15 years

Various social and cultural programmes will be organised along with the demonstrations of technological and scientific achievements. It will be celebrated as "Jan Utsav" in the spirit of "Jan

Bhagidari" i.e. partners in the development of country.

Various Themes are-

- **Freedom Struggle :** Commemorating milestones in History unsuing heroes, etc.
- **Ideas @ 75 :** Celebrating ideas and ideals that have shaped India with sub theme of Innovation, Peace and Unity, Vasudhaiva Kutumbakam, Development, Justice.
- **Revolve @ 75:** Reinforcing commitments to specific goals and targets This theme focuses on our collective resolve and determination to shape the destiny of our Motherland.
- **Action @ 75:** Highlighting steps being taken to implement policies and actualise commitments with the clarion call of : SABKA SAATH, SABKA VIKAS, SABKA VISHWAS, SABKA PRAYAS.
- **Achievement @ 15:** Showcasing evolution and progress across different sectors. Focuses on marking the passage of time and all our milestones along the way.

'Azadi Ka Amrit Mahotsav" celebrates the rapid strides that India has taken in the past 75 years, and synergistic actions to regain our rightful place in the comity of nations, with the participation of nation and idea of "Making Bharat Vishwa Guru".

Cultural Competency

Nikhil Kundu
M.A. 1st Semester (Sociology)

This article focuses on cultural competency and how it has gained a lot of momentum in terms of equitable health care. Cultural competency Is loosely described as the ability of a healthcare system to demonstrate cultural competence towards a patient. The main aim of cultural competence is to reduce health disparities in a society.

Studies have shown that ethnic and racial minorities have higher morality and morbidity rates. They are also more prone to experiencing financial problems and are less likely to have access to health care facilities. In North America, for Instance, more minority groups don't have health insurance.

The readings also discuss the various social determinants of health that can affect a person's vulnerability to mental illness. While it is often overlooked, this concept can help decrease or even prevent a person from developing a mental illness.

The lack of cultural competency can lead to patients being dissatisfied with their care. This is because if the providers and systems that support cultural competency are not working together, patients will be more prone to experiencing negative health consequences.

It is also important that cultural competency is acknowledged and started making a mainstream impact in the health service. Every sector of the industry must recognize the immense diversity that exists in its operations. This will allow them to move toward working together with communities.

There are four important pillars of cultural competency; these are better coordination, better information, community engagement and development of culturally appropriate services, The readings iterated that systems need to be focused more on health promotion as well as diversity of treatment. Further, health services need to improve linguistic competency strategies while offering services that are cost-effective and affordable.

While there is a lot of work to be done, health systems have started adopting comprehensive strategies to accommodate for racial and ethnic minorities. There are increasingly more state and federal guidelines that encourage health systems to cater to diversity. There are also efforts from the academic side; there is a lot of research being carried out that is looking into best strategies and best practices of improving cultural competency.

An Army Man

Yati Bisht
B.A. 1st Semester

Away from their family,
Away from their friends,
An army Man keeps on working
For their country and friends,
When his daughter's birthday
Come on .
She never cries for cakes and popcorn
She only cries for her father's sweet voice
On
He sacrifices all the joy
Like a little boy

My DAV College

Khushi Singh
B.A. 5th Semester

As constant as the Sun
As boundless as the Ocean
As audacious as the Day
As progressive as Time
As true as the Gospel
As enticing as a Riddle
As fit as the Fiddle
As gentle as the Fawn
As fair as the Morn
As immense as the Sea
As imperishable as Eternity
As beautiful as the Rainbow
As mobile as Humanity
As consoling as Night
As smooth as Ice
As fresh as breath of Spring
As lovely as Forget-Me-Nots

Hinduism : A Way of Life

Khushi Singh
B.A. 5th Semester

Hinduism originated on its own. It sprouted spontaneously like a lotus flower in the sanctified water of Vedic culture, all great religions of the world had their founders with the sole exception of Hinduism. On account of its eternity and antiquity it has been rightly called 'Sanatan Dharma'. It has existed since times of immemorial.

The later Aryans distinguished themselves from the other branch of the Aryans who had migrated to the west of Indus by calling themselves Hindus. It is the way of life developed and adopted by them based on Deep experience and keen observation. One single God of the Aryans in the vedic age later multiplied into many gods and materialised in the form of ideals. The old religious spirit percolates by an artistic incentive manifested in the form of sublimely sculptured ideals which were installed in pious precincts of a holy temple.

God in abstraction become concrete and came close to the common man to be seen with the mortal life. The divine spirit infused in matter so that even stones become vibrant with celestial vitality and pulsated with life. Hinduism thus simplified the complex concept of God which was not so simple to be comprehended.

Word Hindu is composed of ह + इन्दु . 'ह' stands for the Sun and Indu stands for the Moon. The great dynasties of the Kshatriyas were called Suryavanshi and Chandravanshi. A happy blend of the sun and the moon, The Hindu is an embodiment of fire and coolness, when touched to the quick he becomes flame of fire, the attributes of the sun emanate from his person and he glows to dispel darkness of despondency, otherwise he is cool like the moon tranquillising the environment he lives in.

Hinduism has survived braving the onslaught of foreign invaders. The Saks, the Kushans, the Huns and the Greek failed to shake the firm foundation of Hinduism. Such has been its large heartedness and generosity that they were all absorbed in the Hindu culture. The cosmic concept of 'वसुधैव कुटुम्बकम्' teaches to treat the whole world as a family.

Hinduism contributed a lot towards the growth of arts and sciences. Not only in poetry, drama, fiction, law, philosophy but also in astronomy medicine, chemistry, mathematics, our people made remarkable progress.

What could be a better concept of socialism or even communism for that matter than the invocation in the Rig Ved.

संगच्यध्वं संवदध्वं सं वो मनासि जानतां

(Unite, Consult together, let your minds think together the same thoughts)

Corona Virus

Kirti Vishnoi
M.Sc.(Botany) 2nd Semester

Corona virus disease (COVID-19) is an infections. disease caused by SARS-CoV-2 Virus.

Most people infected with the virus will experience mild to moderate respiratory illness and recover without requiring special treatment. However, some will become seriously ill and require medical attention. Older people and those with underlying medical conditions like Cardiovascular Disease, Diabetes Chronic respiratory disease, or Cancer are more likely to develop illness. Anyone can get sick with COVID-19 and become seriously ill or die at any age.

The best way to prevent and slows down transmission is to be well informed about the disease and how the virus spreads. Protect yourself and others from infection by staying at least 1 metre apart from other, wearing a properly fitted mask, and washing your hands or using an alcohol-based rub frequently. Get vaccinated when it's your turn and follow local guidance.

The virus can spread from an infected person's mouth or nose in small liquid particles when they cough, sneeze, speak, ding or breathe. These Particles range from larger respiratory droplets to smaller aerosols. It is important to practice respiratory etiquette. for example by coughing into flexed. elbow, and to stay home and self-isolate until your recover if you feel unwell.

Technology - A Boon or Bane?

Cadet Mansi khugshal
B.Sc. 2nd Semester

Nowadays, this term mainly signifies the knowledge of tools, machines, techniques, and methods to solve a problem. Various innovations have taken place in this field, which has significantly impacted lives in different ways. It has reduced the effort and time required to complete a task, thus enhancing quality and efficiency. Although the benefits of technology generally far outweigh the risks. We cannot forget that there are risks. Advances in technology help engage learners, but they can also be misused.

Machines cannot plan and think beyond the instructions that are fed into their system. Technology in education has reduced the intellectual and analytical ability of students. Although technology is a good thing, everything has two sides. Here are some negative aspects of technology, i.e., stalking and legal issues, identity theft, scams, fraud, and unemployment, as a single machine can replace many workers.

Conclusion

Technology is actually amoral. It’s not inherently good or evil. But it surely can be used in a very powerful way. Technology alone cannot help build a better world. The collateral collaboration between machines and humans is required for progress and prosperity of the nation. We need to develop a more robust management system for the efficient functioning of technology.

Leadership

Dheeraj Sana
M.A. I Year (Sociology)

Leadership is the ability to inspire and motivate a group of individuals towards a common goal. It is a critical component in any organization or team, as it is the leader who sets the direction, establishes the culture, and ultimately drives success.

One of the key traits of an effective leader is the ability to communicate clearly and effectively. This includes listening actively to others, providing feedback, and ensuring that everyone is aligned and understands the goals and expectations. A good leader is also able to build strong relationships with their team members, earning trust and respect through their actions and integrity.

Leadership is not limited to a specific type of organization or industry, as it is a fundamental aspect of human nature. In fact, we all have the potential to be leaders in our own lives, whether that means setting personal goals and inspiring others to follow, or simply being a positive influence on those around us.

Effective leadership also involves making difficult decisions and taking calculated risks. Leaders must be able to weigh the pros and cons of each choice and have the courage to make tough calls when necessary.

To conclude, leadership is a complex and multifaceted concept, but it is ultimately about guiding and inspiring a group of individuals towards a common purpose. By developing strong communication skills,

building trust, and making tough decisions, effective leaders can create a culture of success and achieve their goals.

For those who dare to dream there is a world to win

Sumit Chhetri
B.A. 3rd Semster

"For those who dare to dream there is a world to win" for me it took nine written exams , ten SSB's for over 4 years to finally live my dream. The journey started off in 2018 when my younger self decided to sit for NDA exam. My hard work paid off and I was invited to 34SSB ALLAHABAD for my first SSB but I got conference out. After my first SSB I understood the importance of being a jack of all trade , I started to build my personality in a way that I come out with shinning colours not only in academics but also in confidence, sportsmanship, communication skills, group dynamics and personality presentation. The path was not easy it had many failures , my biggest challenge was to become a better version of myself and try to gain experience with everything that came my way. My college's debating society, Mantrana was the opportunity that helped me in working with the group and get over my insecurities. My journey cannot be summed up without my parents support there never give up attitude that infused in me the feeling that I can do it. After a long night of failures, pressure, fear all my hard work, patience gave light to my dreams in my tenth SSB at 31SSB Kapurthalaa. I got recommended and my whole journey from being a young boy who got inspired from the stories of Captain Manoj Pandey (PVC) and Maj Mohit Sharma (Ashok Chakra) to a dedicated.

Disciplined and worthy person that I'm today flashed in front of my eyes. It was a surreal and one of the most important event of my life.

National Education Policy 2020

Hitesh Thapliyal
B.Ed. Semester

What is NEP 2020?

The National Education Policy 2020 is the first education policy of the 21st Century, and aims to address the many growing developmental imperatives of this country.

This policy proposes the revision and revamping of all aspects of the education structure, Including its regulation and governance, to create a new system that is aligned with the aspirational goals of 21st-century education, while remaining consistent with India's traditions and value systems. What are some of the previous educational policies in India?

1. Kothari Commission (1964- 66)
2. National Education Policy (1968)
3. National Educational Policy (1986)
4. National Curriculum Framework (2005)

What are some of the changes NEP 2020 will bring?

1. A key feature of this policy is flexibility and no hard separation between Arts, commerce, and sciences. This policy aims to create a multi-disciplinary and Holistic approach to education with a special emphasis on vocational education.
2. At the school level, the curriculum structure has been changed from 10+2 to 5 + 3+ 3 + 4 design. Thus, the new stages of the school system will be –

Foundational Stage: It will consist of 3 years of preschool and the first and Second grades.

Preparatory Stage: It will last from grade third to grade 5.

Middle Stage: This stage will last from grade six to grade eight.

High School Stage: The last stage will be divided into two phases, from Ninth to tenth grade and then from eleventh to twelfth grade.

3. The medium of instruction until at least fifth grade will be the mother tongue or local language.
4. All students will have to take State School examinations in grades third, fifth and eighth in addition to Board Examinations in grades tenth and twelfth.
5. When it comes to higher education, an undergraduate degree will be either of three or four-year duration, with multiple exit options and appropriate certifications. A master's program will now be only one year for those

Who have completed a four-year undergraduate course. The MPhil program will now be discontinued.

"The best way to find yourself is to lose yourself in the service of others."

– Gandhi.

If we look upon our country India , will find that the so called golden bird was totally ruined by the invaders and later by the foreign subjugation in the past .

The Indian freedom struggle gave birth to many leaders whose ideas and methods stirred the hearts and minds of people . As a student of history I always feel motivated by our freedom fighters and the leaders of national movement. They always wanted our country to be free not only from the foreign rule but also from all kinds of subjugation, discrimination, oppression, inequality followed by the prosperity and

Welfare of all people . For this they tried to call upon the people, especially the youth of India to volunteer for a good cause selflessly and to help there country grow. It is so disappointing that many people within our societies do not understand or value the importance of services in the community by volunteering. Serving the society is very important in helping to solve many problems especially of those

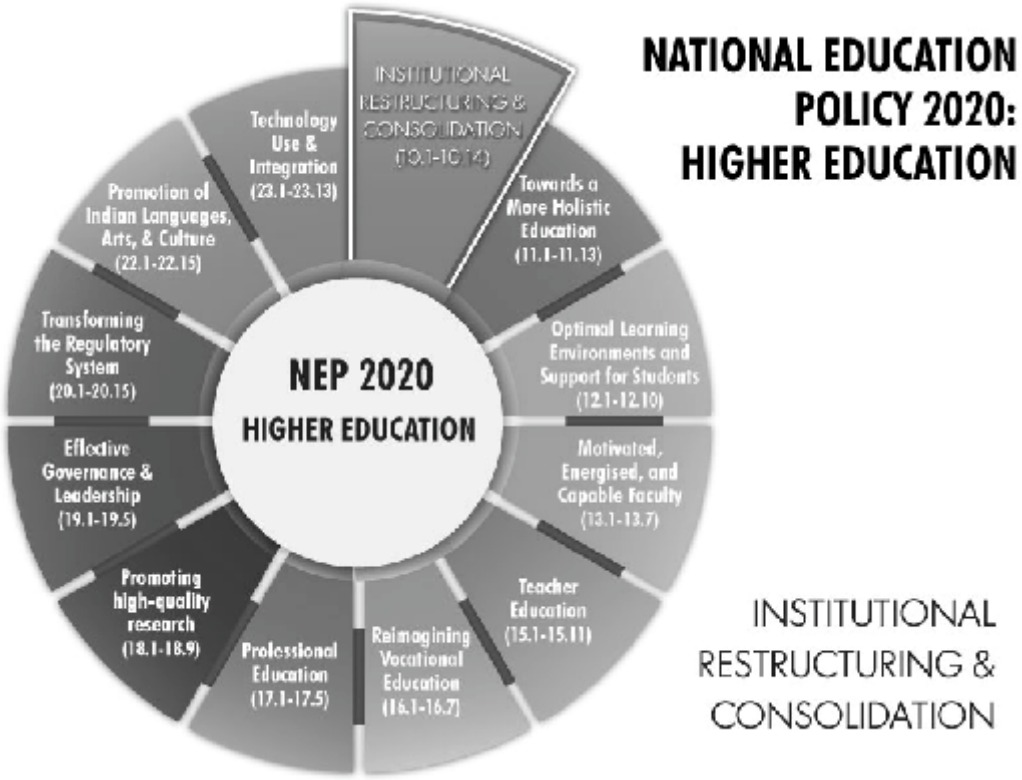

unfortunate under- privilege peoples .

For example, people may contribute goods such as clothes and food stuffs to help people who have no homes or take it to orphanages. Being responsive to the needs of other people makes us realize and appreciate humanity and spiritual being as well as feeling good for changing someone's life. This can even help shy people get self esteem. Volunteering in society work helps in promoting and building our social obligations as human beings.

Through volunteer work, many people's lives are changed be it through words or material assistance for me, volunteering has helped to overcome many flaws, helped in building my confidence , public speaking and to devlop other soft skills , followed by connecting to people and making new friends. Whether it is about keeping your city clean or joining an NGO , by being an active member of a youth organization like NSS (National Service Scheme) can also help you expand your horizon and knowledge. Not only can you help people but also inspire others to follow your lead. If you think your society does not have an organization that represents your ideas, come forward and create one. There is no harm in and being a trendsetter.

Above all the selfless service for the community always leads to satisfaction and one must not orget that what goes around comes around.

NEP 2020 (New Education Policy)

Anuradha
Ph.D. Scholar

Education is fundamental for achieving full human potential, developing an equitable and just society, and promoting national development. Universal high-quality education is the best way forward for developing and maximizing our country's rich talent and resources for the good of the individual, the society, the country and the world.

New Education Policy [NEP] is the first education policy of the 21st century which aims to address many developmental imperatives of our country. This policy proposes the revision and revamping of all aspects of our education structure, including its regulation and governance, to create a new system that is aligned with aspirational goals of 21st century education, SDG goals while building upon India's tradition and value systems. Education must evolve to be more experiential, holistic, integrated, inquiry-driven, discovery oriented, learner-centric, discssion based, flexible and enjoyable at same time. The new curriculum must include basic arts, craft, humanities, games, sports language, literature, culture, science and mathematics, to develop all aspects and capabilities of learners and make education well rounded and useful. The new education policy (NEP2020) must provide to all students, irrespective of their place of residence, a quality education system, with particular focus on historically marginalized, disadvantage, and underrepresented groups. Education is a greater leveler and is best tool for achieving economic and social mobility, inclusion, and equality. The NEP 2020 is founded on five guiding pillars of Access, Equity, Quality, Affordability and Accountability. It will prepare the youth to meet the diverse national and global challenges of the present and the future.

New Academic Structure (5+3+3+4)

As suggested by NEP, new education system will follow a 5+3+3+4 education system replacing 10+2 model, where the students will spend 5 years strengthening their foundation, 3 years in preparatory stage, 3 years in the middle stage and rest 4 years in the secondary stage.

Previous Education Policy: -

The implementation of previous policies on education has focused largely on issues of access and equity. The unfinished agenda of the national policy on education 1986, modified in 1992. A major development since the last policy of 1986/92 has been Right of Children to free and Compulsory Education Act 2009 which laid down legal underpinnings for achieving universal elementary education.

Objectives of NEP 2020: -

1) Recognizing, Identifying and fostering the unique capabilities of each student.

2) Emphasis on conceptual understanding rather than rote learning and learning for exams.

3) Multi disciplinarity and holistic education across the

sciences, social sciences, arts, humanities, sports, etc.

4) Extensive use of technology in teaching and learning, removing language barriers.

5) Respect for diversity and respect for local context in all curriculum.

6) Promoting multilingualism and power of language in teaching and learning.

7) Life skills such as communication, cooperation, teamwork, and resilience.

8) Synergy in curriculum across all level of education from early childhood care andeducation to school education to higher education.

9) Outstanding Research for better development and education

10) Continuous review of progress based on sustained research.

11) UG degrees will have multiple exit option, credit-based system with certificate, advance diploma, degree, degree with research.

12) Teacher's training

13) Allowing foreign Universities to open campus in India

14) Emphasis on local language (mother tongue)

How the New Education Policy 2020 will be Implemented?

1) The new education policy came after 30 years is all set to change the existing academic system of India with the purpose of making it at par with the international standard of academic.

2) The Government of India aims to set up the NEP by the year 2040.

3) The proposed reform by NEP 2020 will come into effect by the collaboration of central and the state Government.

4) Subject wise committees will be set up with the Government of India both central and statelevel ministries for discussing the implementation strategy.

Conclusion: -

The objectives and implantation of NEP are indeed progressive in nature. It gives a fresh look to the educational system which is inbuilt with flexibility and mark of quality that is capable of moulding India to a vibrant society which matches our rich cultural heritage. The NEP 1986, which created a pool of educational system and trained human resources who contributed the value chain of development but NEP 2020 aspires of creating human resource who will generate skill and development, talent in every sector of society. With NEP India will be at par with international academic standards all over. It is designed to ease the burden of classroom teaching and examination on students and better for the future of our country.

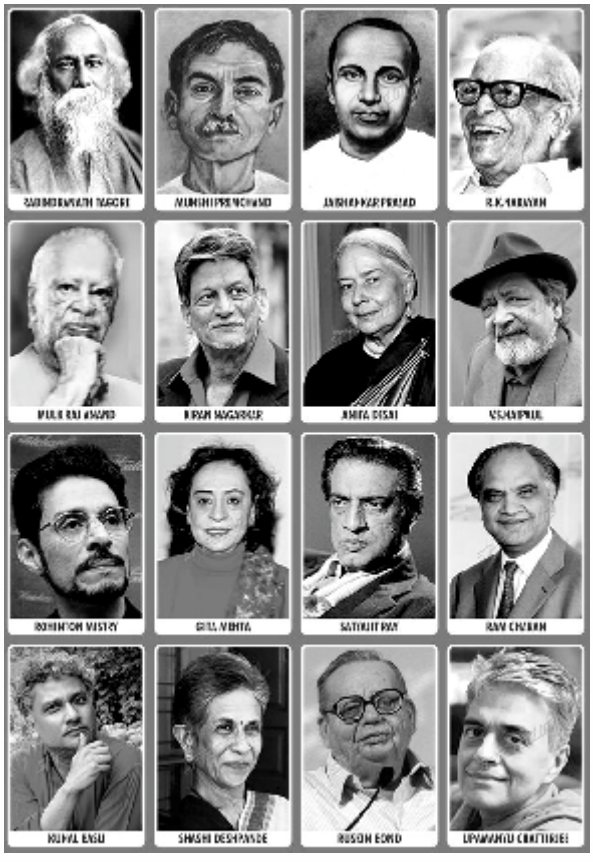

The NEP 2020 is a significant step towards transforming the Indian education system. The policy aims to make education more inclusive, equitable, and holistic. It focuses on the development of 21st century skills such as critical thinking, creativity, and problem solving. The Policy also emphasizes the importance of teacher training and continuous professional development. The implementation of NEP 2020 will require a collaborative effort from all stakeholders, including the government, schools, teachers, parents, and students.

Dr. B.R. Ambedkar

Shiya Bijalwan
B.A. 3rd Semester

Bhimrao Ramji Ambedkar, aka Babasaheb Ambedkar, was an Indian jurist, economist, and social reformer who is known as the "Father of the Indian Constitution."

Born on April 14, 1891, in Mhow, Madhya Pradesh, India, he belonged to the Dalit community, which was considered the lowest caste in the Indian caste system. Despite facing discrimination, he was an exceptional student, earning degrees from the University of Bombay and Columbia University in the US, where he became the first Dalit to obtain a PhD in economics.

Ambedkar was a fierce advocate for the rights of the Dalit community and worked tirelessly to abolish the caste system and end discrimination against them. He played a key role in drafting the Indian Constitution and served as the first Law Minister of independent India. Throughout his life, he fought for social justice and equality for all, regardless of their caste, religion, or gender. His contributions to India's social and political landscape are immense, and he continues to be a revered figure in Indian history.

Taking Care of Your Mental Health

Cadet Ashish Negi
B.Com. 2nd Semester

Taking care of your mental health is just as important as taking care of your physical health. Mental health problems, such as anxiety and depression, are becoming increasingly common among college students, and can have a significant impact on academic performance and overall well being. There are many strategies that can help maintain and improve mental health. Here are few points on taking care of mental health:

1. Practice self-compassion.
2. Get enough sleep.
3. Eat a balanced and nutritious diet.
4. Exercise regularly.
5. Take breaks throughout the day.
6. Connect with friends and family.
7. Cultivate hobbies and interests.
8. Get outside in nature.
9. Practice mindfulness and meditation.
10. Seek professional help when needed.
11. Identify and manage stress triggers.
12. Use positive self-talk.
13. Set achievable goals.
14. Stay organized.
15. Practice time management.
16. Avoid procrastination.
17. Engage in positive self-reflection.
18. Set boundaries in relationships.
19. Learn to say "no".
20. Avoid drugs and excessive alcohol consumption.
21. Engage in healthy coping mechanisms.
22. Practice gratitude.
23. Express emotions through creative outlets.
24. Use humor to cope with stress.
25. Practice good hygiene.

Jai Hind

The Brave Deed of a Unsung Warrior

Cadet Aditya Thapa
B.Sc. 2nd Semester

"For us they are on the border, who can't break the order

Who are always ready to sacrifice, they are as hard as Himalayan ice Because of them we are alive, and we are secure in Indian hive

They fight in battle without any fear, there is no security of future year

Who don't know the difference in day and night, who are always ready to fight Salute to the Indian soldiers"

Indian soldiers have brave hearts and never gets afraid no matter how big the problem is they face their problem bravely and courageously without getting scared because of the thought of losing their life. These are the qualities of a soldier that separates them from other ordinary people. They devote their life for the protection of our motherland. There's a soldier who is known to kill 300 Chinese troops all alone during the Indo-Chinese war of 1962, Major Jaswant Singh. Isn't it something that could give anyone goosebumps? Well, Indian soil is known in the world for having bravest of the brave soldiers ever the name of the soldier who killed 300 Chinese enemies alone was Rifleman Jaswant Singh Rawat. Rifleman Jaswant Singh Rawat was an Indian Army soldier serving in the 4th Garhwal Rifles. He was born on 19th August 1941 in Baryun, Pauri Garhwal, Uttarakhand. Jaswant Singh Rawat took part in the Indo-Chinese war of 1962.

In the history this soldier is known for serving and protecting the country until his last breath and killing 300 Chinese soldiers alone.

Rifleman Jaswant Singh is considered the hero of Sino-India War Arunachal Pradesh, India 1962. According to a local legend, he single-handedly fought the Chinese army for three days. It was the last phase of the war in November 1962, and due to a lack of resources, his company was asked to fall back. But Jaswant Singh remained at his post. With the help of two local girls, Sela and Nura, Jaswant Singh set up weapons at three different spots and fired them non-stop for three days. Thinking a big contingent was firing at them, the Chinese Army stayed put. As the time passed, the Chinese Army grew frustrated, as they knew no way to counter the purported attack of the Indian Army. They finally caught the man who was providing food to Jaswant and the two girls and interrogated him. The man spilled the beans. The Chinese then surrounded Jaswant Singh from all sides. Nura was captured and Sela died in a grenade burst. Jaswant Singh, realising he was about to be captured, shot himself. The Chinese forces cut-off Jaswant Singh's head and took it back to China as a war souvenir. After the war was over, the commander of the Chinese forces, impressed by the late Jaswant Singh's show of bravery, returned his head along with a brass bust made of the soldier. It is now installed at the site of the battle. He was posthumously awarded Maha Vir Chakra for his bravery. Jaswant Singh's display of valour, and his love for his nation has proved to be a great source of inspiration to Indian soldiers since then.

JAI HIND

Global Warming Crisis

Cadet Jayant Jhinkwan
B.Sc. 2nd Semester

Global warming has become one of the most pressing environmental challenges of our time, with far-reaching consequences for our planet and future generations. The alarming rise in global temperatures is primarily caused by human activities, particularly the excessive emission of greenhouse gases into the atmosphere. This article delves into the critical issue of global warming, its causes and effects, and the urgent need for concerted action to mitigate its impact.

Global warming refers to the long-term increase in Earth's average surface temperature, primarily caused by the buildup of greenhouse gases in the atmosphere. These gases, including carbon dioxide (CO2), methane (CH4), and nitrous oxide (N2O), act like a blanket, trapping heat from the sun and preventing it from escaping back into space. The primary contributor to global warming is the burning of fossil fuels such as coal, oil, and natural gas for energy production, transportation, and industrial processes.

Causes of Global Warming:

1. **Carbon Emissions:** The combustion of fossil fuels releases vast amounts of carbon dioxide, the most significant greenhouse gas, into the atmosphere. Deforestation, primarily driven by human activities, also contributes to increased CO2 levels.
2. **Methane Release:** Agricultural practices, livestock farming, and the decomposition of organic waste in landfills produce methane, a potent greenhouse gas that contributes to global warming.
3. **Industrial Activities:** Industrial processes, including manufacturing, mining, and cement production, release greenhouse gases such as CO2 and N2O into the atmosphere.

Effects of Global Warming:

1. **Rising Temperatures:** Global warming leads to an increase in average global temperatures, resulting in heatwaves, droughts, and the melting of polar ice caps and glaciers. This phenomenon directly impacts ecosystems, wildlife, and human health.
2. **Extreme Weather Events:** Global warming intensifies extreme weather events, including hurricanes, cyclones, floods, and wildfires. These disasters cause widespread destruction, loss of life, and economic upheaval.
3. **Sea-Level Rise:** As temperatures rise, the polar ice caps and glaciers melt, contributing to the rising sea levels. This poses a significant threat to coastal communities, leading to erosion, inundation, and the loss of vital habitats.

Addressing global warming requires global cooperation and immediate action to reduce greenhouse gas emissions and mitigate the effects of climate change. Here are some crucial steps that can be taken:

1. **Transition to Renewable Energy:** Shifting from fossil fuels to renewable energy sources such as solar, wind, and hydroelectric power is crucial to reducing greenhouse gas emissions.
2. **Energy Efficiency:** Emphasizing energy efficiency in industries, transportation, and buildings can significantly reduce carbon emissions.
3. **Reforestation and Forest Conservation:** Protecting existing forests and undertaking large-scale reforestation efforts can help absorb CO2 and mitigate the effects of global warming.

Global warming is an existential crisis that demands immediate attention. The consequences of inaction are far-reaching and impact every aspect of our lives. By taking decisive action to reduce greenhouse gas emissions, transition to renewable energy, and promote sustainable practices, we can mitigate the effects of global warming and safeguard the future of our planet for generations to come. The time to act is now.

Women Empowerment: Winds of Change

Cadet Akhilesh Uniyal
B.Som. 2nd Semester

Women empowerment has become the buzzword today with women working alongside men in all spheres. They profess an independent outlook, whether they are living inside their home or working outside. They are increasingly gaining control over their lives and taking their own decisions with regard to their education, career, profession and lifestyle.

With steady increase in the number of working women, they have gained financial independence, which has given them confidence to lead their own lives and build their own identity. They are successfully taking up diverse professions to prove that they are second to none in any respect.

But while doing so, women also take care to strike a balance between their commitment to their profession as well as their home and family. They are playing multiple roles of a mother, daughter, sister, wife and a working professional with remarkable harmony and ease. With equal opportunities to work, they are functioning with a spirit of team work to render all possible co-operations to their male counterparts in meeting the deadlines and targets set in their respective professions. Women empowerment is not limited to urban, working women but women in even remote towns and villages are now increasingly making their voices heard loud and clear in society. They are no longer willing to play a second fiddle to their male counterparts. Educated or not, they are asserting their social and political rights and making their presence felt, regardless of their socio-economic backgrounds. While it is true that women, by and large, do not face discrimination in society today, unfortunately, many of them face exploitation and harassment which can be of diverse types: emotional, physical, mental and sexual. They are often subjected to rape, abuse and other forms of physical and intellectual violence. Women empowerment, in the truest sense, will be achieved only when there is attitudinal change in society with regard to womenfolk, treating them with proper respect, dignity, fairness and equality. The rural areas of the country are, by and large, steeped in a feudal and medieval outlook, refusing to grant women equal say in the matters of their education, marriage, dress-code, profession and social interactions. Let us hope, women empowerment spreads to progressive as well as backward areas of our vast country.

Jai Hind

Decline in Moral Values in Contemporary World

Minakshee Rawat
B.A. 5th Semester

India is one of the oldest civilizations in the world with a kaleidoscopic variety and rich cultural heritage. It has achieved all-round socio-economic progress since Independence. Vedas were written in India. Buddha got divine knowledge here. We are proud of our rich cultural heritge but today we have forgotten those ideals, values and principles which were so dear to our ancestors.

The decline of moral values in modern times in Indian society is a concerning issue for many Indians. We are witnessing a significant discern in the traditional values that have served us for centuries. The weakening of moral values has been attributed to the influence of digital media, the emergence of a consumerist culture and the rise of individualism. The traditional values of respect for elders, honour for family and care for the underprivileged are being replaced by a new set of values that promote convenience over responsibility, self-gratification over altruism, and materialism over spiritual growth. Also, because humans have a lot of power and freedom to govern their environment, this power is sometimes misused due to avariciousness. As a result, Indian society is becoming increasingly selfish and materialistic, which can have long-term implications on our culture and values.

Moral values have been fading in recent times due to the rise of a more competitive culture and the influence of western media. Children are more addicted to electronic gadgets and online education, with less respect for their mentors. Greed and covetousness have caused a decrease in ethical and moral values, resulting in an increase in crime and fear among innocent people. The division between the wealthy and the poor has caused animosity between people, and those with more privilege are less likely to care about the plight of others.

It Is important for us to recognize this decline and take steps to reverse it. We need to encourage our youth to respect and uphold the values of our society, and foster a culture of compassion and altruism. We should also promote traditional values, such as respect for nature, community and spiritual growth, as these values are essential for our society to thrive.

With collective efforts, we can ensure that moral values remain integral to our culture and are passed on to future generations.

'We must maintain our moral values as we enter the digital age in order to create an equitable and happy society.'

DNA Day 2023

Five Things About DNA You Missed in Science Class

Geetanjali Negi
B.Sc. 2nd Year (CBZ)

It's time to celebrate the molecular machinery that makes you uniquely you. April 25 is DNA Day, an event celebrating two seminal discoveries in genetics. Seventy years ago, American biologist James Watson and English physicist Francis Crick first described the structure of deoxyribonucleic acid molecules as a double helix resembling a twisted ladder. Exactly 50 years later, scientists completed the Human Genome Project, a landmark effort to sequence and map all the genes that compose the human genome.

To commemorate the occasion, here are some interesting facts about DNA.

Recipe for life

DNA is like a code containing the genetic information that makes you, you. The code has four chemical building blocks: adenine, thymine, cytosine and guanine, abbreviated with the letters A, T, C and G. The letters of your genome (which is all of a person's DNA) combine in different ways to spell out instructions for making proteins, which carry out specific functions in your body. About 99.9% of your DNA sequence is identical to any other human. It's the 0.1% that causes differences in characteristics such as eye, skin and hair color and risks for certain diseases.

The fruit fly in you

Although humans and fruit flies look nothing alike, they are surprisingly alike genetically. About 60% of the genes of the common fruit fly, Drosophila, are found in humans. Around 75% of genes that cause human disease are conserved in fruit flies. That's why many scientists, including world-renowned geneticist Trudy Mackay and others at the Clemson University Center for Human Genetics, use flies as a model to understand complex trait genetic basis. Mackay led an international team that sequenced more than 200 fruit fly genomes. These lines have been used in over 100 labs worldwide to map fly genes for phenotypes relevant to human health and disease.

Healing one's self

Remember the Terminator, the Arnold Schwarzenegger character that could repair itself when injured? Our DNA is like that, too. During replication, a cell copies its entire genome so that when it splits in two, each daughter cell contains all genetic information. Sometimes human DNA is damaged by naturally occurring processes or environmental factors such as sunlight. Fortunately, cells have repair pathways to fix the damage so faulty DNA is not passed on to the daughter cells. Jennifer Mason, an assistant professor in the Department of Genetics and Biochemistry, studies how cells repair DNA damage and what happens when those processes go wrong.

Less time, less money

In 1990, a group of international researchers set out to create a map of the DNA code that makes up the human genome. It was no small task. Each person has two sets of 3 billion bases. Thirteen years and about a billion dollars later, the Human Genome Project generated the first sequence of the human genome. With technological advances, sequencing the human genome now costs less than $1,000. Now, there's an effort called the Vertebrate Genomes Project to generate near error-free reference genome assemblies of all of the world's approximately 70,000 extant vertebrate species. Clemson Department of Genetics and Biochemistry Chair David F. Clayton and Associate Professor of Biological Sciences Julia George were involved in sequencing the zebra finch, a species of bird they've been researching for 30 years.

The scene of the crime

In a lab in the basement of Clemson's Jordan Hall, middle and high school students perform gel electrophoresis to compare DNA found at a "crime scene" to the suspect's DNA. The "detectives" are participants in one of the lab field trips offered by the Science Outreach Center. In real life, prosecutors presented DNA evidence in a U.S. court for the first time in 1987. It helped convict a serial rapist. DNA has also been used to free the wrongly convicted.

Interesting Facts of Chemistry Which You Probably Didn't Know

Geetanjali Negi
B.Sc. 2nd Year (CBZ)

We all have heard of the explosive capabilities of dynamite. But I'd bet most people don't know one odd ingredient used to make it. Nitroglycerin, the explosive liquid used to make dynamite is made from glycerol. This glycerol is made by processed peanut oil. Yes, peanuts are an ingredient of dynamite.

We all know how adding a volume of a certain substance to a glass of water will increase the water level. But that's not the case with salt and water. Adding sodium chloride to water will lower the water level than actually increasing it.

What is the chemical name of water? Most would say H2O. But isn't that its chemical formula? The actual chemical name of water is Dihydrogen Monoxide.

We know most metals in the solid state except a few exceptional cases like mercury. The closest one to mercury is gallium. Gallium is known as the metal that melts in your hands. With a melting point of 29.76 °C, it has the second lowest of the known metals.

We've all been stung by one or the other insect during our lives. We've also had friends and family suggesting the same home remedy for them all, owing to no relief to the pain. But if we understood what the sting does to us, we can treat it better. An example is how bee stings are acidic while wasp stings are alkaline.

INTERESTING FACT ABOUT ANIMALS

1. Some animals, such as the giant squid, live in the deepest parts of the ocean and are rarely seen by humans.
2. Fleas can jump 350 times its body length.
3. Some animals, like the axolotl, have the ability to regenerate lost body parts
4. The mosquitoes that bite and suck our blood are females, as they need the energy to lay eggs, while males feed on nectar and do not bite us.
5. Starfish do not have a brain

INTERESTING FACTS ABOUT PLANTS

1. The first certified botanical garden was founded by Pope Nicholas III in the Vatican City in 1278 AD!
2. Before the 16th century, carrots were purple! Dutch farmers in the 17th century eventually started growing the mutant orange versions and that's what we eat today!
3. The first medicine for fever and body ache was the bark of a willow tree! The ancient Egyptians and Greeks used willow tree barks to treat various illnesses.
4. Ginkgo (Ginkgo biloba) is one of the oldest living tree species, it dates back to about 250 million years ago!
5.

There is a plant in Australia known as the "Suicide Plant" because the effect of its sting can last for years, and its pain is so unbearable that people have killed themselves after touching it.

Human Trafficking: A Heinous Crime

Simran Linwal
B.A. 1st Year

"HUMANS - not for sale!!"

Human trafficking is one of the most rampant crimes in labour surplus developed countries like India, but we have not yet manage to tackle this issue because of our lack of knowledge about it. In proper words the trade of human beings for exploitative purpose including bonded and force labour, commercial sexual exploitation and illegal organ trade is called human trafficking. It also involves forceful and illegal migration of victims who are traded.

Who are the victims of human trafficking? Victims of human trafficking mainly include young children and women brought from rural areas of sometime, even other states to be engaged as domestic help in households or various small scale establishments. In urban centres children are forced to beg in the streets in towns and cities. The most threatening is that it too involves illegal organ trade racket and not only this many of these people eventually get exploited economically, physically and also sexually. It was estimated that each year around 44,000 humans are traffic for illegal purposes.

You will get shocked to her that victims of human trafficking live amidst us, in our day to day surroundings. So, we all have to stop it, starting with the small step. If you see any child begging or indulged in labour work, notice signs of oppression which make themselves evident in the form of withdrawn and anxious behaviour, physical marks of assult etc. always report these on a 24×7 helpline number i.e 1098. It's a deadly your friends and should be stopped. We all should take care of ourself and our dear ones and just a small message.

" End the misery, stop human trafficking"

It's Time to Look Up and Not Down Anymore

Chandra Prakash Nautiyal
M.Sc. 4th Semester

Technological expansion and advancement is at its peak and majority of humans, who are resourceful enough, are able to keep up with it. As a consequence of which, we have this little device in our hands being a boon and a bane.

Even though when the world was shut down and distant as a result of a global pandemic, we were never really distant. These little devices, these mobile phones not just kept us updated with what's really happening but kept us sane by keeping us in contact with our dear ones in tough times and by distracting and entertaining us in all ways they could have had.

They made things possible, which once seemed impossible. Online classes became a thing and work from home saved people's livelihoods, who would have lost their jobs, if it wasn't for this "box of wonders", this mobile phone.

We know that we are at present in a world where every hand holds a mobile phone in it. The device that was made to brought us close have made us more distant, haven't it? We all are in this solitary confinement scrolling down endless feeds, tirelessly.

We have a never ending list of friends on all these social networking sites but no one with whom we can actually talk to.

These little revolutionary devices are fulfilling majority of our needs but aren't we paying a lot in return for it. Most of us are just looking down on our phone's screen and health is being compromised as a consequence of it, not just physically but mentally as well after all we often question ourselves, why the people on the screen are always happy and not me?

We do have a choice though, we can look up more, build what we have broken, talk a little more, listen to what's being told and for a moment put down the phone.

Let the heart feel a little more warmth by spending time with people that we want, let the eyes capture what's real and not the camera on the phone, after all it's time to look up and not down anymore.

Oppenheimer:
The Enigmatic Genius Behind the Atomic Age

Arnima Kaushik
B.Com. 4th Semester

"*And I am become Death, the destroyer of worlds.*" These immortal words, spoken by J. Robert Oppenheimer upon witnessing the successful detonation of the first atomic bomb in 1945, serve as a haunting reminder of the immense power unleashed by the scientific and engineering genius of this enigmatic figure. Known as the "father of the atomic bomb," Oppenheimer's contributions to the field of nuclear physics forever changed the course of human history. This article dives into the life, achievements, controversies, and enduring legacy of J. Robert Oppenheimer.

Oppenheimer was born on April 22, 1904, in New York City to a wealthy Jewish family. Embracing his passion for physics, he pursued his academic journey at Harvard University, where his brilliance shone through. Graduating summa cum laude, Oppenheimer then pursued his doctoral studies in Germany under the tutelage of renowned physicist Max Born. The combination of Oppenheimer's intellect and the scientific climate in Germany during the 1920s shaped his understanding of quantum mechanics and positioned him as a rising star in the field of theoretical physics.

Returning to the United States, Oppenheimer secured a position at the University of California, Berkeley, where he continued his ground-breaking research. His work on the behavior of electrons in solids and the theories of neutron stars earned him widespread acclaim within the scientific community. His ability to intuitively grasp complex concepts and think outside the box led to his recognition as one of the brightest minds of his time.

However, the pinnacle of Oppenheimer's career came with the advent of World War II. With the war in full swing, the development of atomic weapons became a top priority for the Allied powers. In 1942, Oppenheimer was appointed the scientific director of the Manhattan Project, a clandestine program aimed at harnessing the power of nuclear energy for military

purposes. Leading a team of brilliant scientists, Oppenheimer played a pivotal role in the successful creation of the first atomic bomb, which was subsequently used to devastating effect in the bombings of Hiroshima and Nagasaki.

While the Manhattan Project established Oppenheimer's reputation as a scientific genius, it also brought controversy and ethical dilemmas to his doorstep. Post-war, as the world grappled with the consequences of using atomic weapons, Oppenheimer found himself in the midst of investigations into his loyalty and political affiliations. He had been involved with left-wing organizations and had associates who were rumored to have communist ties, leading to suspicions of espionage and disloyalty. Despite his contributions to the war effort, Oppenheimer was stripped of his security clearance in

1954, a decision that shocked and divided the scientific community.

In the aftermath of the security clearance debacle, Oppenheimer's career took a different path. He transitioned into academia, becoming the director of the Institute for Advanced Study at Princeton. Here, he continued to make valuable contributions to the field of theoretical physics, mentoring countless future generations of scientists.

Beyond his scientific achievements, Oppenheimer was known for his captivating intellect, charismatic personality, and immense curiosity. His interests encompassed not only physics but also literature, art, and philosophy. He was fluent in several languages and had an appreciation for Eastern philosophies, with a particular affinity for Hindu texts.

Tragically, Oppenheimer's vibrant life was cut short when he succumbed to throat cancer on February 18, 1967. Yet, his legacy lives on. The ramifications of the atomic age, both positive and negative, continue to shape our world. Oppenheimer's contributions exemplify the potential of scientific exploration while reminding us of the ethical dilemmas and profound responsibilities that accompany groundbreaking discoveries.

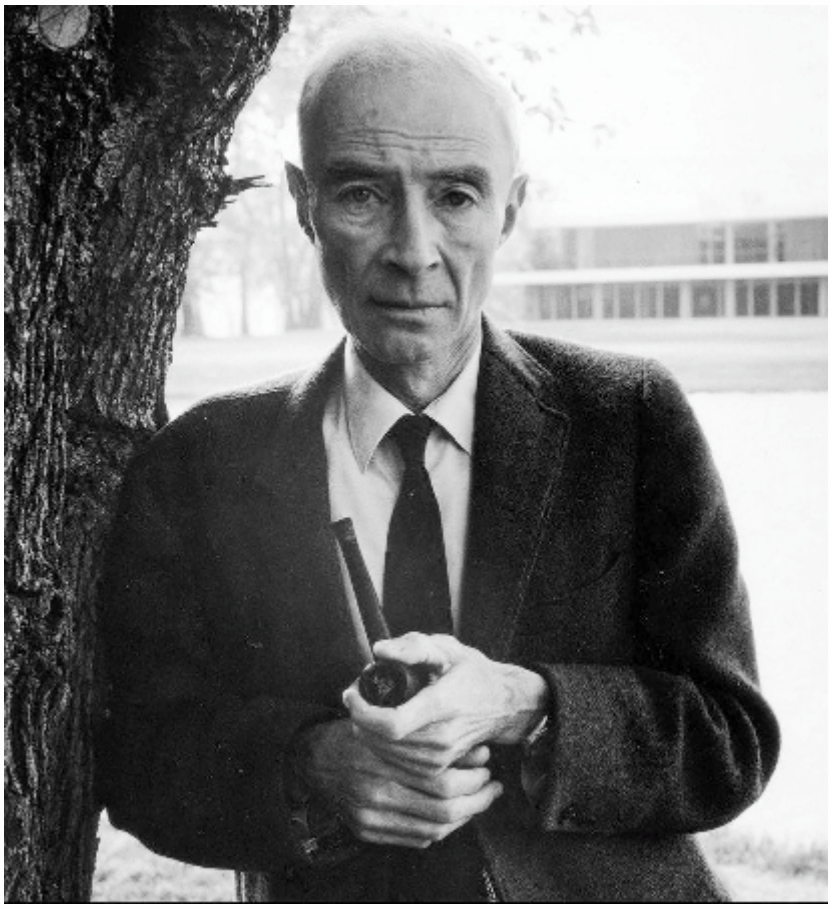

In conclusion, J. Robert Oppenheimer's scientific contributions, particularly his leadership in the Manhattan Project, indelibly marked the course of human history. His brilliance and vision were instrumental in ushering in the atomic age, forever altering the way humanity perceives power and warfare. The moral complexity surrounding his involvement with the atomic bomb, coupled with the controversies surrounding his personal life, make him a figure of great intrigue and debate. However, there is no denying the significance of Oppenheimer's contributions, both positive and negative, and his enduring legacy as a scientific genius and a symbol of the awesome and terrifying power of scientific discovery.

Bangladesh Trip

Anushka
LLB 2nd Semester

This is Anushka, a determined volunteer for "Youth for Human Rights India", a Youth Wing of United Nations Organization , who had the privilege to accompany Dr. Arjumand Zaidi for the Gandhi Peace Walk – 2023, from Kolkata to Noakhali, Bangladesh.

The trip started on the 05th of March 2023, when we started for Lucknow (The epicenter of our organization) by bus. Two of the student volunteers from the Department of Law, D.A.V.(P.G.) College were selected to represent India for this Peace walk. I along with Ms. Parnomita Dangwal, another volunteer started the bus journey in the evening of 5th March, 2023. Our parents were emotional to see us off and we two were full of enthusiasm and anxiety to see the new territory. We reached Lucknow in the morning where we were welcomed by the young volunteers of the organization. There were media personnel all around and we were welcomed with flower bouquets. I felt elated and humbled by such a fantastic welcome. We were accompanied by Ms. Parnomita, Ms. Nandini, and Ms. Kashish, who were some of the inspiring women to have around. Our group headed towards the airport of Lucknow under the lead of Dr. Arzumand Zaidi, who is also the head of this organization. We reached Kolkata in the afternoon of 6th of march 2023. We had three days halt at Kolkata. We stayed at Eight Arts Acre, which is a guest house for the delegates coming from world over for various events. We saw the Museum at the Guest House, wherein the cultures of Bangladesh and India was depicted through paintings and sculptures. We also visited the Gandhi Ashram, Kolkata and paid our tribute to the father of our nation. We got to meet Mrs. Arumita Roy and Mr. Deepankar Roy, and Mrs. Nilanjana who were the guiding forces of our trip throughout. While our stay in Kolkata, we had the Kolkata delicacies. Mr. and Mrs. Roy also invited us for an Official Dinner before our Walk commenced. We left for Bangladesh on the 09th of March, 2023. We had to cross the international border by evening 18:30 hrs. but due to the inaugural session at the Gandhi Ashram Kolkata, we were delayed by four hours and by the time we reached the border. A special leave had been granted for our Delegation to cross the Border since it closes at 18:30 Hours. While in Bangladesh, we had the opportunity to interact with the local crowd and attend the festival of the minorities which helped us in getting rid of the class barriers. This trip opened the gates to a lot many opportunities for the volunteers wherein they got to meet the Founder, Greentech who is also working for the cause of establishing Sustainable Development Goals, and this was a sensitizing moment when the volunteers felt that no matter what country it is, we all are working for the same cause, to make Planet Earth sustainable. We used to walk for a few kilometers every day and had to halt in the evening at different places, like Narail, Jashore, Cumil, Faridpur, Dhaka and Noakhali. Every day was a new Journey and it gave us ample opportunity to meet with different people. While our stay in Dhaka , Indira Gandhi Cultural Center had organised a cultural dance performance and we were invited for an official dinner with the High Commissioner of India at Bangladesh. After about seven eight days we got to eat homelike food which was aaloo poori and mishti, and we were relieved of the feeling of homesickness. Our walk ended at Gandhi Ashram, Noakhali on 16th of March 2023. In Noakhali a cultural event was organised by the young students of a government school. It was a beautiful event in which we got to exchange words with younger students especially women of Bangladesh. The volunteers also met the Founder, Indo-Bangladesh Friendship Club who felicitated the volunteers for their work and promised to work together for the common goals of the South Asian Countries. The volunteers also interacted with the High Commissioners, of both India and Dhaka speaking on various hot topics like the Mars Mission by Elon Musk, the Kashmir Dispute, the Rohingyas, and Netaji and his "acclaimed" Demise. All in all, it was an inspiring meeting, for we got to meet people who are working for their motherland, across the border. Lastly, the Volunteers were accompanied throughout the journey by Mr. Shumon, who's an active volunteer for the Gandhi Ashram, Noakhali and who had prepared a play which included girls as young as 10-14 , and it was a humbling moment for they were allowed to be out of their attire to perform for the Indian Delegation, and were preparing to come to India someday to perform not only in from of a handful of people but also the world altogether. The trip was quite informative and it inspired us in many ways to becoming a part of such initiatives that work for the common good of people world over. It was indeed a privilege to be a part of this trip and the experience was truly enriching.

The Watchkeeper of the Gates of Kewal Vihar

Devansh
LLB. Ist Year

Every time I entered lane E of Kewal Vihar I saw Bruno. Bruno was a dog born on the streets. Its home was the entrance of lane E. It had a loyal, happy and charitable heart which oftentimes popped out of his heartfelt eyes or salivary tongue set freely hanging like a Spanish painting on the walls of a withering art gallery. Ever since my childhood days, I've witnessed Bruno as and when I crossed the mouth of the street to the road. Always slightly scared of its canines. I don't know what Its name was as given by others but in my personal headspace, I named it Bruno. It used to observe every passer-by of the conjunction with judging eyes and never missed the opportunity to bark at a racing vehicle or a stranger with suspicious behaviour and when I say that it was loyal, I don't mean loyal to me or to some other master, Bruno was Its own master and loyal only to the street of Kewal Vihar. Similarly, when I say Charitable, I don't mean in concurrence to the human inference of the word charitable, in fact, I rarely view Bruno as the type who would care about sharing the cheap loaf of bread or the stale piece of hardened roti with any other creature, except maybe with Its friends from nearby streets. Instead, what I meant with Charitable, was that Bruno was charitable to its own self and maybe that's what made it happy. It spent its entire life on the streets, in hot summer struck middays and freezing winter midnights, without expectations to be broken and without hope to get high on. It was aware of the reality and devoid of the sense of betterment and it kept it happy. The greatest charity of all to self is the acceptance of the sense of acceptance itself with 'who you are' and not drowning in the ambitious 'what I can be' at the cost of suffocating the experience of now. Bruno never wondered what its purpose in life was, never wondered why things were the way they were, did not have a god to blame or a government to shame. It did not know how to count society's flaws, it never wondered if things would get better and this act itself made things better and gave Bruno the ability to give its own purpose to its existence as the watchkeeper of the gates of Kewal Vihar.

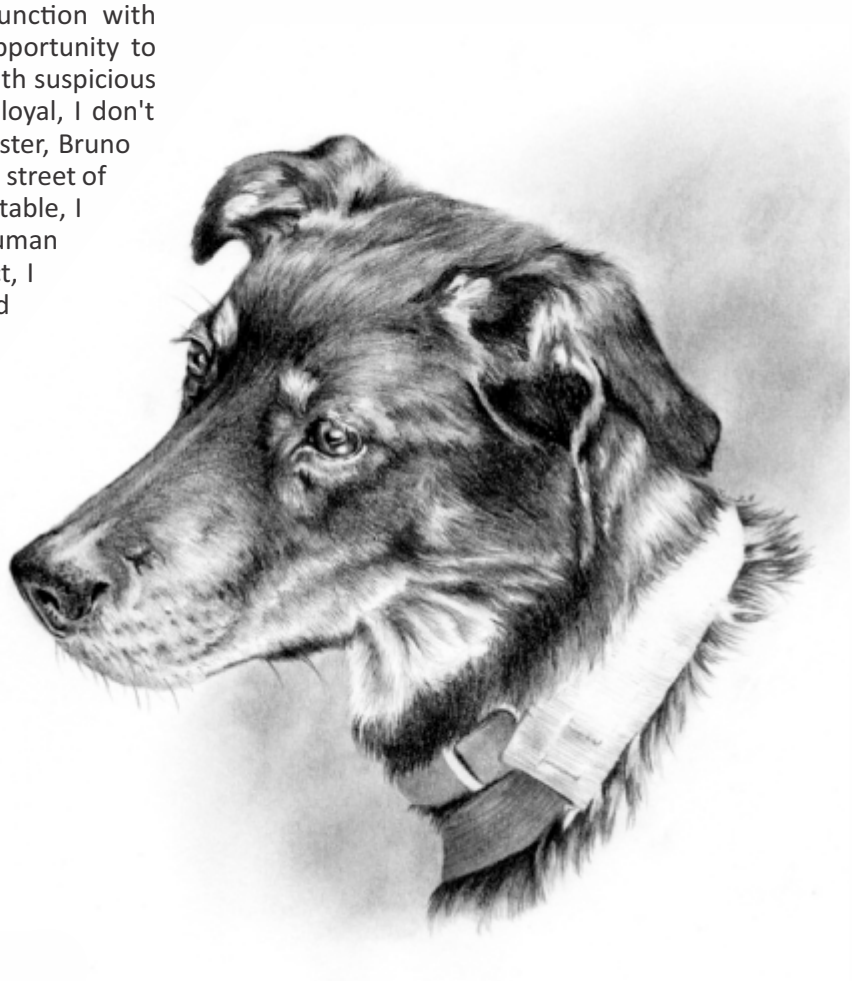

Achieving Optimal Health and Wellness: A Holistic Approach

Yuvraj Bisht (NSS Volunteer)
B.Com. 4th Semester

Introduction:

In today's fast-paced world, maintaining good health and overall well-being has become more crucial than ever. With the increasing prevalence of sedentary lifestyles, stress, and poor dietary choices, it is essential to prioritize our health and adopt a holistic approach to wellness. This article explores the key aspects of health and wellness and provides practical tips for achieving a balanced and fulfilling life.

1. Physical Health:

Physical health forms the foundation of overall well-being. Regular exercise, a balanced diet, and adequate sleep are vital for maintaining optimal physical health. Engaging in physical activities such as walking, running, or yoga not only helps in managing weight but also improves cardiovascular health, boosts energy levels, and reduces the risk of chronic diseases like diabetes and hypertension. Additionally, focusing on nutrition by consuming a variety of whole foods, including fruits, vegetables, lean proteins, and whole grains, promotes vitality and supports the immune system.

2. Mental and Emotional Well-being:

Mental and emotional well-being are equally important for achieving holistic health. It is essential to prioritize activities that promote mental clarity, reduce stress, and enhance emotional resilience. Regular practice of mindfulness meditation, deep breathing exercises, and engaging in hobbies or activities that bring joy and relaxation can significantly improve mental well-being. It is also crucial to cultivate positive relationships, seek social support when needed, and communicate effectively to foster emotional wellness.

3. Sleep and Rest:

Adequate sleep and rest are often overlooked but are essential components of a healthy lifestyle. Quality sleep rejuvenates the body and mind, improves cognitive function, and enhances overall productivity. Creating a sleep routine, ensuring a comfortable sleep environment, and avoiding stimulants like caffeine before bedtime can contribute to a restful night's sleep. Moreover, taking regular breaks throughout the day and engaging in activities that promote relaxation, such as reading or practicing mindfulness, help combat stress and recharge the mind.

4. Stress Management:

In today's demanding world, stress has become a common companion for many individuals. However, chronic stress can have detrimental effects on both physical and mental health. Effective stress management techniques, such as regular exercise, meditation, and engaging in hobbies, are essential for maintaining balance. Learning to prioritize tasks, setting realistic goals, and practicing time management can also help reduce stress levels and promote a sense of control and well-being.

5. Preventive Care and Regular Check-ups:

Prevention is better than cure, and regular health check-ups play a pivotal role in maintaining optimal health. Schedule regular visits to healthcare professionals for preventive screenings, vaccinations, and early detection of potential health issues. Keeping up with recommended immunizations, screenings, and adopting healthy habits based on healthcare provider recommendations are essential for staying on top of one's health and preventing future complications.

Conclusion: Achieving optimal health and wellness requires a holistic approach that encompasses physical, mental, and emotional well-being. By prioritizing regular exercise, healthy eating, sufficient sleep, stress management, and preventive care, individuals can significantly improve their quality of life. Remember, small lifestyle changes can lead to significant long-term benefits, and investing in your health today is a step towards a healthier and happier future.

Charles Dickens:
A Literary Luminary and Social Critic

Vibhudh Sharma
B.A. 6th Semester

Charles Dickens is widely regarded as one of the greatest novelists in the history of English literature. With his richly detailed narratives, vivid characters, and insightful social commentary, he captured the essence of 19th-century Victorian England and left an indelible mark on the literary landscape. This article delves into the life, works, and enduring legacy of the literary luminary that is Charles Dickens.

Born on February 7, 1812, in Portsmouth, England, Dickens experienced a challenging and impoverished childhood that would become a recurring theme in his writing. His father's financial struggles forced the family into debt and eventually led to his imprisonment. These early experiences profoundly influenced Dickens and provided him with a deep understanding of the social inequities and injustices prevalent during his time.

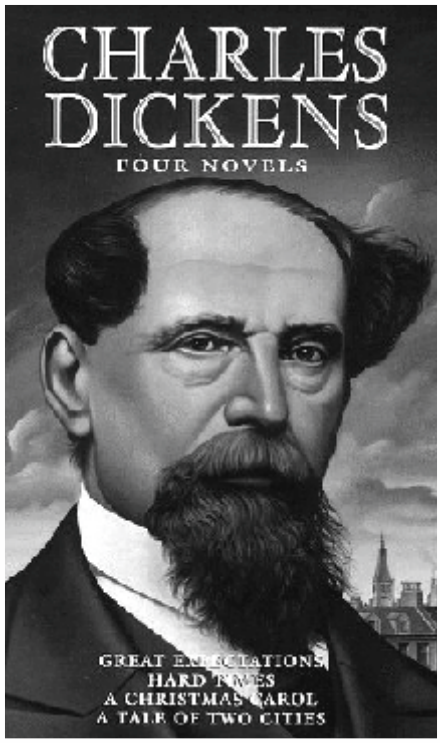

Despite his adverse circumstances, Dickens showed remarkable resilience and determination. He embarked on a literary career as a young man, initially writing sketches and short stories under the pseudonym "Boz." His talent for observation and his keen eye for detail quickly attracted attention and earned him a wider readership. In 1836, Dickens published his first novel, The Pickwick Papers, which catapulted him to literary fame.

Dickens' literary output was prodigious, and his works tackled a wide range of societal issues. His novels such as Oliver Twist, David Copperfield, and Great Expectations explored themes of poverty, social class, industrialization, and injustice. Dickens possessed a unique ability to illuminate the lives of the marginalized and voice their struggles with compassion and empathy. His characters, often imbued with both humor and pathos, have become iconic literary figures, exemplifying the human condition in all its complexities.

In addition to his novels, Dickens also engaged in journalism and public speaking, using his platform to advocate for social reform. He highlighted the plight of the working class, the poor, and children through his writing and speeches, aiming to bring about positive change in society. Dickens' advocacy was instrumental in compelling public opinion and influencing legislation on issues such as child labor, prison reform, and education.

While Dickens' popularity and literary success were unmatched during his lifetime, his personal life was not without turmoil. His marriage to Catherine Hogarth was strained, and they eventually separated after many years together. Dickens' own life experiences, including his troubled marriage, informed his nuanced portrayals of relationships and added emotional depth to his novels.

In his later years, Dickens embarked on reading tours, both in England and abroad, where he performed dramatic readings of his own works to the delight of enthusiastic audiences. These performances showcased Dickens' versatility as a writer and actor and further solidified his popularity and acclaim.

Tragically, Charles Dickens' fruitful life was cut short

when he suffered a stroke and passed away on June 9, 1870, leaving behind an extraordinary literary legacy. His works continue to resonate with readers of all ages, cultures, and backgrounds, and his themes and characters remain relevant to this day. Dickens' ability to combine social critique with captivating storytelling has had a lasting impact on the field of English literature and has cemented his status as a literary giant.

Beyond his literary achievements, Charles Dickens is also remembered for his philanthropy and compassion for the less fortunate. His generosity extended to various charitable causes, and he established and supported institutions such as Urania Cottage, a home for "fallen women," and the Great Ormond Street Hospital for Children, among others.

In conclusion, Charles Dickens' contributions to literature and social reform are immeasurable. Through his novels, he exposed the plight of the disadvantaged and gave voice to the voiceless. The enduring popularity of his works speaks to his ability to capture the human experience with sensitivity, complexity, and wit. Dickens' legacy continues to inspire contemporary writers and readers, reminding us of the power of literature to effect change and illuminate the world.

"There is nothing in the world so irresistibly contagious as laughter and good humor."

"I loved her against reason, against promise, against peace, against hope, against happiness, against all discouragement that could be."

"Never close your lips to those whom you have already opened your heart."

"Suffering has been stronger than all other teaching, and has taught me to understand what your heart used to be. I have been bent and broken, but - I hope - into a better shape."

— Charles Dickens, Great Expectations

"There are books of which the backs and covers are by far the best parts."

— Charles Dickens, Oliver Twist

The Wise King

Khalil Gibran

Once there ruled in the distant city of Wirani a king who was both mighty and wise. And he was feared for his might and loved for his wisdom.

Now, in the heart of that city was a well, whose water was cool and crystalline, from which all the inhabitants drank, even the king and his courtiers; for there was no other well.

One night when all were asleep, a witch entered the city, and poured seven drops of strange liquid into the well, and said, "From this hour he who drinks this water shall become mad."

Next morning all the inhabitants, save the king and his lord chamberlain, drank from the well and became mad, even as the witch had foretold.

And during that day the people in the narrow streets and in the market places did naught but whisper to one another, "The king is mad. Our king and his lord chamberlain have lost their reason. Surely we cannot be ruled by a mad king. We must dethrone him."

That evening the king ordered a golden goblet to be filled from the well. And when it was brought to him he drank deeply, and gave it to his lord chamberlain to drink.

And there was great rejoicing in that distant city of Wirani, because its king and its lord chamberlain had regained their reason. delusion. And they said, "Something must be the matter with the Eye."

Man is Not Made for Defeat

Khushi Singh
BA 5th Semester

"I know I am made to suffer, I am born to suffer but my sufferings are not greater than I am."

-Thomas Hardy

No doubt man's life on this planet is beset with all kinds of troubles and tribulations. At every step he has to face new challenges. He is absolutely ignorant to what uncertain future holds for them. But despite all these odds a person has been endowed with that supreme will power which keeps him afloat during those trying moments. And it is no wonder that the man who seems to be a puny creature in the mighty hands of fate overcomes all sorrows and sufferings and emerges victorious provided he does not lose courage and hope for they are the very things which carve a path for him. This man must never give up. In words of Clough,

"Say not the struggle nought availeth,

The labour and the wounds are vain,

The enemy faints not, not faileth,

And as things have been they remain."

Ofcourse sometime circumstances appear too much against us. Things do not go the way we want them to and we feel totally broken and shattered. But even then if we do not lose hope we always overcome those grim situations. Thus the simple logic is if we don't think we are broken or defeated we are not. The words of H.W.Longfellow are worth quoting here,

"Not in the clamour of the crowded street,

Not in the shouts and plauits of the throng,

But in ourselves, are triumph and defeat."

Life is a battle where a person who succeeds is not one who is mighty or powerful but one who keeps a brave and happy heart.

'Failures are the stepping stones to success' is the adage we should always bear in our minds.

Those who remain unaffected by failures and disappointments achieve the supreme and make themselves immortal. Had mother Teresa given up after the rebuffs she suffered during her early days in Calcutta, she would not have been hailed a saint.

Charles Dickens had hardly four years of schooling when his father was put behind the bars as he could not repay his debts. He got a job in a blacking factory. He worked in a rat infested godown and slept in a dungeon with two others to share that place. He later went on to create masterpieces like The Tales of two Cities, Oliver Twist, David Copperfield, Great Expectations and so on.

Similar is the take of Issac Newton. If he had stopped his efforts when his papers caught fire and destruction was staring hard at him in the face, he would never have become an eminent scientist. History is replete with many such examples. Thus the main thing is that a man must maintain a never say die attitude and nothing in this world can prevent him from achieving his goal.

How inspiring are the following words of a British fighter pilot, Douglas Bade, to a boy who lost his leg in a road accident:

"Don't listen to anyone who tells you that you can't do this or that. Make up your own mind, you will never use crutches or a stick, then have a go at everything. Go to school, join in all the games you can. Go anywhere you want to but never, never let them persuade you that things are too difficult or impossible."

We can well imagine what a magical effect these words would have had on the hapless boy.

There is one more peculiar and interesting aspect in this regard: whenever we are face-to-face with hardships and misfortunes our best comes out. This is the theory which sustained the poor and down-trodden slum dwellers in Dominique Lapierre's famous novel, The City of Joy. Although they were living a hellish life in a hellish place, they were not morally beaten. They celebrated all their festivals with great fervour and were not much disappointed or dissatisfied with their fortune. The priest Stephen Kovalski was dumbfounded to see splendour of the ghetto at the time of Anouar's marriage. Similar thing is there with the leaves of grass which is usually considered the meanest of plants. They are always trampled but they, again and again tend to rise.

The display of infinite strength and stamina by the old man in Hemingway's novel, The Old Man and The Sea is simply remarkable. He had, already much fatigued himself in catching the Huge Marlin for it took him two days and two nights struggling with the unyielding fish. For the fish was too big, he lashed it alongside his skiff and set his small patched sail for the long voyage home. On the way the predacious sharks attacked the fish. He could have thrown in the towel, but he was not ready to lose his hard won prize. Ofcourse what he brought to the shore was merely a skeleton of the Marlin but it does not undermine his courage which was indeed phenomenal. The old man's achievement is not to be sneered at an account of it being fictitious. The courage shown by him is really extraordinary but it is by no means unnatural or impossible. For, if a man is determined, physical infirmities and age cannot be the barriers in his way. We have instances from the living world also where so many aged people have performed great feats.

There are many other spheres of life where people have accomplished great deeds amidst virtually insurmountable hindrances. Hence we should never let ourselves down and must face the examination of life boldly and certainly we will come off with flying colours as following line says:

When joy takes leave, friends betray,

Fortune frowns and springs depart,

When you are left to your own dismay,

Alone to face with shattered heart,

The tempest on the shore,

You feel lost as never before,

When things are no more the same,

Try once more and play the game.

Wipe the tear and stop the cry,

Sky is the limit if you try....

Money v/s Succeds

Ayush Chauhan
M.A., 2nd Semester (English)

It is the 21st Century and we are living in materialistic world. A world where man without money is nothing. Our society is so obsessed with the idea of money. They have created a mindset to measure some one's success in terms of money. But success is actually much more than money. Success is a satisfaction which can be achieved by the combination of struggle and keen passion.

Money is not everything but on the other hand money is something. We need money for our basic necessities for career and education, for making our dreams come true. But there is always a difference between need and greed and one must not be money minded. There is nothing wrong with wanting stuff, status, wealth, comfort, luxury and acclaim. It's a mistake to assume that money can have the way to happiness and fulfillment. Money is what makes our life happening but success is what makes us happy.

Technically, money can be medium of exchange, a unit of account, a store of value and sometimes a medium of deferred payment. But success is the achievement of something desired or planned. Success is accomplishment of an aim or purpose. Money alone can be a motivator. Success is not how much money one can make but how much struggle one can do to achieve it. Money can be precious but can never be priority. Money can be direction but success is the final destination.

Consciousness

Nishant Sharma
B.Ed. II Semester

Consciousness is like a plant,
irrigate it with wisdom and knowledge.
anger and lust is its pest,
Fertilize it with daily toilage.
It’s the though which differ us from animal,
Grow it till it reach seminal
One day it will be giant sequoia,
It’s shadow will bliss future nephew.

Lockdown Days

Yati Bisht
B.A. 1st Semester

Living in lockdown day is
Be like a bird in a cage,
No schools ,No homework
All the things are going online
Nowdays people are hungry
For drinking wine
No hodophile
No fearfile
Covid is spreading day by day
We are getting bored nowdays

Mother

Yati Bisht
B.A. 1st Semester

She is like a precious gift
That I receive from the air lift,
She has a magicful hand,
That is why she make every food
Very tasty and grand,
She is like Goddess,
Who never tired with our cleanliness,
She is like a glowing light,
That is why I love her and makes
Her to fight.

Summer Holidays

Yati Bisht
B.A. 1st Semester

Summer holidays comes and it makes
Me excited for doing lots of things,
When it comes , it makes me feel like
I am flying with wings
Summer Holidays are for eating mangoes,
And ice cream.
And exploring different sites,
But teachers get jealous from our
Happiness,
They give us lots of Home work
So, we can't enjoy and even
Sleep at night.

Life

Rahul Dobhal
B.Sc. 5th Semester

Finite numbers describe life,
Decreasing in forward fashion.
This mournful description makes us alive,
Living in subdued passion.
Not this is the way of life,
Which is given by this numbed world.
Living today with hopeful strives
Is the meaning which makes it worth.
Life is not an empty dream,
Which one can only ignore.
It's a paradise yet to seen
A daydream, yet to explore.
In this chaos, find a meaning,
A way to realise yourself.
Be always neutral in your leaning,
Heart within and God over head.
Life is precious gem,
Develop eyes of a jeweller.
Nurture it well in this realm,
And not make it a forbidden cellar.
Leave trails of great deeds behind you,
Hoping that they will remain immortal.
Maybe one a day a lost crew,
Will be led by them to a divine portal.
Always be thankful for your life,
As it given only once.
Lead, learn and labour everything in your
Life in every front, in every front.

Down Memory Lane

Khushi Singh
B.A. 5th Semester

Memories Weave a pattern,
A delightful tapestry
Of bright and cherished moments
in days that used to be.....
Each thread recalls some kindness,
Some unselfish little deeds,
Some word of warm encouragement,
Some help in time of need,
And through the pattern runs an endless thread of gold.
That symbolises all the love
"These precious memories"Hold !
A memory is a special treasure,
Which endures and give us pleasure,
One we cherish always
For we know that recalling
Certain times and places,
Tender moments, smiling faces,
Always bring our heart a glow,
Though time may pass,
but a memory stays reminding us of happy days.

Phoenix

Saloni Rawat
B.Sc. 1st Semester

Wings of fire,
words of flames,
I rise
through their stares, among their glares.
I rise
so let them been in the's world of ice
and with their hatred shall.
I rise
for it doesn't matter what they think of say cause
phoenixes are known.
to rise
from FLAMES.

Moon

Wasn't born pretty,
denied by society.

Insulted and shamed,
and sometimes teased.

She's more introvert,
and less extrovert.

She won't mind what they say,
She loved her am way.

You'll know who she is soon,
and by that time shell shine like a MOON!

Induction Meeting on Add-On Certificate Courses (Session 2022-23)

S. N.	Programme Details	Name and Affiliation/ Address of Speaker/ Guest
1.	Registration/ Attendance of Students of different Add-on Certificate Courses	-
2.	Arrival and Welcome of Chief Guest, Other Dignitaries and Course Coordinators	-
3.	**Inaugural and Welcome Address by**	**Prof. K.R. Jain, Principal, DAV(PG) College, Dehradun**
4.	Address about Objective of running of Add-on Certificate Course by **Coordinator Steering Committee, Add-on Certificate Courses**	**Prof. S.P. Joshi, Vice-Principal, DAV(PG) College, Dehradun**
5.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Development of Work Readiness and Capacities"** of B.Ed. Department	**Prof. Savita Rawat, Department of B.Ed.**
6.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Learning Online Selling"** of Commerce Department	**Prof. Sunil Kumar, Department of Commerce**
7.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"E-Filing of GST"** of Commerce Department	**Prof. Ashok Shrivastava, Department of Commerce**
8.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Creative Learning and Skill Development"** of Education and Drawing & Painting Departments	**Prof. Reena Chandra, Department of Education**
9.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Hindi Content Writing, New Media, Film & Theatre"** of Hindi Department	**Prof. Rakhi Upadhyay, Department of Hindi**
10.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Vedic Mathematics"** of Mathematics Department	**Dr. Deependra Nigam, Department of Mathematics**
11.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Introduction of Western Music"** of B.Ed. Department	**Prof. Anupama Saxena, Department of Music**
12.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Ethics, Attitude and Emotional Intelligence"** of Sociology Department	**Dr. Onima Sharma, Department of Sociology**
13.	Address by Add-on Certificate Course Coordinator of **"Vermicompost Technologies"** of Zoology Department	**Prof. Shashi Kiran Solanki, Department of Zoology**
14.	**Address by Chief Guest**	**Dr. Deepak Kumar Pandey, Assistant Director (Legal Cell), Regional Office Higher Education, Dehradun**
15.	Address and Vote of Thanks by **Course Co-Coordinator Steering Committee, Add-on Certificate Courses**	**Prof. H.S. Randhawa, Department of English, DAV(PG) College, Dehradun**

Proctorial Board

Session : 2020-21 & 2021-22

Sitting Left to Right : Dr. Shikha Nagalia, Dr. Amit Sharma, Dr. Rakesh Lal, Dr. Hari Om Shankar, Dr. J.V.S. Rauthan, Dr. A. C. Bajpai, Dr. Gopal Chhetri, Maj. Atul Singh (Chief Proctor), Dr. Ajay Saskena (Principal), Dr. H. S. Randhawa, Dr. Anupama Saxena, Dr. Sanjya Rai Meena, Dr. Archana Pal, Dr. Onima Sharma, Dr. Prashant Singh.

Session : 2022-23

Sitting Left to Right : Dr. Rashmi Tyagi Rawat, Prof. Reena Chandra, Dr. Shahla Rahman Khan, Prof. K.R. Jain (Principal), Prof. S.P. Joshi (Vice Principal), Dr. Manmohan Singh Jassal, Prof. H.S. Randhawa, Dr. Savita Chauniyal

Standing: Laxman Singh, Dr. G.S. Chauhan, Dr. S.V. Tyagi, Prof Manoj Kuman Jadaun, Dr.Pushpendra K. Sharma, Dr. Rajesh Singh Rawat, Dr. Govind Ram, Dr. Reena Uniyal Tiwari

GAMES COMMITTEE SESSION 2022-23

Sitting Left to Right : Dr. Prashant Singh, Dr. Anil Kumar, Dr. Kaushal Kumar, Maj. Atul Singh, Dr. Sunil Kumar (Principal), Dr. Jasvinder Pal Singh (General Secretary, Games), Dr. Jharna Banerjie, Dr. Shikha Nagalia, Dr. Amita Raizada

Standing: Dr. Hariom Shankar, Dr. Amit Sharma, Dr. Arun Raturi, Dr. Onima Sharma, Dr. Harpreet Kaur, Dr. Renuka Rawat, Mr. Dinesh Dixit, Mr. Vinod Kumar

CENTRAL LIBRARY

SITTING (L TO R) : DR.RUPALI BAHL, DR.SHAHLA RAHMAN KHAN, DR.VINEET VISHNOI (PROFESSOR I/C LIBRARY), PROF.(DR.) SUNIL KUMAR (PRINCIPAL), DR.RAVI SHARAN DIXIT, DR.VIVEK TYAGI, DR.PUSHPENDRA KUMAR SHARMA

STANDING (L TO R) : SH. SANJAY KASHYAP, SMT.ASHA SRIVASTAVA, SMT.AMITA GUPTA, SMT.RAJNI NEGI, SH.SANJEEV KUMAR, SH.SANJAY V.P.GOYAL (LIBRARIAN), SH.CHAND BABU, SH.BRIJESH KUMAR SHARMA, SH.SHIV PRASAD TIWARI, SH.RAJ KUMAR TIWARI, SH.SUNIL KUMAR SRIVASTAVA

छात्र संघ समारोह

छात्र संघ समारोह

छात्र संघ समारोह

शैक्षणिक एवं अन्य गतिविधियाँ

शैक्षणिक एवं अन्य गतिविधियाँ

Pictures at a glance of DAV NCC (SD) 2020-21

Senior Cadets

SUO Akshay Kumar Singh

UO Ajay Panwar

UO Ashutosh Abhiraj Singh

UO Satyam Ojha

UO Kuldeep Kumar

UO Anirud Sundriyal

Pictures at a glance of DAV NCC (SD) 2021-22

Senior Cadets

SUO Akhil Uniyal

UO Prashant Chamoli

UO Devansh

UO Rohit Solanki

UO Aniket Rawat

Pictures at a glance of DAV NCC (SD) 2022-23

Senior Cadets

SUO Aditya Saklani

UO Anupam Singh

UO Sachin Bisht

UO Prashant Trivedi

UO Shaurabh Singh Gariya

UO Milind Singh Negi

अनुशासन
NCC ACTIVITIES

NCC ACTIVITIES

एन.सी.सी. गर्ल्स

एन.सी.सी. गर्ल्स

NCC

KEEP THE
RIVERS
CLEAN
EARTH
EVERGREEN
11 UK GIRLS BN NCC

स्वच्छता अभियान

CADET CORPS
कैडट कोर
NCC
DEHRADUN

एन.सी.सी. गर्ल्स

11 UK GIRLS BN NCC

11 UK(G) BN. NCC
PUNEET SAGAR ABHIYAN
D.A.V. (P.G.) COLLEGE, DEHRADUN

राष्ट्रीय सेवा योजना

Spritual session by ISCKON

AT National Integration Camp

Collaboration with DKMS

Clothes donation drive

Plantation Day

Yoga Day

राष्ट्रीय सेवा योजना

Wall Painting by NSS volunteers

Placing water pots for birds in summer

State's Largest clock assembly at Grapich Era University

Blood Donation by volunteers at World Blood Donor Day

सात दिवसीय एनएसएस शिविर का समापन

7 Day Integration camp by NSS DAV

भारत स्काउट एवं गाइड

भारत स्काउट एवं गाइड

भारत स्काउट एवं गाइड

खेल-कूद

खेल-कूद

खेल-कूद

खेल-कूद

GPS Map Camera

GPS Map Camera
Harkandi, Uttarakhand, India
6RF3+8FH, Madhi Chauras, Harkandi, Srinagar, Uttarakhand 249161, India
Lat 30.222928°

H.N.B. GARHWAL (CENTRAL) UNIVERSITY
INTER-COLLEGIATE WRESTLING (MEN & WOMEN)
TOURNAMENT 2022-23
On
6th December 2022
Organized By
DAV (PG) COLLEGE, DEHRADUN
VENUE : JUDO HALL, PARADE GROUND, DEHRADUN
General Secretary (Games)
Dr. Jasvinder Pal Singh
Principal
Dr. K.R. Jain
Organizing Secretary
Dr. Shikha Nagalia

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रम

कैरियर काउंसलिंग

डा. भाम राव अबडकर
जयंती
14 अप्रैल 2023

दयानन्द वोमेन्स ट्रेनिंग कॉलेज, देहरादून
(D.W.T. College, Dehradun)
D.W.T. COLLEGE

जयंती
14 अप्रैल 2023

कला वीथिका

SIMRAN BHATT, MA-I

ROHIT JOSHI, MA-III

कला वीथिका

ANKITA BISHT, BA -I

JYOTIKA DANU, MA-III

MONIKA RANA, MA-III

AJAY MEHTA, MA-II

DEEPA RAWAT, BA-V

HARSHITA, BA-II

KULDEEP PRABHAKAR, MA-II

NIDHI, BA-I

PRIYA NAUTIYAL, BA-I

VARISHA MALIK, MA-I

SHRINGHAR KHATTRI, MA-II

VINOD VOHRA, MA-III

MANJU CHAUHAN, MA-II

कला वीथिका

SADDAM HUSAIN

SWATI PANT

SWASTIKA, MA-III

NEHA, MA-II

RAHUL LAL, MA-II

PRIYANKA AGGARWAL, BA-V

PRIYANKA AGGARWAL, BA-V

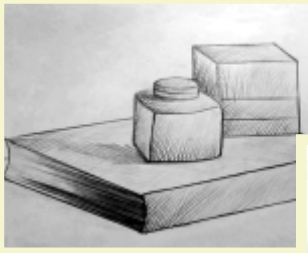
KHUSHI SINGH, BA III

KHUSHI SINGH, BA III

SANKIT SINGH, MA-III

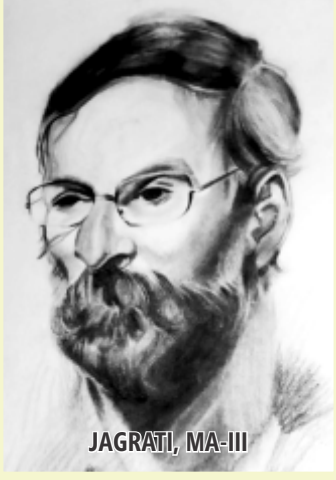
JAGRATI, MA-III

JYOTIKA DANU, MA-III

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार

- इससे पहले कि सपने सच हों आपको सपने देखने होंगे।
- शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता, और भविष्य को आकार देता है। अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखते हैं, तो मेरे लिए ये सबसे बड़ा सम्मान होगा।
- अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलो।
- विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरत तोहफा है, हमें इसे बिगाड़ना नहीं चाहिए।
- सपने वो नहीं है जो आप नींद में देखे, सपने वो है जो आपको नींद ही नहीं आने दें।
- हमें हार नहीं माननी चाहिए और हमें समस्याओं को खुद को हराने नहीं देना चाहिए।
- आइये हम अपने आज का बलिदान कर दें ताकि हमारे बच्चों का कल बेहतर हो सके।
- अपने मिशन में कामयाब होने के लिए, आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकचित्त निष्ठावान होना पड़ेगा।

शिक्षा क्या है ? क्या
वह पुस्तक-विद्या है ?
नहीं। क्या वह नाना
प्रकार का ज्ञान है ?
नहीं, यह भी नहीं। जिस
संयम के द्वारा
इच्छाशक्ति का प्रवाह
और विकास वश में
लाया जाता है और वह
फलदायक होता है, वह
शिक्षा कहलाती है।

स्वामी विवेकानन्द जी

शहीद स्मारक

डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज

देहरादून, उत्तराखण्ड

सरस्वती प्रेस - 9358865676